A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 07 अक्टूबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 349, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

बिहार: गठबंधन के लिए 'गुहार' से ओवैसी खुद कमजोर हो रहे

तंजील आसिफ

बीते 11 सितंबर को अख्तरुल ईमान ढोल-नगाड़ों के साथ पार्टी कार्यकर्ताओं की अगुवाई करते हुए पटना के सर्कुलर रोड स्थित आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद यादव के आवास पर पहुंचे और सामूहिक रूप से गाने लगे– 'लालू-तेजस्वी अपने कानों को खोल, तेरे दरवाजे पर बज रहा है ढोल, गठबंधन के लिए अपना दरवाजा खोल, वरना खुल जाएगा तेरे एमवाई (मुस्लिम-यादव) समीकरण का पोल।'

ऐसी खबरें भी सामने आई हैं कि एआईएमआईएम कार्यकर्ता न सिर्फ पिछले महीने राहुल गांधी की मतदाता अधिकार यात्रा में घुसे, बल्कि तेजस्वी यादव की बिहार अधिकार यात्रा में जबरन प्रवेश किया और इसी मांग को लेकर हंगामा खड़ा करा किया।

एआईएमआईएम इन हरकतों से खुद को कमजोर राजनीतिक विकल्प के रूप में पेश कर रहा है और अपने 'हक छीन कर लेंगे' वाले नारे को खोखला कर रहा है। एक मजबूत नेता गठबंधन के लिए मेज के सामने बैठता है न कि दरवाजे पर ढोल पीटता है। यह कोई सरकारी मांग नहीं है। क्या एआईएमआईएम वास्तव में बिहार की राजनीति में अपने 10 वर्षों के उथल-पुथल भरे कार्यकाल के दौरान बिहार के 17.7 प्रतिशत मुसलमानों के प्रतिनिधि के रूप में खुद को स्थापित करने में सक्षम हो पाई है?

एआईएमआईएम ने 2015 के विधानसभा चुनावों के दौरान बिहार में कदम रखा और किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार और अररिया जिन्हें सामूहिक रूप से सीमांचल कहा जाता है की छह सीटों पर चुनाव लड़ा। इनमें से केवल पार्टी प्रमुख अख्तरुल इमान ही अपनी जमानत बचा सके, और कुल मिलाकर पार्टी को इन सीटों पर सिर्फ 8.04 प्रतिशत वोट मिले।

चार साल बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने केवल किशनगंज निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव लड़ा, जिसमें किशनगंज जिले की चार विधानसभा सीटें और निकटवर्ती पूर्णिया की दो सीटें शामिल थीं। पार्टी केवल कोचाधामन और बहादुरगंज में ही बढ़त बना पाई। एआईएमआईएम ने उसी साल किशनगंज विधानसभा उपचुनाव जीतकर अपनी पहली जीत का स्वाद चखा, लेकिन नौ महीने बाद ही 2020 के विधानसभा चुनावों में वह यह सीट हार गई। तब उसने पांच सीटें जीती थीं, जिनमें से चार किशनगंज लोकसभा क्षेत्र में और एक अररिया में थी।

एआईएमआईएम ने उपेंद्र कुशवाहा के नेतृत्व वाले ग्रैंड डेमोक्रेटिक सेक्युलर फ्रंट (जीडीएसफ) के साथ मिलकर 20 सीटों पर चुनाव लड़ा जिसमें, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) भी एक प्रमुख सहयोगी थी। पार्टी को इन निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 14.28 प्रतिशत वोट मिले लेकिन पांच जीत के अलावा वह केवल एक अन्य सीट पर अपनी जमानत बचा पाई और अपने कथित गढ़ सीमांचल के कई हिस्सों में 10 प्रतिशत से भी कम वोट हासिल कर पाई।

सीमांचल सिर्फ किशनगंज और आस-पास के क्षेत्र नहीं है, जैसा अक्सर विशेषज्ञ समझते हैं. इस क्षेत्र की 24 विधानसभा सीटों में से 11 पर मुस्लिम विधायक हैं ठीक 2015 की तरह। 2015 और 2020 के बीच बदलाव यह दिखाता है कि मतदाताओं के पास विकल्प मौजूद था। अमौर, बैसी और बहादुरगंज लंबे समय से बदलाव के लिए तैयार थे, और एआईएमआईएम वह विकल्प बनकर सामने आई।

इसमें कोई शक नहीं कि बिहार के मुसलमानों को बेहतर नेतृत्व और व्यापक प्रतिनिधित्व की जरूरत है। यही एआईएमआईएम की मौजूदगी को प्रासंगिक बनाता है। लेकिन सवाल यह है–क्या एआईएमआईएम आरजेडी, कांग्रेस और वामदलों जैसी पार्टियों की तुलना में बेहतर मुस्लिम नेतृत्व देने में सक्षम हो पाई है?

एआईएमआईएम के टिकट पर अब तक जीतने वाले छह विधायकों में से तीन पूर्व विधायक हैं। बाकी विधायक एआईएमआईएम में शामिल होने से पहले लंबे समय तक आरजेडी या जनता दल (यूनाइटेड) से जुड़े रहे हैं।

शुरुआत से ही पार्टी ने जीतने वाली सीटों पर वफादार जमीनी कार्यकर्ताओं को टिकट देने से परहेज किया और कभी-कभी तो आखिरी समय पर दूसरे दलों से आयात किए गए नेताओं को प्राथमिकता दी। अगर एआईएमआईएम सच में मुस्लिम नेतृत्व मजबूत करना चाहती, तो उसे जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं पर ध्यान देना चाहिए था। अगर पार्टी अपने विधायकों को बनाए रखने में कामयाब होती तो आज उसे किसी से गठबंधन की गुहार नहीं लगानी पड़ती। भले ही औपचारिक गठबंधन न होता, महागठबंधन कम से कम किसी अनौपचारिक समझौते पर विचार कर सकता था। नेताओं को लंबे समय तक अपने साथ न रख पाने की विफलता ने मुसलमानों के बीच एआईएमआईएम को लेकर अविश्वास पैदा कर दिया। सिर्फ विधायक ही नहीं, स्थानीय नेता और कार्यकर्ता भी पार्टी छोड़ गए। आयातित उम्मीदवार और सुविधानुसार बने गठबंधन एक-दो बार चल सकते हैं, लेकिन बार-बार नहीं।

लेकिन लगता है एआईएमआईएम ने कोई सबक नहीं सीखा। अपने तथाकथित गद्दारों के खिलाफ गुस्से में डूबी पार्टी ने एक बार फिर समझौता कर लिया है। 2025 के विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी के पहले घोषित उम्मीदवार बहादुरगंज से चार बार के कांग्रेस विधायक तौसिफ आलम हैं। कांग्रेस में अपने दो दशकों के कार्यकाल के दौरान आलम ने अक्सर पार्टी के अपने लोकसभा उम्मीदवारों के खिलाफ काम किया। 2024 के चुनाव अभियान में उन्होंने मल्लिकार्जुन खड़गे की मौजूदगी में खुलेआम कांग्रेस प्रत्याशी की आलोचना की थी और उनके बारे में यह भी रिपोर्ट है कि उन्होंने राज्यसभा उपचुनाव में क्रॉस-वोटिंग की थी। वे एआईएमआईएम से आरजेडी में गए विधायकों में से एक–इजहार असफी के दामाद भी हैं। बहादुरगंज में लोग कह रहे हैं कि एआईएमआईएम के चारों विधायकों को पार्टी छोड़ने में दो साल भी नहीं लगे, अगर तौसीफ जीत गए तो उन्हें पार्टी छोड़ने में शायद दो दिन भी न लगें। एआईएमआईएम के बिहार प्रमुख ने गठबंधन में केवल छह सीटें मांगी हैं। संभावना है कि ये वही सीटें होंगी जहां एआईएमआईएम पहले जीत या मजबूती दिखा चुकी है- किशनगंज, कोचाधामन, बहादुरगंज, अमौर, बैसी और जोकीहाट। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि एआईएमआईएम के बिहार प्रमुख ने गठबंधन में सिर्फ छह सीटें मांगी हैं। 24 सितंबर से शुरू हुए सीमांचल दौरे के दौरान ओवैसी अपने समर्थन आधार को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन देखना होगा कि उनके साथ कितने जाने-पहचाने चेहरे मंच पर होंगे। मुस्लिम वोटों के बंटने का जो तर्क है, वह ऐसा मुद्दा है जिसका कोई अंत ही नहीं है। भले ही महागठबंधन एआईएमआईएम को अपने गठबंधन में शामिल कर ले, फिर भी बागी उम्मीदवार अलग-अलग तरीके से चुनाव लड़ेंगे। जैसा तेजस्वी यादव ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा था, ओवैसी ने गठबंधन के लिए ना तो लालू प्रसाद यादव से और ना ही उनसे फोन पर औपचारिक बात की। क्या इसका मतलब यह है कि एआईएमआईएम को यकीन है कि उसे गठबंधन में जगह नहीं मिलेगी?

(दि क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बिहार में बजा चुनावी बिगुल... छठ के बाद 2 फेज में होंगे चुनाव

6 और 11 नवंबर को मतदान, 14 नवंबर को मतगणना

नईदिल्ली/पटना (एजेंसी)। बिहार में चुनावी बिगुल बजने का इंतजार आज खत्म हो गया। चुनाव आयोग ने बिहार में दो चरणों में सभी 243 विधानसभा सीटों के लिए मतदान कराने का फैसला लिया गया है। पहले चरण का चुनाव 6 नवंबर और दूसरे चरण का 11 नवंबर को होगा। मतगणना की तिथि 14 नवंबर तय की गई है। भारत निर्वाचन आयोग की सोमवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के विस्तृत कार्यक्रम की आधिकारिक ऐलान किया गया। चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ ही राज्य में आदर्श आचार संहिता भी लागू हो गई। चुनाव के ऐलान से काउंटिंग तक की प्रक्रिया 40 दिन चलेगी। पहले फेज की वोटिंग छठ के 8 दिन बाद होगी। सभी राजनीतिक दलों ने वोटिंग की तारीखें दिवाली और छठ के बाद रखने की अपील की थी। 2010 में इलेक्शन प्रोसेस 61 दिन, 2015 में 60 दिन और 2020 में 47 दिन चली थी। इस तरह पिछले 15 साल में इस बार चुनाव सबसे कम अवधि में पूरे कराए जाएंगे।

बिहार में 40 साल बाद 2 फेज में चुनाव

बिहार में 40 साल बाद दो फेज में चुनाव होने जा रहे हैं। इससे पहले 1985 में चुनाव 2 फेज में हुए थे। भाजपा और आरजेडी ने 2 फेज में चुनाव कराने की मांग की थी। जेडीयू ने एक फेज में चुनाव कराने को कहा था। पिछले चुनाव यानी 2020 में 3 फेज में 20 अक्टूबर से 7 नवंबर के बीच वोटिंग हुई थी। 10 नवंबर को नतीजे घोषित हुए थे। इससे पहले 2015 में 5 फेज में 12 अक्टूबर से 5 नवंबर के बीच वोटिंग और 8 नवंबर को नतीजे आए थे। राज्य में 243 सीटें हैं, जिनमें करीब 7.42 करोड़ वोटर हैं। इनमें 100 साल ऊपर के 14 हजार वोटर शामिल हैं। पोलिंग बूथ जाने में असमर्थ लोग फॉर्म 12 ड भरकर घर से वोट डाल सकेंगे।

इस बार बिहार चुनाव मतदाताओं के लिए सरल, सुगम होंगे

- **बिहार चुनाव पूरी पारदर्शिता के साथ होंगे–** मुख्य चुनाव आयुक्त ने ज्ञानेश कुमार ने कहा, जो सारी बातें समीक्षा में आईं। बिहार में हम सभी राजनीतिक दलों, पुलिस अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारियों से मिले। सुरक्षाबलों के अधिकारियों के साथ बैठक हुई। आयोग आपको बतलाना चाहता है कि इस बार बिहार चुनाव मतदाताओं के लिए सरल, सुगम होंगे, पूरी लॉबी मतदाताओं की मदद के लिए खड़ी रहेगी, बिहार चुनाव पूरी पारदर्शिता के साथ होंगे। इस बार का बिहार चुनाव सबसे अच्छे चुनावों में शामिल होगा। ऐसी आयोग की मंशा है।
- **वोटिंग लिस्ट में सुधार कराया जा सकता है –** मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा, 30 सितंबर को फाइनल लिस्ट (मतदाता सूची) पब्लिश की गई है। अभी भी कोई गलती रह गई हो तो जिला अधिकारी के पास अपील की जा सकती है। साथ ही किसी का नाम छूटा हो तो नॉमिनेशन के 10 दिन पहले तक नाम जुड़वा सकता है। इसके बाद कोई भी नाम नहीं जोड़ा जा सकता है। आयोग की पूरी टीम और तीन आयुक्तों ने बिहार का दौरा किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उच्च स्तरीय बैठक में दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

छिंदवाड़ा प्रकरण में सभी दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई

दो औषधि निरीक्षकों और उप संचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन को किया निलंबित, ड्रग कंट्रोलर स्थानांतरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि छिंदवाड़ा प्रकरण में सभी दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। राज्य सरकार सजग और संवेदनशील है, मानव जीवन की सुरक्षा से जुड़े मामलों में किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस क्रम में औषधि निरीक्षक छिंदवाड़ा श्री गौरव शर्मा, औषधि निरीक्षक जबलपुर श्री शरद कुमार जैन, उप संचालक खाद्य एवं औषधि प्रशासन श्री शोभित कोस्टा को निलंबित और ड्रग कंट्रोलर श्री दिनेश मौर्य को अन्यत्र स्थानांतरित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छिंदवाड़ा प्रकरण के संबंध में सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर उच्च स्तरीय बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

अभियान चलाकर घर-घर से रिकवर करें प्रतिबंधित दवा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कोल्ड्रिफ सिरप के विक्रय पर प्रतिबंध लगाने के साथ ही दुकानों में विद्यमान स्टॉक जप्त किया जाए। छिंदवाड़ा और आसपास के जिलों में जिन परिवारों ने यह दवा ली है, उनके घरों से दवा रिकवर करने के लिए सघन अभियान चलाया जाए। आशा-ऊषा कार्यकर्ताओं के साथ ही सभी शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों का सहयोग लिया जाए। कोल्ड्रिफ सिरप दवा के अलावा पिछले दिनों क्षेत्र में बिकने वाली अन्य दवाओं की प्रभावशीलता का भी आकलन कराया जाए। दवाओं पर जो चेतावनी और सावधानियां लिखी जानी चाहिए, वह लिखी जा रही हैं या नहीं इसकी जांच के लिए अभियान आरंभ किया जाए।

छिंदवाड़ा जिले में सर्वे के माध्यम से चिन्हित किया गया प्रभावित मरीजों को

बैठक में बताया गया कि छिंदवाड़ा से गंभीर प्रकरणों की जानकारी प्राप्त होते ही राज्य स्तर से चिकित्सकों का दल छिंदवाड़ा भेजा गया। नेशनल सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल और सेंट्रल ड्रग्स स्टेण्डर्ड कंट्रोल आर्गेनाइजेशन का भी जांच में सहयोग लिया गया। आठ मरीजों की जाँच के लिए उनके नमूने पुणे स्थित प्रयोगशाला भेजे गए। साथ ही छिंदवाड़ा से विभिन्न दवाओं के सैम्पल लेकर उनकी जांच कराई गई। छिंदवाड़ा और परासिया के निजी चिकित्सकों, अस्पतालों और केमिस्ट के साथ बैठक कर स्थिति का आंकलन किया गया और उन्हें आवश्यक सावधानियां बरतने के संबंध में सलाह दी गई।

सीएम ने प्रभावित परिवारों के घर जाकर की मुलाकात यह सिर्फ आपकी नहीं, हम सबकी पीड़ा है

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छिंदवाड़ा जिले के परासिया में कफ सिरप के सेवन से हुई मासूम बच्चों की असामयिक मृत्यु की घटना पर अत्यंत संवेदनशील कदम उठाते हुए पूर्व में तय अपने सभी कार्यक्रम निरस्त कर सोमवार को छिंदवाड़ा के परासिया पहुंचे और मृत बच्चों के परिजनों से उनके घर जाकर मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने शोक संतप्त परिजन से भेंटकर गहन दुख व्यक्त कर उन्हें ढांढस बंधाया और भरी आंखों से अपनी आत्मीय संवेदनाएं व्यक्त कीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मौजूदगी ने शोक संतप्त परिजन को एक भावनात्मक संबल दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने परासिया क्षेत्र की नगर परिषद न्यूटन पहुंचकर मासूम को खोने वाले खान परिवार और ग्राम बेलगांव के डेहरिया परिवार से मुलाकात की। मुख्यमंत्री बाद में परासिया मुख्यालय पहुंचे और वहां खान परिवार, ग्राम दीघावानी के यदुवंशी परिवार और उमरेठ के सोनी परिवार से मुलाकात की। संवेदनशील मुख्यमंत्री डॉ. यादव ग्राम बड़कुही पहुंचकर यहां के ठाकरे परिवार, ग्राम सेठिया के पिपरे परिवार और ग्राम इकलेहरा के उईके परिवार से मुलाकात कर उनके दुःख में शामिल हुए और शोक संतप्त परिजन के आंसू पोछते हुए कहा कि यह सिर्फ आपकी नहीं, मेरी और हम सबकी पीड़ा है। आपके बच्चों का दुख मेरा भी है। वेदना की इस घड़ी में मैं, और पूरी सरकार आपके साथ है। उन्होंने कहर कि सभी दोषियों पर कड़ी कार्यवाही की जा रही है। न्यूटन में खान परिवार की पीड़ित माता आफरीन, जिन्होंने अपना 5 वर्ष का बेटा खोया है, मुख्यमंत्री को अपने समक्ष देखकर रो पड़ी।

सुप्रभात

हम दो जन पढ़ते हैं
एक ही किताब

रहते हैं दोनों
एक ही घर में

नहाते हैं, कपड़े धोते हैं
एक ही बाथरूम में

एक ही किचन है
जिसमें दोनों का खाना
एक साथ बनता है
वहीं एक टेबल पर
खाते हैं खाना
दोनों एक साथ

सुबह होती है
फिर दोपहर और शाम
उसके बाद आती है रात
दोनों के लिए एक साथ

अविभाज्य है
जैविक क्रियाएं दोनों की

फिर उसने जो कहा
सुना मैंने
मैंने भी जो कहा
सुना उसने

फिर दोनों के बीच
कहासुनी हो गई।

– अरुण सातले

यूपी में अब सफाई कर्मियों के खाते में आएगी सैलरी, 16-20 हजार मिलेंगे

5 लाख तक मुफ्त इलाज, योगी ने कर्मियों पर फूल बरसाए

वाराणसी (एजेंसी)। सीएम योगी ने दिवाली से पहले यूपी के सफाईकर्मियों को बड़ी सौगात दी है। काशी में योगी ने कहा, सफाईकर्मियों को अब सीधे उनके अकाउंट में सैलरी मिलेगी। 16 हजार से लेकर 20 हजार प्रति माह उनके अकाउंट में पहुंच जाएगा। सीधे खाते में पैसे से अब कोई सफाईकर्मियों का शोषण नहीं कर पाएगा।

सभी सफाईकर्मियों का आयुष्मान कार्ड भी बनेगा। इसकी मदद से वह अपना 5 लाख रुपए तक का इलाज मुफ्त करा सकेंगे। उन्हें चिंतित रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। सीएम योगी ने कर्मियों पर फूल बरसाए।

सीएम ने कहा, दीपावली के अवसर पर हम हर स्वच्छता मित्र को, स्वच्छता कर्मी को मिष्ठान वितरण जरूर करें। हर गरीब के घर में भी एक दीया जले, हर गरीब के घर में दीपावली की मिठाई जरूर पहुंचे।

दरअसल, सीएम योगी आज 2 दिवसीय दौरे पर काशी पहुंचे हैं। सबसे पहले वह अन्नपूर्णा ऋषिकुल विद्यालय शिवपुर पहुंचे। उन्होंने कहा- आज यहां 250 से ज्यादा बेटियों को सिलाई मशीन दी है।

वांगचुक अरेस्ट केस- एससी में 14 अक्टूबर तक सुनवाई टली

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को जोधपुर जेल में बंद सोशल एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक से जुड़ी हेबियस कार्पस (बंदी प्रत्यक्षीकरण) की याचिका पर सुनवाई हुई। जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी करके सोनम वांगचुक की पत्नी की याचिका पर जवाब मांगा है। वांगचुक की पत्नी गीतांजलि अंगमो की याचिका में पति की एनएसए के तहत गिरफ्तारी को चुनौती दी गई थी। साथ ही उनकी तत्काल रिहाई की मांग की गई थी। मामले की सुनवाई 14 अक्टूबर तक टल गई है।

पाकिस्तान बोला-चीनी हथियारों ने भारत के खिलाफ बेहतरीन काम किया

सेना के प्रवक्ता बोले- हमने 7 फाइटर जेट्स गिराए, भारत ने एक भी नहीं

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता जनरल अहमद चौधरी ने सोमवार को कहा कि मई में भारत से संघर्ष में उनके चीनी हथियारों ने बहुत अच्छा परफॉर्मेंस दिया था। अहमद चौधरी ने यह दावा ब्लूमबर्ग को दिए इंटरव्यू में किया। उन्होंने कहा किहम हर तरह की तकनीक के लिए खुले हैं। हमारी चीनी तकनीक ने बहुत अच्छा काम किया। चौधरी दावा किया कि पाकिस्तान ने 7 भारतीय फाइटर जेट्स मार गिराए थे, जबकि भारत ने एक भी पाकिस्तानी विमान नहीं गिराया।

- **भारत ने चीनी मिसाइल तबाह की थी–** पाकिस्तानी सेना के दावों के उलट भारत ने ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान के कई चीनी हथियार और डिफेंस सिस्टम को तबाह कर दिया था। 9 मई को पंजाब के होशियारपुर जिले में एक खेत से पीएल–15ई मिसाइल के टुकड़े बरामद किए गए थे। यह मिसाइल चीन में बनी थी। इसके बाद 12 मई को वायु सेना ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहली बार इसका मलबा दिखाया था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 07 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई गवई पर हमले की कोशिश

कोर्ट रूम में वकील ने जूता फेंका, नारा लगाया- सनातन का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को एक वकील ने सीजेआई बीआर गवई पर हमला करने की कोशिश की। यह घटना उस समय हुई जब सीजेआई की बेंच एक मामले की सुनवाई कर रही थी। कोर्ट रूम में मौजूद वकीलों के हवाले से बताया कि वकील ने सीजेआई की तरफ जूता फेंका।

हालांकि, जूता उनकी बेंच तक नहीं पहुंच सका। सुरक्षाकर्मियों ने फौरन उसे पकड़ लिया। बाहर जाते वक्त वकील ने नारा लगाया- सनातन का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान। घटना के बाद सीजेआई ने अदालत में मौजूद वकीलों से अपनी दलीलें जारी रखने को कहा। कहा कि इस सबसे परेशान न हों। मैं भी परेशान नहीं हूं, इन चीजों से मुझे फर्क नहीं पड़ता। बार काउंसिल ने वकील के खिलाफ कड़ा ऐक्शन, कर लाइसेंस निलंबित कर दिया है।

16 सितंबर को सीजेआई ने कहा था- जाओ, भगवान से खुद करने को कहो- आरोपी वकील का नाम राकेश किशोर कुमार सनातन धर्म पर टिप्पणी पर नाराज था।

संघ की 100 साल की नफरत का नतीजा...

सीजेआई गवई पर हमले की कोशिश: खरगे, मणिकम टैगोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोमवार को भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) पर एक वकील द्वारा हमले की कोशिश के बाद सियासी पारा हाई हो गया है। मल्लिकार्जुन खरगे समेत कांग्रेस पार्टी के कई नेता आरएसएस और बीजेपी पर हमलावर हो गए हैं। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने इस हमले को संघ की 100 साल की नफरत का नतीजा बताया है तो वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा की है। खरगे ने इस कट्टरता से प्रेरित हमला बताया।

बद्रीनाथ धाम में पहुंचे सुपरस्टार रजनीकांत

- ग्लैमर से दूर आध्यात्मिक यात्रा पर निकले; सड़क किनारे पत्तल में खाना खाने की तस्वीरें वायरल

चमोली (एजेंसी)। साउथ के सुपरस्टार रजनीकांत इन दिनों उत्तराखंड में अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर हैं। इसी बीच सोमवार को वह चमोली में स्थित बद्रीनाथ धाम में पहुंचे। यहां पर उन्होंने भगवान बद्रीविशाल के दर्शन किए और जनकल्याण के लिए प्रार्थना भी की। यहां पर एक्टर का स्वागत बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने किया।

इस मौके पर उन्हें भगवान बद्रीविशाल का आशीर्वाद स्वरूप प्रसाद और तुलसी की माला भेंट की गई। इससे पहले रजनीकांत ऋषिकेश और द्वाराहाट में साधना और सादगी के बीच स्थानीय लोगों और आश्रमों के साथ समय बिता चुके हैं, और उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई थीं। एक तस्वीर में तो वह सड़क किनारे खड़े होकर पत्तल में खाना खाते हुए दिखे थे।

करंट लगने से दो की मौत, 10 से ज्यादा झुलसे

जबलपुर में प्रतिमा विसर्जन के लिए जा रहे थे, ट्रक बिजली के तार से टकराया

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के लिए जा रहा एक ट्रक बिजली के तार से टकरा गया। करंट लगने से दो युवकों की वहीं मौत हो गई। वहीं 10 से अधिक लोग गंभीर रूप से झुलस गए। हादसे के बाद वहां भगदड़ मच गई। लोग प्रतिमा छोड़कर इधर-उधर भागे।

घटना भीटा गांव में रविवार रात करीब 9 बजे की है। लोग दुर्गा विसर्जन के लिए ट्रक में मां दुर्गा की प्रतिमा को लेकर नर्मदा नदी के गौरीघाट जा रहे थे। वहां मौजूद लोग घायलों को जिला अस्पताल लेकर पहुंचे।

मृतकों में चिंटू विश्वकर्मा (24) और अखिलेश पटेल (27) शामिल है। वहीं घायलों में हक्कू पटेल, तारा पटेल (16), बल्लूविश्वकर्मा (50) नितिन पटेल (24), मोहित पटेल (26), कपिल पटेल (28) शामिल है।

ट्रक के ऊपर बैठे थे दोनों युवक- टेमर भीटा से दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन करने के लिए बड़ी संख्या में लोग डीजे की धुन पर नाचते हुए जा रहे थे। प्रतिमा जैसे ही भीटा गांव के पास पहुंची, तभी ऊपर झूल रहा 11 केवी लाइन का तार ट्रक के संपर्क में आ गया।

ट्रक के ऊपर बैठे चिंटू विश्वकर्मा और अखिलेश पटेल नीचे गिर गए। दोस्त उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दोनों युवक प्राइवेट नौकरी किया करते थे।

विधायक और मंत्री राकेश अस्पताल पहुंचे

घटना की जानकारी मिलने पर कैंट विधानसभा से विधायक अशोक रोहाणी अस्पताल पहुंचे। उन्होंने बताया कि गंभीर रूप से तीन लोग झुलसे हैं। उन्हें निजी अस्पताल में भर्ती कराया है। बाकी लोगों का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। घटना दुखद है। पुलिस हादसे की वजह की जांच कर रही है।

मंत्री राकेश ने कहा- 11 लोग घायल हुए

घटना की जानकारी मिलते ही रात करीब 12 बजे लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह घायलों को देखने के लिए जिला अस्पताल पहुंचे। उन्होंने कहा कि दुर्गा विसर्जन के दौरान जब टेमर भीटा में रहने वाले लोग गौरीघाट जा रहे थे, तब मूर्ति के साथ चल रहा स्ट्रक्चर बिजली के केबल के संपर्क में आ गया, जिससे यह घटना घटित हुई है। मंत्री राकेश सिंह ने बताया कि इस घटना में अभी तक 11 लोगों के घायल होने की सूचना है। दो की मौत हुई है। गंभीर रूप से घायलों को इलाज के लिए मेडिकल और निजी अस्पताल में भर्ती करवाया है।

उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने एनएचएम कार्यालय में शिशु रोग विशेषज्ञों की बैठक ली और खांसी-जुकाम उपचार संबंधी केंद्र सरकार की एडवाइजरी के अनुपालन की समीक्षा की।

2025 मेडिसिन का तीन वैज्ञानिकों को नोबेल प्राइज

इम्यून सेल के हमले रोकने वाली टी-कोशिकाएं खोजीं, कैंसर-डायबिटीज के इलाज में मददगार

स्कॉटहोम (एजेंसी)। साल 2025 का मेडिसिन नोबेल प्राइज मैरी ई. ब्रंको, फ्रेड राम्सडेल और शिमोन साकागुची को मिला है। इन्हें यह प्राइज पेरीफेरल इम्यून टॉलरेंस के क्षेत्र में किए गए रिसर्च के लिए दिया गया है।

- मैरी ई. ब्रंका : अमेरिकी वैज्ञानिक, जीन के काम पर रिसर्च।
- फ्रेड राम्सडेल : अमेरिकी वैज्ञानिक, इम्यून सिस्टम विशेषज्ञ।
- शिमोन साकागुची : जापानी वैज्ञानिक, टी सेल्स की खोज के लिए मशहूर।

बंगाल के जलपाईगुड़ी में भाजपा सांसद पर हमला, सिर फूटा

- बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री बांटने गए थे; भीड़ का पथराव, नारे लगाए- वापस जाओ

जलपाईगुड़ी (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में सोमवार को भाजपा सांसद खगेन मुर्मू पर सैकड़ों लोगों की भीड़ ने हमला कर दिया। लोगों ने सांसद पर पत्थरबाजी की, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उनका सिर फूट गया। खगेन, मालदा से सांसद हैं। मामला जलपाईगुड़ी जिले के दुआर्स क्षेत्र के नागरकाटा का है। भीड़ ने सांसद के साथ गए भाजपा विधायक शंकर घोष और अन्य नेताओं पर भी हमला किया। सभी बाढ़ प्रभावित इलाके में लोगों को राहत सामग्री बांटने गए थे। हमले से पहले 500 से ज्यादा लोगों ने 'वापस जाओ' के नारे लगाए और सड़कें जाम कर दीं।

चुनाव के ऐलान से पहले पटना में दौड़ी मेट्रो

- अचानक सीट से उठकर बाहर का नजारा देखने लगे नीतीश; आज से कर पाएंगे सफर

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के ऐलान से पहले पटना मेट्रो की शुरुआत हो गई है। सोमवार को सीएम नीतीश कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री ने पटना मेट्रो से सफर भी किया। आईएसबीटी से जीरोमाइल होते हुए भूतनाथ तक गए। इस दौरान सीएम अचानक अपनी सीट से उठे और विंडो से बाहर का नजारा देखने लगे। दोनों डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा भी साथ रहे। पहले फेज में आईएसबीटी से भूतनाथ रोड के बीच 3 स्टेशन के बीच इसे चलाया जाएगा। ये ट्रैक 4.5 किमी लंबा है। किराया फिलहाल 15 रुपए होगा।

जयपुर के एसएमएस हॉस्पिटल में आग, 8 मरीजों की मौत

- ट्रॉमा सेंटर के आईसीयू में देर रात हुआ हादसा, स्वास्थ्य मंत्री के सामने नारेबाजी, हंगामा

जयपुर की घटना अत्यंत दुखद - पीएम मोदी

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर के सवाई मानसिंह (एसएमएस) हॉस्पिटल के ट्रॉमा सेंटर के आईसीयू में रविवार देर रात आग लग गई। हादसे में 8 मरीजों की मौत हो गई। इनमें 3 महिलाएं शामिल हैं।

रात 11 बजकर 20 मिनट पर यह आग ट्रॉमा सेंटर के न्यूरो आईसीयू वार्ड के स्टोर में लगी। यहां पेपर, आईसीयू का सामान और ब्लड सैंपलर ट्यूब रखे थे।

ट्रॉमा सेंटर के नोडल ऑफिसर और सीनियर डॉक्टर ने बताया कि शॉर्ट सर्किट से आग लगने की आशंका है। हादसे के समय आईसीयू में 11 मरीज थे। उसके बगल वाले आईसीयू में 13 मरीज थे।

- जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी संवेदना- पीएम : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है- राजस्थान के जयपुर स्थित एक हॉस्पिटल में आग लगने से हुई जान-माल की हानि अत्यंत दुखद है। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति मेरी संवेदना।

- डिप्टी सीएम दीया कुमारी हॉस्पिटल पहुंचीं, लिया हालातों का जायजा- डिप्टी सीएम दीया कुमारी जयपुर के एसएमएस हॉस्पिटल पहुंचीं। अधिकारियों से पूरे मामले की जानकारी ली। दीया कुमारी ने डॉक्टरों को निर्देश दिए कि अस्पताल में मरीजों को किसी प्रकार की परेशानी न हो। उन्होंने इस हादसे को बेहद दुखद और पीड़ादायक बताया।
- पूर्व सीएम अशोक गहलोत बोले- न्यायिक जांच होनी चाहिए- पूर्व सीएम अशोक गहलोत सोमवार सुबह एसएमएस हॉस्पिटल पहुंचे। यहां उन्होंने अग्निकांड के शिकार परिवार वालों से बात की।

दार्जिलिंग में लैंडस्लाइड, अब तक 28 मौतें, कई लापता

- जम्मू-कश्मीर में स्कूल बंद, वैष्णो देवी यात्रा लगातार दूसरे दिन रद्द

हिमाचल के 3 जिलों में बर्फबारी, अटल टनल से सिस्सू के बीच जाम, 100 से ज्यादा गाड़ियां फंसीं

दार्जिलिंग/शिमला/हिमाचल (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग में रविवार को तेज बारिश के बाद हुई लैंडस्लाइड में मरने वालों की संख्या 28 हो गई है। इनमें 7 बच्चे हैं। कई लोग अब भी लापता हैं। लैंडस्लाइड में कई घर बह गए। दार्जिलिंग और सिक्किम का सड़क संपर्क देश के बाकी हिस्सों से टूट गया है।

इसके कारण हजारों पर्यटक फंसे हैं। दार्जिलिंग और कर्सियांग के बीच नेशनल हाइवे टूट गया है। मिरिक और दूधिया के पास लोहे का ब्रिज टूटने से दार्जिलिंग से सिलीगुड़ी का वैकल्पिक रास्ता भी बंद है। अलीपुरदुआर में रेल ट्रैक डूबने से तीन गाड़ियां रद्द की गईं। दार्जिलिंग और कालिम्पोंग में चाय के बागान डूब गए हैं।

इधर, जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश का अलर्ट है। इसके चलते स्कूल शिक्षा निदेशालय जम्मू ने सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूलों को 6 और 7 अक्टूबर के लिए बंद करने का आदेश दिया है। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने वैष्णो देवी यात्रा 5 से 7 अक्टूबर तक सस्पेंड करने की घोषणा की है।

पहाड़ों पर आ गई पहले से सर्दियां, गुलमर्ग और हिमाचल में बर्फबारी, केदारनाथ और हेमकुंड साहिब में बर्फ - उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बारिश और बर्फबारी होने से ठंड की शुरुआत हो गयी है। वहीं हेमकुंड साहिब में भारी बर्फबारी हुई है जबकि देहरादून संहिता आसपास के क्षेत्र में मूसलाधार बारिश से हवाओं में ठंडक आ गई है।

कटक में हिंसा के बाद 36 घंटे का कर्फ्यू लागू

- 60 पुलिस पलटन तैनात, प्रशासन ने जनता से शांति की अपील की

कटक (एजेंसी)। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा विसर्जन के दौरान हुई हिंसा के बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गई है। इस बढ़ती हिंसा को काबू में करने के लिए राज्य सरकार ने कड़ी कार्रवाई की है। सरकार ने कटक के 13 थाना क्षेत्रों में 36 घंटे का कर्फ्यू लगाया है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के पंडालों की मूर्ति विसर्जन के दौरान हुई हिंसक झड़पों के बाद प्रशासन ने 36 घंटे का कर्फ्यू लगा दिया है। यह कर्फ्यू 6 अक्टूबर रात 10 बजे से 7 अक्टूबर सुबह 10 बजे तक लागू रहेगा। ये कर्फ्यू भारतीय न्याय संहिता की धारा 163 के तहत लगाया गया है।

पेंशनरों ने दीपावली पूर्व 5% डीआर मांगा

भोपाल। पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव को लिखे पत्र में शासकीय पेंशनरों को 1 जनवरी 2025 से 2 प्रतिशत एवं 1 जुलाई 2025 से 3 प्रतिशत महंगाई राहत देने की मांग की है।

सक्सेना ने दोनों राज्यों के मुख्य सचिव को लिखे पत्र में स्पष्ट किया है कि मध्यप्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 की धारा 49 में एकीकृत मध्यप्रदेश के पेंशनरी दायित्वों का विभाजन किया गया है एवं इसमें उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़ राज्य के पेंशनरी दायित्वों के विभाजन का कोई प्रावधान नहीं है। एसोसिएशन के संरक्षक गणेश दत्त जोशी ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा एकीकृत मध्य प्रदेश के शासकीय पेंशनरों/परिवार पेंशनरों को महंगाई राहत देने की सहमति दी जा रही है ना कि उत्तरवर्ती पेंशनरों के महंगाई राहत की। भोपाल जिले के अध्यक्ष सुरेश शर्मा ने मुख्य सचिव से महंगाई राहत के छत्तीसगढ़ शासन द्वारा सभी सहमति पत्र एवं दोनों राज्यों के महालेखाकार द्वारा वसूली के सभी पत्रों के अवलोकन करने की मांग करते हुए कहा कि जब मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़ के महालेखाकार द्वारा उत्तरवर्ती मध्यप्रदेश के पेंशनरी दायित्वों की वसूली की ही नहीं जा रही है, तो आधारहीन सहमति लेने के पीछे सरकार अपनी मंशा स्पष्ट करें। एसोसिएशन के उपाध्यक्ष शंभूनाथ मुखर्जी, संतोष ठाकुर सचिव रामगोपाल माथुर, यशवंत सिंह बेस, शैलेंद्र श्रीवास्तव, अनिल पांडे संयुक्त सचिव दीप्ति अग्निहोत्री, महिला संयोजक रेणू गव्हाड ने प्रदेश के पेंशनरों को दीपावली पर्व से पूर्व महंगाई राहत देने की पुरजोर मांग की है।

भाई ने बहन को नहर में डुबोकर मार डाला

गोरखपुर (एजेंसी)। गोरखपुर में एक युवक ने अपनी सगी छोटी बहन को नहर के पानी में डुबोकर मार डाला। इसके बाद घर से कुछ ही दूर एक खेत में उसकी लाश फेंक दी। कुछ देर बाद खुद थाने पहुंचा और कहा- मैंने अपनी बहन की हत्या कर दी है। लाश खेत में पड़ी है। युवक ने बताया- मेरी बहन का अफेयर चल रहा था। उसे कई बार समझाया, लेकिन वह मानने को तैयार नहीं थी। इसीलिए जान से मार दिया। इसके बाद उसने खेत से बहन की लाश भी बरामद कराई।

लघुकथा का हश्र कविता जैसा ना हो जाए: डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ल

इंदौर। अपनी अंजली में समंदर को भरने का नाम लघुकथा है, उस अंजली के पानी को नदी बनाने का नाम कहानी है, और उस नदी को समंदर बनाने का नाम उपन्यास है। ये बात ख्यात लघु कथाकार डॉ. योगेंद्र नाथ शुक्ल ने आशिक देवासवाला की पहली साहित्य कृति सफर-ए- जिंदगी के विमोचन अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उदबोधन में कही। आपने चिंता व्यक्त करते हुए आगे कहा कि 'मुझे इस बात का बहुत डर है कि लघुकथा का हश्र कविता जैसा नहीं हो जाए' क्योंकि जिस तरह कविता अति बौद्धिकता और सतहीपन में घिरकर जनता से दूर होती गई। वैसे ही लघुकथा चार दीवारों के बीच कुछ लोगों का बौद्धिक विलास या टाईम पास करने की वस्तु न बन जाए। लेखकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि वह यदि चाहें तो कविता की तरह लघुकथा से समाज में क्रांति ला सकते हैं। अहिंदी भाषी देवासवाला ने यह कृति लिखकर हिंदी पर उपकार किया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भोपाल के व्यंगकार यशवंत गोरे ने कहा कि 'ये लघुकथाएं समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं विडंबनाओ को रेखांकित करती हैं। लघुकथाएं पाठकों को समाज में उन विसंगतियों और विडंबनाओं पर मंथन करने के साथ उन्हें दूर करने के लिए उन विवश करती हैं। देवास वाला उर्दू के विद्यार्थी होने के बाद भी उनकी लघु कथाओं में उसका आभास बिलकुल नहीं होता है, उर्दू का कम से कम प्रयोग करने से लेखक ने अपने आप को बचाएं रखा। हिंदी के साथ पूरा न्याय किया हैं।'

आपने एक सामयिक व्यंग रचना मानसून का बिदाई समारोह सुनाकर श्रोताओं को आनंदित कर दिया।

लेखिका ज्योति जैन, विशेष अतिथि समाजसेवी, शिक्षाविद जुजर हुसैन सेठजीवाला थे, संचालन- संयोजक अनिल कुमार धडवईवाले ने किया।

मेट्रो ट्रेन को यात्रियों का टोटा, अब दो ट्रेनों के बीच का समय बढ़ाया

सप्ताह में मेट्रो में मुश्किल से 400 यात्री ही सफर कर रहे

इंदौर। जोर शोर के साथ शुरू की गई मेट्रो ट्रेन में यात्रियों का टोटा हो गया। यही कारण है कि मेट्रो रेल प्रोजेक्ट के अधिकारियों ने इसमें दोबारा संशोधन करते हुए दो ट्रेनों के बीच का समय बढ़ा दिया।

बताया जा रहा है कि मेट्रो रेल प्रोजेक्ट को वर्तमान में सप्ताह के अंदर 300 से 400 यात्री भी बड़ी मुश्किल से मिल रहे हैं। अब सोमवार से शनिवार तक ट्रेन 3 से शाम 7 बजे तक 2 घंटे अंतराल से चलेगी। जानकारी अनुसार मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने इस बदलाव का कारण मेट्रो ट्रायल को बताया। ट्रेन को रेडिसन चौराहे तक चलाने के लिए ट्रायल किया जाता है, इस दौरान स्टेशन पर आम नागरिक रहते हैं। ट्रायल बाधित हो सकता है। यही कारण है कि संचालन का अंतराल बढ़ाया है।

शनिवार को मेट्रो ट्रेन एससी-3 स्टेशन से हीरानगर स्टेशन तक टेस्टिंग किया गया था। एमएमआरसीएल के एमडी एस कृष्ण

चैतन्य ने बताया कि संपूर्ण प्राथमिकता कॉरिडोर पर 16 स्टेशन सहित मेट्रो स्टेशन मालवीय नगर चौराहा तक टेस्टिंग और परीक्षण रन के लिए कार्य तेज गति से चल रहे हैं, जल्द ही पूरे कॉरिडोर पर टेस्टिंग की जाएगी। यही कारण कि मेट्रो परिचालन की समय-सारणी में संशोधन किया जा रहा है।

समय-सारणी इस प्रकार

सोमवार से शनिवार तक दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक चलेगी। अंतराल होगा प्रत्येक 2 घंटे में एक ट्रेन। रविवार को समय दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक होगा और अंतराल भी 1 घंटे का होगा।

परीक्षण और कमीशनिंग

मेट्रो के सभी 16 स्टेशन के परिचालन को निर्धारित समय में पूरा करने के उद्देश्य से दिन-रात परीक्षण एवं कमीशनिंग संबंधी काम किए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने मेट्रो परिचालन की समय में संशोधन किया जा रहा है। इससे सभी जरूरी काम तय समय में पूरे किए जा सकेंगे। 26 सितंबर को हीरानगर स्टेशन तक टेस्टिंग और परीक्षण किया गया था। पूरी प्राथमिकता कॉरिडोर (सभी 16 स्टेशन) मालवीय नगर चौराहा, मेट्रो स्टेशन तक टेस्टिंग और परीक्षण रन के लिए काम तेजी से चल रहा है। जल्द ही पूरे कॉरिडोर पर टेस्टिंग की जाएगी, उसी को देखते हुए मेट्रो के चलने के समय में संशोधन किया गया है। यह नया समय सोमवार से प्रभावी होगा।

स्वच्छ शहर की सेहत उतनी अच्छी नहीं

लोग बीपी, शुगर व मोटापे का शिकार

दो दिवसीय 'नेशनल कार्डियो प्रिवेंट कांफ्रेंस' में एक्सपर्ट का निष्कर्ष

इंदौर। कार्डियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया (सीएसआई) ने शनिवार और रविवार को अपनी दो दिवसीय 'नेशनल कार्डियो प्रिवेंट कॉन्फ्रेंस' में निष्कर्ष निकाला कि इंदौर तेजी से बीमार हो रहा है, यह स्थिति चिंताजनक है। बच्चे और युवा अपनी खराब लाइफ स्टाइल को तुरंत सुधारें। वे मोटापे पर नियंत्रण करें अन्यथा स्थिति और भयावह होगी।

देश-विदेश से आए कार्डियोलॉजिस्ट्स ने चिंता जताई स्वच्छता में इंदौर भले ही आठ बार देश में सिरमौर रहा है। लेकिन, यहां के लोगों की सेहत तेजी से बिगड़ रही है। भले ही स्वच्छ इंदौर के साथ स्वस्थ इंदौर बनाने पर जोर दिया जा रहा हो, लेकिन मेडिकल रिपोर्ट्स के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। इंदौर हार्ट क्लब ने हाल ही में 4 लाख लोगों की स्क्रीनिंग की, जिनमें से 30 प्रतिशत हाई ब्लड प्रेशर और डायबिटीज से पीड़ित मिले। इनमें 12 प्रतिशत बच्चे हैं। दिल्ली के डॉ. एचके चोपड़ा ने बताया कि हार्ट के लिए जोखिम के बहुत सारे फैक्टर्स हैं। इनमें से एक खास फैक्टर मोटापा है। पेट की गोलाई यानी तोंद पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। अमेरिका से आए यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क, सेन फ्रांसिस्को के

कार्डियोलॉजिस्ट डॉ प्रकाश डिडवानिया ने बताया कि भारत में जिस प्रकार दिल की बीमारियों के मरीज बढ़ रहे हैं, यह बहुत चिंताजनक है। इंदौर की यह स्थिति चौंकाने वाली है। सुपर स्पेशिएलिटी अस्पतालों से जुड़े हार्ट क्लब के डॉक्टरों ने नेशनल कॉन्फ्रेंस में डेटा प्रेजेंटेशन दिया तो हम सभी चौंक गए। डॉ प्रकाश डिडवानिया ने कहा कि बच्चे, जवान, बुजुर्गों सहित सभी लोगों में रिस्क फैक्टर्स बढ़ रहे हैं। आए दिन अचानक किसी की हार्ट अटैक या कार्डियक अरेस्ट से मौत का कारण खराब लाइफ स्टाइल और मोटापा है। ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, कोलेस्ट्रोल, मोटापा ये सभी खराब लाइफ स्टाइल के फैक्टर्स हैं। इन्हें प्रिवेंट किया जा सकता है लेकिन लोग गंभीर नहीं हैं। कॉन्फ्रेंस का पूरा सार यही निकला है कि बढ़ती हार्ट डिसीज को नियंत्रण करने के लिए प्रिवेंशन ही सबसे बेहतर उपाय है। सबसे पहले जरूरत है कि हायपरटेंशन, डायबिटीज को बचपन से ही प्रिवेंट कर लें।

एमआईजी में युवती ने सुसाइड किया परिजन अस्पताल लाए, पर बची नहीं

इंदौर। इंदौर के एमआईजी इलाके में रहने वाली 19 वर्षीय युवती स्नेहा, पुत्री विजय हिरवे ने रविवार रात जहर खा लिया। हालत बिगड़ने पर परिवार ने उसे एमवाय अस्पताल पहुंचाया, लेकिन दो घंटे बाद स्नेहा की मौत हो गई। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। अभी तक किसी तरह का सुसाइड नोट नहीं मिला है। एमआईजी पुलिस के अनुसार, स्नेहा को परिवार रात करीब 12 बजे एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचे। परिवार ने बताया कि स्नेहा ने रात करीब 11 बजे जहर खाया था। थोड़ी देर बाद उसकी तबीयत बिगड़ी, जिस पर परिवार ने उससे पूछा तो उसने जहर खाने की बात स्वीकार की। हालांकि, आत्महत्या के कारणों को लेकर स्नेहा ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया। परिवार ने बताया कि स्नेहा तीन साल पहले पढ़ाई छोड़ चुकी थी और घर पर ही रहती थी। उसका एक बड़ा भाई है और दो बहनें हैं, जिसमें एक बहन की शादी हो चुकी है। परिवार में दो भाई हैं, जिनमें एक नौकरी करता है और दूसरा स्कूल में पढ़ाई कर रहा है। परिवार ने यह भी बताया कि स्नेहा की किसी लड़के से दोस्ती नहीं थी, वह केवल पिता का मोबाइल इस्तेमाल करती थी। पुलिस ने कहा कि आत्महत्या के पीछे अभी तक कोई स्पष्ट वजह सामने नहीं आई है। स्नेहा के पिता स्क्रैप का व्यापार करते हैं।

बाइक फिसलने से वृद्धा की मौत

इंदौर। भंडारे से लौट रही बुजुर्ग महिला की मौत हो गई, जबकि उनका 17 वर्षीय पोता घायल हो गया। हादसा शनिवार रात पितृ पर्वत क्षेत्र में हुआ। गांधीनगर पुलिस के अनुसार यश राठौर (17) अपनी दादी शांताबाई पति धनसिंह राठौर को बुढानिया स्थित उनके पुराने घर छोड़ने जा रहा था। रात 11 बजे रास्ते में बाइक फिसल गई और दोनों गिर गए। राहगीरों की मदद से दोनों को तुरंत एंबुलेंस से एमवाय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। यश अपने माता-पिता के साथ जय भवानी नगर में रहते हैं। बुढानिया में दादा-दादी का निर्माणाधीन मकान है। शनिवार को इलाके में भंडारे का आयोजन था, जिसमें दादी को यश के पिता लेकर आए थे। रात में यश को पिता ने बाइक देकर घर छोड़ने भेजा था। यश वर्तमान में 10वीं कक्षा का छात्र है। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

कचरा सेग्रिगेशन विवाद में चालक को पीटा

इंदौर। निगम की कचरा संग्रहण गाड़ियों में गीला-सुखा कचरा अलग-अलग लिया जाता है। इससे कचरे को ट्रेंचिंग ग्राउंड में डम्प करने में मदद मिलती है। शनिवार को खजराना क्षेत्र में गीला-सुखा अलग-अलग बॉक्स में नहीं डालने को लेकर रहवासियों का विवाद हो गया। विवाद के चलते रहवासियों ने संगमत होकर गाड़ी के ड्रायवर और हेल्पर के साथ मारपीट की। पुलिस के मुताबिक अमित पाल निवासी मुराई मोहल्ला नगर निगम में दैनिक वेतनभोगी के पद पर काम करते है। वह जोन नंबर 10 की गाड़ी चलाते हैं। तंजीम नगर इलाके में कचरा गाड़ी लेकर पहुंचे थे। इस दौरान उनका हेल्पर विजय भी साथ में था। यहां पर एक घर से रेहान पिता जुबेर खान सूखा-गीला कचरा लेकर आया और गाड़ी में एक साथ डालने लगा। इस दौरान हेल्पर ने उसे ऐसा करने से रोका तो रेहान उसे अपशब्द कहने लगा। हेल्पर के बचाव में अमित आया तो रेहान ने उससे भी विवाद किया। इस दौरान रेहान ने मारपीट कर दी और आसपास के लोगों को इकट्ठा कर लिया। रहवासियों ने दोनों कर्मचारियों को जान से मारने की धमकी दी। उन्होंने मामले में नगर निगम के अफसरों को जानकारी दी। इसके बाद लिखित आवेदन थाने में दिया, जिसमें रात में पुलिस ने एफआईआर कर ली।

मां ने शराबी बेटे से बात करना किया बंद ... तो फांसी लगाई

तनाव और अकेलेपन के कारण उसने यह किया

इंदौर। शराब पीने की लत से नाराज होकर मां ने बेटे से बात करना बंद कर दी। कई बार बेटे ने मां को बात करने के लिए मनाया, लेकिन मां अपनी जिद पर अड़ी रही, तो बेटे ने परेशान होकर अपने कमरे में जाकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बाणगंगा पुलिस के अनुसार, मृतक शुभम पिता जमुना प्रसाद (28) है। घटना के पीछे शुभम की मां से अनबन और पत्नी के रिश्तेदारों के यहां चले जाने को वजह बताया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि शनिवार को जब शुभम के पिता घर आए और कमरे में गए तो उन्होंने शुभम को फंदे पर लटका पाया। शुभम स्कूल की वैन चलाता था। जबकि उसके पिता निजी कंपनी में ड्राइवर हैं। शुभम का एक भाई और बहन भी हैं। परिवार के अनुसार, शुभम की शादी 7 माह पहले हुई थी और उसकी पत्नी वर्तमान में पांच माह की गर्भवती है। घटना से एक दिन पहले ही पत्नी अपने रिश्तेदारों के पास एमआर 10 इलाके में रहने चली गई थी। पत्नी के जाने के बाद शुभम दोस्तों के साथ शराब पीकर घर लौटा। इस पर मां ने उसे फटकार लगाई। उसके बाद मां और शुभम के बीच बातचीत नहीं हुई। तनाव और अकेलेपन के कारण शुभम ने यह कदम उठाया, पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

करणी सेना के राजावत के खिलाफ बजरंग दल, विहिप ने शिकायत की

आरोप लगाया कि उनके संगठन के नाम का दुरुपयोग किया

इंदौर। करणी सेना के प्रदेश सह-संगठन मंत्री मानसिंह राजावत के खिलाफ बजरंग दल के पदाधिकारियों ने परदेशीपुरा थाने में शिकायत की है। आरोप लगाया गया है कि मानसिंह राजावत बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद संगठनों का नाम लेकर अफसरों, संस्थानों पर प्रभाव जमाने की कोशिश करते हैं।

विश्व हिंदू परिषद-बजरंग दल के लेटरहेड पर बजरंग दल के जिला मंत्री अंकित मौर्य ने यह शिकायत दर्ज कराई। कहा कि मानसिंह राजावत द्वारा थानों और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर बजरंग दल का नाम लेकर धमकाने और डराने का प्रयास किया जा रहा। इससे संगठन की छवि धूमिल हो रही है। शिकायत में यह भी उल्लेख है कि मानसिंह राजावत न तो बजरंग दल के किसी पद पर हैं और न संगठन से उनका कोई आधिकारिक

संबंध है।

मानसिंह राजावत के खिलाफ यह तीसरी बार शिकायत की गई। इससे पहले विजयनगर और एमआईजी थानों में भी उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई जा चुकी है। आरोप है कि वह लव जिहाद जैसे संवेदनशील मामलों में बजरंग दल का नाम लेकर लोगों पर प्रभाव डालते हैं। परदेशीपुरा पुलिस ने बताया कि उन्हें शिकायत लिखित रूप में मिली है। लेकिन, अब तक शिकायतकर्ताओं ने कोई ठोस साक्ष्य या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए। मामले की जांच जारी है।

मानहानि का नोटिस देंगे

इस विवाद पर मानसिंह राजावत ने कहा कि वह करणी सेना के प्रदेश सह-संगठन मंत्री हैं और उन्होंने कभी बजरंग दल का नाम अपने किसी कार्य में नहीं लिया। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ लोग उन्हें जानबूझकर बदनाम कर रहे हैं। मानसिंह ने यह भी कहा कि उन्होंने भी वरिष्ठ अधिकारियों को इस संबंध में आवेदन सौंपा है और अब वह शिकायतकर्ताओं के खिलाफ मानहानि का नोटिस भेज रहे हैं।

कुत्ते को बचाने में बायपास पर बाइक सवार देवर-भाभी गिरे, गंभीर घायल

पीछे आ रही तेज बस के ड्राइवर ने सतर्कता से उन्हें बचा लिया

इंदौर। कुत्ते को बचाने की कोशिश में बायपास पर बाइक सवार देवर-भाभी का संतुलन बिगड़ गया और वे सड़क पर गिर गए। उनके गिरने से पीछे से आ रही तेज रफ्तार बस का भी संतुलन बिगड़ा। लेकिन, ड्राइवर ने सतर्कता दिखाते हुए बस को संभाल लिया और बड़ा हादसा होने से बच गया। इस घटना में देवर-भाभी गंभीर रूप से घायल हुए। दुर्घटना रविवार देर शाम बायपास स्थित पांच महुआ रोड, सिमरोल के पास हुआ। फूल व्यवसायी लाल सिंह और उनकी भाभी संजना कुशवाह इंदौर से सामान लेकर घर लौट रहे थे। इस दौरान बायपास पर अचानक एक कुत्ता तेज रफ्तार से दौड़ते हुए आया। उन्होंने कुत्ते को बचाने की कोशिश की, लेकिन कुत्ता बाइक के अगले पहिए से टकराकर भाग गया और बाइक असंतुलित होकर गिर गई। उसी समय पीछे से तेज रफ्तार में आ रही एक बस पास आ गई, लेकिन बस ड्राइवर ने सूझबूझ दिखाते हुए बस को एक ओर मोड़ दिया, जिससे बड़ा हादसा होते-होते टल गया।

स्थानीय लोगों की मदद से दोनों घायलों को एमवाय अस्पताल पहुंचाया गया। लाल सिंह के सिर, हाथ और पैरों में गंभीर चोटें आई हैं और सिर में 9 टांके लगे हैं। संजना कुशवाह भी बुरी तरह जख्मी हुई हैं। डॉक्टरों का कहना है कि ब्रेन में अंदरूनी चोट नहीं है, लेकिन पूरी तरह ठीक होने में समय लगेगा।

सीएम हेल्पलाइन पर नलों में गंदा पानी की शिकायतें सबसे ज्यादा

नगर निगम के खिलाफ शिकायतों की संख्या 3500 के पार

इंदौर। नगर निगम के लापरवाह झोनल अधिकारी और कर्मचारियों के कारण सीएम हेल्पलाइन पर शिकायतों की संख्या 3500 के पार पहुंच चुकी हैं। बताया जा रहा है कि नगर निगम की शिकायतों में सबसे अधिक संख्या गंदे पानी की हैं। इसके अलावा बिल्डिंग परमिशन और कुत्तों के काटने की भी कई शिकायतें हैं।

साथ ही बिल्डिंग परमिशन ड्रेनेज और अन्य शिकायतें भी बड़ी संख्या में सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज हैं। जहां तक नलों में गंदा पानी आने की शिकायतों की संख्या की बात की जाए तो यह आंकड़ा 550 के आसपास स्थित है। बिल्डिंग परमिशन की भी करीब 300 शिकायतें सीएम हेल्पलाइन पर लंबित है। एक और जहां निगम अधिकारी इन शिकायतों को खत्म कर वाहवाही लूटने की कोशिश करते हैं वहीं दूसरी ओर यह भी प्रश्न सामने आता है कि यदि प्राथमिक स्तर पर ही कार्रवाई की जाती तो सीएम हेल्पलाइन पर इतनी बड़ी संख्या में शिकायतें नहीं दर्ज होती। जानकारी अनुसार नगर निगम के बिल्डिंग परमिशन विभाग में नक्शे से अधिक और अवैध निर्माण को लेकर शिकायतें दर्ज करवाई गई है। कुछ लोगों का कहना है कि अवैध निर्माण को लेकर सबसे पहले झोनल कार्यालय पर शिकायत की जाती है लेकिन वहां से किसी प्रकार का रिस्पांस नहीं दिया जाता। अवैध निर्माण से होने वाली परेशानी को लेकर सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज की जाती है। वर्तमान में बिल्डिंग परमिशन की करीब 300 शिकायतें हैं। बारिश का मौसम होने के कारण सबसे अधिक शिकायतों की संख्या नलों में गंदा पानी आने की है। यह शिकायतें 550 के आसपास हैं। सफाई और अन्य मामलों को लेकर भी बड़ी संख्या में शिकायत है सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज हैं।

कुत्तों के काटने के मामले - जानकारी अनुसार वर्तमान में एक बड़ी समस्या के रूप में आवारा कुत्तों द्वारा काटा जाना सामने आ रहा है। बताया जा रहा है कि लोग आवारा कुत्तों के काटने की शिकायतें भी आप सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज करवा रहे हैं।

चितावद में हनुमान मंदिर के पास कुंआ धंसने से 4 मकान खतरे में

निगम ने दो मकान खाली कराए, निगम ने मोर्चा संभाला

इंदौर। स्नेह नगर में तीन साल पहले बावड़ी धंस गई थी। इसमें 36 लोगों की मौत हो गई थी। इसी तरह की घटना रविवार को चितावद इलाके में हनुमान मंदिर के पास कुआं धंसने लगा। कुएं के पास रहवासी इलाका है। जानकारी लगने पर निगम अमला मौके पर पहुंचा और तुरंत आसपास के दो मकानों को खाली कराया गया।

जानकारी के मुताबिक, यहां श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर चितावद के पास ये वाकया हुआ। दोपहर में एमआईसी मेंबर को जानकारी मिली कि मंदिर के पास बना कुआं अचानक धंस रहा है। सूचना मिलने पर वे तुरंत मौके पर पहुंचे और स्थिति को देखा। उन्होंने आसपास में रहने वाले कुछ लोगों को घर से बाहर निकाला और सुरक्षित स्थान पर रुकने का कहा। सुरक्षा को लेकर रस्सी से

कुएं के आसपास घेरा बना दिया, ताकि कोई उस तरफ न जा सके। सूचना पर नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारी भी जेसीबी और डंपर लेकर मौके पर पहुंच गए। घटना की जानकारी मिलने पर निगम की टीम जेसीबी और डंपर लेकर मौके पर पहुंची। सूचना मिलते ही नगर निगम के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे और बड़ी घटना होने बची। जेसीबी और डंपर को मौके पर बुलवाया गया और तत्काल कुएं को मिट्टी डालकर भरने का काम शुरू किया गया, जिससे बड़ा हादसा होने से टल गया।

परिवार को धर्मशाला में सहारा

घटना की जानकारी लगने के बाद लोगों की भी भीड़ वहां जमा हो गई। आसपास के लोगों का कहना है कि बीते दिनों हुई बारिश के कारण संभवत- ये हुआ है। हालांकि कुआं किस वजह से धंस रहा था ये अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। जल्द ही कुएं के भराव का काम पूरा हो जाएगा। कुएं को लेकर आगे जनप्रतिनिधियों और निगम अधिकारियों से चर्चा कर निराकरण किया जाएगा।

कलेक्टोरेट में सूचना आयोग की कैंप कोर्ट लगी

सेकंड अपील की सुनवाई के लिए बड़ी संख्या में आवेदक कलेक्ट्रेट पहुंचे

इंदौर। मध्य प्रदेश राज्य सूचना आयोग ने आज कलेक्टर ऑफिस में कैंप कोर्ट लगाई। इसमें बड़ी संख्या में सूचना आयोग में लंबित द्वितीय अपीलों की सुनवाई की गई। बताया गया है कि 200 से भी अधिक प्रकरण इस कैंप कोर्ट में रखे गए, जिनकी सुनवाई की गई। लंबे समय बाद सूचना आयोग ने इंदौर स्थित कलेक्टर ऑफिस में इस प्रकार की कैंप कोर्ट लगाई है। जानकारी अनुसार मध्य प्रदेश राज्य सूचना आयोग में बड़ी संख्या में सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत फाइल की गई द्वितीय अपील लंबित हैं। इन अभी लोगों को त्वरित निराकरण करने के उद्देश्य को लेकर मध्य प्रदेश राज्य सूचना आयोग द्वारा कलेक्टोरेट इंदौर के 112 नंबर रूम में कैंप कोर्ट लगाई। इसमें इंदौर संभाग के द्वितीय अपील प्रकरणों की सुनवाई की गई। राज्य सूचना आयुक्त उमाशंकर पचौरी ने प्रकरणों की सुनवाई की। कई गंभीर मामलों पर भी सुनवाई की गई जिनमें अपील फाइल की गई थी।

कोटा स्टेशन पर ब्लॉक, ट्रेनें प्रभावित

इंदौर। पश्चिम मध्य रेलवे कोटा मंडल के कोटा रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म संख्या 02 पर निर्माण कार्य के लिए ब्लॉक लिया गया है। इस कारण रतलाम मंडल से चलने और गुजरने वाली एक ट्रेन तत्काल प्रभाव से प्रभावित होगी। जानकारी अनुसार 8 अक्टूबर तक इंदौर से चलने वाली गाड़ी संख्या 22984 इंदौर कोटा एक्सप्रेस, सोगरिया रेलवे स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट रहेगी। साथ ही सोगरिया से कोटा के मध्य निरस्त रहेगी।

साइबर अपराधियों से 11 करोड़ रिफंड कराए

इंदौर। साइबर अपराधों पर पकड़ बनाते हुए क्राइम ब्रांच ने जनवरी 2025 से अब तक ऑनलाइन ठगी के शिकार हुए सैकड़ों पीड़ितों को कुल 11.30 करोड़ से अधिक की राशि वापस दिलाने में सफलता हासिल की। यह उपलब्धि प्रदेश में साइबर अपराधों के खिलाफ चल रही मुहिम का महत्वपूर्ण संकेत है। जनवरी से सितंबर के बीच 3500 साइबर फ्रॉड से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुई थी। पुलिस के अनुसार, जनवरी में 70,32,307 रुपए,फरवरी में 81,95,694 रुपए, मार्च में 60,10,955 रुपए, अप्रैल में 61,54,890 रुपए, मई में 1,73,04,552 रुपए, जून में 1,86,62,205 रुपए, जुलाई 1,78,82,194 रुपए, अगस्त में 1,49,71,122 रुपए तथा सितंबर 1,68,10,000 रुपए रिफंड कराए। वहीं, हजारों फर्जी बैंक खातों को फ्रीज किया, जिससे अपराधियों की धोखाधड़ी पर रोक लगी।

सरकारी स्कूलों में अगले महीने 9वीं से 12वीं तक की अर्धवार्षिक परीक्षाएं

डीपीआई ने टाइम टेबल जारी किया, इस बार एक महीना पहले

इंदौर। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले 9 से 12वीं तक के छात्रों के लिए महत्वपूर्ण खबर है। इस बार छमाही परीक्षाएं दिसंबर की बजाय नवंबर में होंगी। लोक शिक्षण संचालनालय ने इन अर्द्ध वार्षिक परीक्षाओं का टाइम टेबल भी जारी कर दिया है।

इसके तहत कक्षा 9वीं- 10 वीं की परीक्षाएं 3 नवंबर से शुरू और 11 नवम्बर को समाप्त होगी। वहीं 11वीं व 12वीं की परीक्षा 3 नवम्बर से शुरू होकर 13 नवम्बर तक चलेगी। इसमें 9वीं-10वीं की परीक्षा का समय सुबह 10 बजे से 1 बजे तक और 11वीं-12वीं का समय दोपहर 1:30 बजे से 4:30 बजे तक रहेगा। प्रत्येक पेपर की अवधि 3 घंटे रहेगी।

जानकारी अनुसार इस बार बोर्ड व वार्षिक परीक्षा पैटर्न के आधार पर पेपर तैयार होंगे। बोर्ड द्वारा जारी अंक योजना और अक्टूबर तक के कोर्स के आधार पर पेपर तैयार किए जाएंगे। परीक्षा के दिन भी कक्षाएं लगाई जाएगी और अगले दिन के विषय की तैयारी कराई जाएगी। इसके बाद इसका परिणाम घोषित होते ही छात्रों को समूहों में बांटा जाएगा और उनके लिए रेमेडियल कक्षाएं लगाई जाएंगी। एमपी राज्य ओपन बोर्ड भी प्रश्न पत्र माध्यमिक शिक्षा मंडल की ओर से प्रशिक्षित शिक्षकों से तैयार करवाएगा। परीक्षा के बाद शिक्षक उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर छात्रों को गलतियां बताई जाएंगी। 20 नवंबर को अभिभावक-शिक्षक संघ की बैठक कर अभिभावकों को भी उत्तर पुस्तिकाएं दिखाई जाएंगी।

डीपीआई ने जारी किए निर्देश- लोक शिक्षण संचालनालय ने निर्देश दिए है कि परीक्षा अवधि में शासन द्वारा यदि कोई सार्वजनिक अथवा स्थानीय अवकाश घोषित किया जाता है, तो भी परीक्षाएं यथावत कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगी। समय सारणी अनुसार प्रतिदिन परीक्षा पूर्व परीक्षा के विषय का अध्यापन सुनिश्चित कराया जाए। प्रायोगिक विषय, अतिरिक्त विषय तथा ऐसे विषय जो समय सारणी में प्रदर्शित नहीं है परन्तु विद्यालय में संचालित हैं, की परीक्षा 03.11.2025 से 13.11.2025 के मध्य प्राचार्य अपने स्तर पर समय सारणी निर्धारित कर आयोजित करें।

स्कूल में सभी छात्रों को परीक्षा कक्ष में परीक्षा प्रारंभ होने के 30 मिनट के पूर्व उपस्थित होना अनिवार्य होगा। परीक्षा प्रारंभ होने के 10 मिनट के पूर्व छात्रों को उत्तर पुस्तिका और 5 मिनट पूर्व प्रश्न पत्र वितरित किए जाएं। विषयमान अनुसार विद्यार्थियों की परीक्षाएं जैसे-जैसे समाप्त होती जाएं, विद्यार्थियों की अगले कार्य दिवस से नियमित कक्षाएं अनिवार्य रूप से प्रारंभ की जाएं। डीपीआई ने स्कूलों के प्राचार्यों को भी निर्देश दिए है कि चारों कक्षाओं की छमाही परीक्षा के बाद शिक्षकों द्वारा यह चिह्नित किया जाएगा कि कौन सा विद्यार्थी किस विषय में कमजोर है या कम अंक आए हैं। इसमें मुख्य रूप से गणित और अंग्रेजी के लिए कक्षाएं लगाई जाएंगी। अन्य विषयों में भी समस्या है तो उसके समाधान के लिए कक्षाएं लगाई जाएंगी।

संपादकीय

गाजा प्लान, संशय अभी बाकी

इजराइल और हमास के बीच दो साल से जारी युद्ध के गाजा युद्धविराम प्लान के बाद समाप्त होने की उम्मीदें अभी भी संशय के घेरे में हैं। मंगलवार को मिस्र में हमास और इजराइली प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के पहले सोमवार को इजराइल ने गाजा के अल बसरा इलाके पर हवाई हमले किए, जिसमें 15 लोगों के मारे जाने की खबर है। हालांकि राष्ट्रपति ट्रंप ने इजराइल को तुरंत हमले रोकने के लिए कहा है। उधर हमास ने राष्ट्रपति ट्रंप के दबाव में गाजा प्लान को मंजूरी तो दे दी है, लेकिन हथियार डालने से मना कर दिया है। ऐसे में क्या गाजा प्लान गाजा में सचमुच शांति ला पाएगा, इस पर प्रश्नचिन्ह अभी भी लगा हुआ है। हालांकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अभी भी पूरी तरह आशावान है। इसका एक कारण यह भी है कि दुनिया के लगभग सभी देशों ने गाजा में शांति स्थापित करने की इस पहल का स्वागत किया है, जिसमे भारत भी शामिल है। ट्रंप की योजना के तहत हमास तीन दिनों में 48 बचे हुए बंधकों को छोड़ देगा, जिनमें से करीब 20 जिंदा माने जाते हैं। इसके अलावा, हमास को सत्ता छोड़नी होगी और हथियार डालने होंगे। बदले में इस्राइल अपनी सैन्य कार्रवाई बंद करेगा, कई क्षेत्रों से पीछे हटेगा, सैकड़ों कैदियों को रिहा करेगा और मानवीय मदद तथा पुनर्निर्माण की अनुमति देगा। इस योजना के तहत ग़ज़ा में एक स्थानीय, तकनीकी प्रशासन स्थापित किया जाएगा जो रोज़मर्रा की सेवाएं चलाएगा, और इसका संचालन मिस्र स्थित 'बोर्ड ऑफ़ पीस' करेगा। हमास के वे सदस्य जो 'शांतिपूर्ण तरीक़े से साथ रहने' और हथियार छोड़ने के लिए तैयार होंगे, उन्हें माफ़ी मिलेगी और अन्य सदस्यों को निर्वासित किया जाएगा। अमेरिका और अरब देशों द्वारा बनाई गई अंतरराष्ट्रीय सेना ग़ज़ा में सुरक्षा संभालेगी और फिलिस्तीनी सशस्त्र समूहों के हथियार छोड़ने को सुनिश्चित करेगी। वैसे हमास के पास यह योजना स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इजराइल ने उसे पहले ही बहुत कमजोर कर दिया है। बाकी अरब देशों का दबाव भी उस पर है। उधर इजराइल की प्राथमिकता किसी तरह अपने बंधकों को हमास के कब्जे से छुड़ाने की है। इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि यहूदी पर्व सुक्कोत (जो सोमवार शाम से शुरू होकर एक सप्ताह चलेगा) के दौरान बंधकों की रिहाई हो सकती है। इस्राइल के बंधक मामलों के समन्वयक ने कहा कि देश 'पूरी प्रतिबद्धता और दृढ़ संकल्प' के साथ सभी बंधकों को छुड़ाने की कोशिश करेगा। गाजा में अब इस्राइल केवल रक्षात्मक स्थिति में रहेगा और सक्रिय हमले नहीं करेगा, लेकिन सैनिकों को हटाया नहीं गया है। ट्रंप ने नेतन्याहू पहले ही कह दिया था कि अगर हमास इस प्रस्ताव को नहीं मानता है तो अमेरिका उसे 'पूरी तरह समर्थन देगा ताकि आप जो करना चाहते हैं, कर सकें।' उधर ट्रंप के प्लान को लेकर पाकिस्तान उलझन में पड़ गया है। पहले समर्थन के बाद पाकिस्तान ने अब पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा है कि मसौदे के सभी पहलुओं से वह खुश नहीं हैं। क्योंकि उनकी मांगों को ड्राफ्ट में नहीं रखा गया है। वहां लोग पूछ रहे हैं कि आखिर अमेरिका और इजरायल कैसे बैठकर फिलिस्तीनियों का भविष्य तय कर सकते हैं। पाकिस्तानी विदेश मंत्री इशाक डार ने कहा है कि गाजा के लिए अमेरिकी शांति योजना उनको स्वीकार्य नहीं होगी, अगर इसमें आठ मुस्लिम देशों के संयुक्त रूप से प्रस्तावित संशोधनों को शामिल नहीं किया जाता। हालांकि पाकिस्तान के ऐतराज को ट्रंप और नेतन्याहू कोई तवज्जो देंगे, इसकी संभावना कम ही है। अहम बात यह है कि शांति स्थापित हो।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

केवल लाभ का साधन न बने दवा उद्योग

तमिलनाडु की श्रीसन फार्मास्युटिकल्स द्वारा निर्मित इस कफ सिरप के नमूनों में 48.6% डाई एथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) पाया गया, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुसार इसकी मात्रा 0.10% से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह रसायन अत्यंत खतरनाक इंडस्ट्रियल सॉल्वेंट है, जिसका उपयोग आम तौर पर ब्रेक फ्लूइड, एंटीफीज़ या औद्योगिक उपयोगों में किया जाता है, मानव शरीर में नहीं। डीईजी शरीर में पहुंचने पर किडनी फेलियर, लकवा और अंततः मृत्यु का कारण बन सकता है। दुखद यह है कि यह कोई पहली घटना नहीं है। भारत में 1990 के दशक से अब तक डीईजी से जुड़ी कई त्रासदियां हो चुकी हैं- हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, और अब मध्य प्रदेश व राजस्थान। हर बार कुछ दर्जन मासूमों की जान जाती है, कुछ दिन तक जांच चलती है, रिपोर्टें बनती हैं, और फिर धीरे-धीरे सब कुछ पहले जैसा हो जाता है। यही चक्र हर कुछ वर्षों में फिर घूम जाता है।

भारत में हाल ही में मध्य प्रदेश और राजस्थान में खांसी की दवा कोल्ड्रिफ के सेवन से 12 मासूम बच्चों की मौत की खबर ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। यह घटना केवल एक दवा की गुणवत्ता का मामला नहीं, बल्कि उस पूरे नियामक तंत्र की पोल खोलती है जो नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाया गया था। सवाल यह नहीं कि ये मौतें कैसे हुईं, बल्कि यह है कि आखिर क्यों हर कुछ सालों में ऐसी घटनाएं दोहराई जाती हैं? क्यों अब तक दवा निर्माण और परीक्षण की प्रक्रिया में सुधार नहीं हो पाया? और क्यों बच्चों की जान जाने के बाद ही सिस्टम जागता है?

तमिलनाडु की श्रीसन फार्मास्युटिकल्स द्वारा निर्मित इस कफ सिरप के नमूनों में 48.6% डाई एथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) पाया गया, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुसार इसकी मात्रा 0.10% से अधिक नहीं होनी चाहिए। यह रसायन अत्यंत खतरनाक इंडस्ट्रियल सॉल्वेंट है, जिसका उपयोग आम तौर पर ब्रेक फ्लूइड, एंटीफ्रीज़ या औद्योगिक उपयोगों में किया जाता है, मानव शरीर में नहीं। डीईजी शरीर में पहुंचने पर किडनी फेलियर, लकवा और अंततः मृत्यु का कारण बन सकता है। दुखद यह है कि यह कोई पहली घटना नहीं है। भारत में 1990 के दशक से अब तक डीईजी से जुड़ी कई त्रासदियां हो चुकी हैं- हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, और अब मध्य प्रदेश व राजस्थान। हर बार कुछ दर्जन मासूमों की जान जाती है, कुछ दिन तक जांच चलती है, रिपोर्टें बनती हैं, और फिर धीरे-धीरे सब कुछ पहले जैसा हो जाता है। यही चक्र हर कुछ वर्षों में फिर घूम जाता है।

सन् 2022 में गाम्बिया में भारतीय कफ सिरप से 70 से अधिक बच्चों की मौत ने भारत की वैश्विक साख पर गहरी चोट पहुंचाई थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी जारी की थी कि भारतीय दवाओं की गुणवत्ता को लेकर गंभीर खतरा है। ठीक उसके बाद उज़बेकिस्तान में भी ऐसी ही घटनाएं सामने आईं। परंतु क्या इन घटनाओं के बाद भारत ने अपनी निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ किया? जवाब है- नहीं। आज भी छोटे-मंझोले स्तर पर काम करने वाली अधिकांश दवा कंपनियां बिना पर्याप्त गुणवत्ता परीक्षण के उत्पाद बाजार में उतार देती हैं। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन की 2024 की रिपोर्ट बताती है कि 68 प्रतिशत एमएसएमई फार्मा कंपनियां गुणवत्ता की कसौटी पर फेल हुईं। वर्ष 2023 की जांच में यह आंकड़ा 65 प्रतिशत था। यानी स्थिति सुधरने के बजाय और बिगड़ रही है। यह तथ्य अपने आप में चौंकाने वाला है कि जिस देश को 'विश्व की फार्मेसी' कहा जाता है, वहीं अपनी दवाओं की विश्वसनीयता पर सबसे अधिक संदेह है।

इन घटनाओं की जड़ में सबसे बड़ा कारण है सरकारी निगरानी तंत्र की नाकामी। हमारे यहां दवाओं की गुणवत्ता जांचने वाली संस्थाएं मौजूद तो हैं, लेकिन उनका काम प्रायः कागज़ी औपचारिकता बनकर रह जाता है। गुणवत्ता जांच की प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है और परीक्षण रिपोर्टों में गड़बड़ियों के अनगिनत उदाहरण सामने आते हैं। कई बार दोषी कंपनियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल होने में सालों लग जाते हैं, और जब तक न्यायिक प्रक्रिया आगे बढ़ती है, कंपनी

फिर से काम शुरू कर देती है।

भ्रष्टाचार इस व्यवस्था की जड़ में समाया हुआ है। रिश्वतखोरी और राजनीतिक संरक्षण के चलते कई बार गुणवत्ता से समझौता कर लिया जाता है। कंपनियां सस्ते और निम्नस्तरीय कच्चे माल का उपयोग करती हैं, जिससे लागत घटती है और मुनाफा बढ़ता है, किंतु कीमत चुकाते हैं उपभोक्ता कभी जान से, कभी विश्वास से। डाई एथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) जैसी सामग्री दवाओं में इसलिए मिल जाती है क्योंकि यह ग्लिसरीन या प्रोपाइलीन ग्लाइकॉल से सस्ती होती है। ये पदार्थ आमतौर पर दवाओं को गाढ़ापन देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। लेकिन डीईजी जैसे रसायन रंगहीन, गंधहीन और मीठे होते हैं यानी पहचानना मुश्किल होता है। परिणामस्वरूप, यदि परीक्षण में लापरवाही हो तो यह आसानी से दवा में शामिल होकर ज़हर का रूप ले लेता है। कानून के अनुसार, हर फार्मा कंपनी को किसी भी तरह के ग्लाइकॉल या सॉल्वेंट के उपयोग से पहले उसकी शुद्धता का प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए। लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि अधिकांश छोटे निर्माता ये परीक्षण या तो करते नहीं, या कागजों में दिखा देते हैं। इसी लापरवाही का परिणाम हैं वे मासूम ज़िंदगियाँ जो कफ सीरप की कुछ चम्मचों से बुझ जाती हैं।

जब भी कोई ऐसी घटना होती है, तब सरकारें जांच समितियां गठित करती हैं, एडवाइजरी जारी करती हैं, और दोषियों पर कार्रवाई का आश्वासन देती हैं। परंतु कुछ सप्ताह बीतते ही सब कुछ सामान्य हो जाता है। इस बार भी यही हुआ, केंद्र ने दो वर्ष से कम उम्र के बच्चों को कफ सिरप न देने की सलाह जारी की। सवाल यह है कि क्या इस चेतावनी के लिए 12 बच्चों की मौत का इंतजार जरूरी था? अगर पहले से ही नियमों का कठोर अनुपालन होता, तो शायद आज ये बच्चे जीवित होते।

भारत की दवा उद्योग विश्व में तीसरे स्थान पर है। 200 से अधिक देशों में भारत की जेनेरिक दवाएं निर्यात होती हैं और दुनिया के कई गरीब देशों के लिए भारतीय दवाएं जीवनरेखा हैं। परंतु जब भारत में बनी दवाओं से विदेशों में मौतें होती हैं, तो केवल किसी कंपनी की नहीं, बल्कि पूरे देश की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। गाम्बिया और उज़बेकिस्तान की घटनाओं के बाद कई अफ्रीकी देशों ने भारतीय फार्मा कंपनियों के साथ अपने करारों पर पुनर्विचार शुरू कर दिया था। ऐसी स्थिति हमारे लिए आर्थिक ही नहीं, नैतिक और मानवीय संकट भी है।दवा उद्योग केवल व्यापार नहीं, बल्कि मानवता की सेवा है। लेकिन आज यह उद्योग प्रतिस्पर्धा और मुनाफे की होड़ में अपने नैतिक दायित्व को भूल गया है। जब तक इस क्षेत्र में पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा, तब तक किसी भी सुधार का स्थायी प्रभाव नहीं पड़ेगा। दवा निर्माण के हर चरण, कच्चे माल की खरीद से लेकर पैकेजिंग और वितरण तक सख्त निगरानी की आवश्यकता है।

भारत के पास दवा निर्माण की क्षमता, संसाधन और प्रतिभा की कोई कमी नहीं। जरूरत है, तो केवल नियामक तंत्र को मजबूत बनाने और उसे भ्रष्टाचार से मुक्त करने की। दवा परीक्षण के लिए अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की स्थापना, फार्मा उद्योग में डिजिटल ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग, और दोषी कंपनियों पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई- ये कदम अनिवार्य हैं। इसके साथ ही, आम जनता में भी जागरूकता बढ़ानी होगी ताकि उपभोक्ता बिना चिकित्सकीय सलाह के दवाओं का प्रयोग न करें और संदिग्ध उत्पादों की सूचना दें। हर बार जब किसी मासूम की जान जाती है, तो केवल एक परिवार नहीं, पूरी व्यवस्था असफल साबित होती है। बच्चों की ये मौतें हमें यह याद दिलाती हैं कि स्वास्थ्य सुरक्षा केवल सरकारी दस्तावेज़ों या एडवाइजरी का विषय नहीं, बल्कि जीवन का प्रश्न है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि यदि हम अपने नागरिकों के लिए सुरक्षित दवाओं की गारंटी नहीं दे सकते, तो हमारी तकनीकी प्रगति और आर्थिक उपलब्धियाँ अर्थहीन हैं।

यह समय आत्ममंथन का है सरकार, उद्योग और समाज, तीनों के लिए। हमें तय करना होगा कि दवा उद्योग को केवल लाभ का साधन बनाना है या जीवन रक्षक व्यवस्था के रूप में पुर्नस्थापित करना है। यदि नियंत्रण, नैतिकता और पारदर्शिता की तीन मजबूत दीवारें खड़ी नहीं की गईं, तो हर कुछ वर्षों में यही खबरें लौटकर आएँगी 'कफ सीरप से बच्चों की मौत।' मानवता का तकाजा यही है कि हम इस त्रासदी से सबक लें, ताकि भविष्य में कोई माता-पिता अपने बच्चे को खांसी की दवा देने से पहले भयभीत न हों। दवा को ज़िंदगी का पर्याय बने रहना चाहिए मौत का नहीं।

पर्यावरण

राज कुमार सिन्हा

लेखक पर्यावरण के लिए कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

नर्मदा महोत्सव का उल्लास और दम तोड़ती नर्मदा

प्रत्येक वर्ष शरद पूर्णिमा के दिन भेडाघाट में सरकार द्वारा नर्मदा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जाता है। परन्तु इसी नर्मदा नदी में जबलपुर से प्रतिदिन लगभग 136 एमएलडी प्रतिदिन सीवेज (नाले-नालियों का गंदा पानी) सीधे नर्मदा में जा रहा था।अब जबलपुर में लगभग 58.7 एमएलडी सीवेज का ट्रिटमेंट हो पा रहा है, जबकि लगभग 115 एमएलडी सीवेज बिना ट्रीटमेंट के नर्मदा में अब भी जा रहा है। नर्मदा नदी मध्य भारत की जीवनरेखा है, जो लाखों लोगों को पेयजल, सिंचाई और आजीविका प्रदान करती है। परन्तु नर्मदा नदी की सहायक नदियों से कटते जंगलों का नर्मदा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है।जिसका असर पारिस्थितिक तंत्र, जल विज्ञान और सामाजिक स्तरों पर हो रहा है। नर्मदा की छोटी बडी कुल 41 सहायक नदियां है, जिसमें से 19 नदियां ऐसी है जिसकी लम्बाई 54 किलोमीटर से भी अधिक है। ये सहायक नदियां ही सतपुड़ा, विंध्य और मैकल पर्वतों से बूंद- बूंद पानी लाकर नर्मदा को सदा नीरा बनाती है।लेकिन इनमें से कई नदियां सूखने के कगार पर है या फिर शहरों के आसपास नालों में तब्दील हो रही है।

नर्मदा किनारे अतिक्रमण,जलग्रहण क्षेत्र में पेड़ कटने और अवैध रेत खनन इस नदी की आत्मा को छलनी कर दिया है। नर्मदा की प्रमुख सहायक नदियां जैसे तवा, बनास, शेर, बेतुल की दूधी, हिर्दा, ओरस, गोई, शक्कर, बंजर, हालोन, बुढनेर आदि घने वनों से निकलती है। इन क्षेत्रों में जंगल कटने से वर्षा जल का भूगर्भ में रिसाव घटा है। जिससे झरनों और छोटी धाराओं का जल प्रवाह घटा है, सहायक नदियां मौसमी होती जा रही हैं और नर्मदा का वार्षिक जलप्रवाह घटकर असंतुलित हो गया है। पहले घने जंगल बारिश के पानी को रोककर धीरे-धीरे नदी में छोड़ते थे, जिससे नर्मदा साल भर बहती रहती थी। अब बरसात में अचानक बाढ़ जैसी स्थिति बनती है और गर्मी में नदी का जलस्तर तेजी से घटता है। इससे नर्मदा बेसिन के हाइड्रोलॉजिकल चक्र में बड़ा असंतुलन आ गया है। जंगलों के कटने के कारण मिट्टी का कटाव बढ़ा है। इससे सहायक नदियों में गाद जमने लगी है और नर्मदा के जलाशयों (जैसे तवा, बरगी, सरदार सरोवर) में सिल्टेशन (गाद) दर बढ़ी है, जिससे उनकी जलधारण क्षमता कम होती जा रही है।

जंगल कटने से वन्यजीवों के प्राकृतिक गलियारे टूटे, नदी तट की जैव विविधता घटी और नदी की स्वयं शुद्धिकरण क्षमता भी प्रभावित हुई है। नर्मदा घाटी के हजारों गांव जो खेती, मछली पालन और पेयजल के लिए इन नदियों पर निर्भर थे, अब जल संकट और आजीविका संकट का सामना कर रहे हैं। भूमिगत जलस्तर घटने से कुएं और बोरवेल सूखने लगे हैं। नर्मदा नदी पर बने बरगी, इंदिरा सागर, ओंकारेश्वर और सरदार सरोवर बांधों में लगभग 60 हजार हेक्टेयर वन भूमि और जंगल डूब में आया है। प्रस्तावित मोरांड - गंजाल और बसनिया बांध से लगभग 5 हजार हेक्टेयर घना जंगल डूब में आने वाला है। अगर नर्मदा की सहायक नदियों के जंगलों की पुर्नस्थापना नहीं की गई तो नर्मदा का प्रवाह क्रमशः घटेगा,नदी का 'परिणामी बहाव क्षेत्र घटेगा और मध्य भारत के जल-संतुलन पर स्थायी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। नर्मदा की सहायक नदियों के जलागम क्षेत्रों में वनों की बहाली मृदा संरक्षण, वर्षा जल संचयन, और समुदाय-आधारित नदी पुनर्जीवन अभियान आवश्यक हैं।'

दूसरी ओर हाल के वर्षों में नर्मदा में अत्यधिक और अवैध रेत खनन ने इसके प्राकृतिक स्वरूप और संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। रेत केवल निर्माण सामग्री नहीं, बल्कि नदी के पारिस्थितिकी तंत्र की नींव होती है।रेत खनन से नर्मदा का तल गहराता जा रहा है, जिससे किनारों का कटाव बढ़ा और नदी का प्राकृतिक प्रवाह मार्ग अस्थिर हुआ है। कई स्थानों पर नदी का आकार और दिशा दोनों बदलने लगा है। रेत जल को छानने और नीचे पहुंचाने का काम करती है। इसके हट जाने से भूजल पुनर्भरण घटा है और नर्मदा घाटी के कई क्षेत्रों में कुएं और बोरवेल सूखने लगा है। रेत हटने से बरसात में तेज़ बाढ़ और गर्मियों में सूखापन बढ़ गया है। मछलियां, कछुए और अन्य जलीय जीव अपने प्राकृतिक आवास खो रहे हैं। नदी की स्वयं-शुद्धिकरण क्षमता भी कम हो गई है। अवैध रेत खनन से स्थानीय किसानों, मछुआरों और नाविकों की आजीविका प्रभावित हुई है। कई जगहों पर अपराध और सामाजिक तनाव भी बढ़े हैं। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) और मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने नर्मदा में अवैध खनन पर कई बार रोक लगाई है। परंतु प्रशासनिक नियंत्रण के अभाव में समस्या बनी हुई है। वैज्ञानिक पद्धति से सीमित खनन और स्थानीय ग्राम सभाओं की भागीदारी से ही संतुलन संभव है।

तीसरा महत्वपूर्ण बात है कि नर्मदा नदी के किनारे बसे कई शहर और नगर आज नदी प्रदूषण के प्रमुख स्रोत बन चुके हैं। यह प्रदूषण मुख्यतः घरेलू सीवेज, औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक कचरा और धार्मिक अवशेषों के कारण बढ़ा है। परिणामस्वरूप नर्मदा का पानी पीने योग्य नहीं रह गया है और कई जगह जैव-ऑक्सीजन मांग (बीओडी) मानक से ऊपर पाई जाती है। होशंगाबाद और जबलपुर के पास फेकल कोलिफॉर्म बैक्टीरिया की मात्रा खतरनाक स्तर पर पाई गई है। यह न केवल पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी खतरा है। नर्मदा बेसिन में सम्मिलित जिलों की आबादी सन् 1901 में लगभग 78 लाख थी जो 2001 में 3.31 करोड़ हो गई।अनुमान है कि 2026 आते- आते आबादी 4.81 करोड़ हो जाएगा तब नर्मदा घाटी के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव होगा। इसलिए नर्मदा महोत्सव को मनाते हुए दम तोड़ती नर्मदा के सवालों पर चिंतन किया जाना भी जरूरी है।

जनरेशन बीटा बनाम कल्कि अवतार

दृष्टिकोण

संदीप खमेसरा

लेखक पत्रकार हैं।

जेनरेशन ज़ी जाग रही है। जनरेशन अल्फा, लगाम अपने हाथों में लेने को लगभग तैयार है। ये दोनों, विरासत में जो भूमिका जेनरेशन बीटा के लिए छोड़ कर जाएंगे, उसी में से कल्कि का उदय होगा। कल्कि, सामूहिक चेतना का ही प्रारूप होगा। कोई या कई व्यक्ति इस सामूहिक चेतना को दिशा देने का काम कर सकते हैं, जैसे द्वापर में श्रीकृष्ण ने किया था। (1997-2010 के बीच जन्मे जनरेशन ज़ी हैं, 2010- 2024 अल्फा और 2025- 2039 बीटा)!

दुनिया भर में क्रांतियां घटने जैसी आहट है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सबमें युवाओं की भूमिका अहम है। कितने विनाश के बाद पुनरुथान का द्वार खुलता है, यह देखने की बात है।

2020 पुलिस बर्बरता के खिलाफ नाइजीरिया में।

2024 टैक्स और वित्तीय बिल के खिलाफ केन्या में।

2025 सांसदों का अप्रत्याशित वेतन बढ़ाने के बिल के खिलाफ इंडोनेशिया में।

2025 बिजली पानी को लेकर मेडागास्कर में।

2025 पेंशन सुधार और भ्रष्टाचार के खिलाफ पेरू में।

2025 बाढ़ नियंत्रण में भ्रष्टाचार के विरोध में फिलीपींस में।

2025 भ्रष्टाचार और सोशल मीडिया बैन पर नेपाल में।

और इसी वर्ष, अब मोरक्को में फीफा 2030 के विरोध में। हॉस्पिटल और शिक्षा की मूलभूत सुविधाओं के लिए सरकार के पास पैसा है नहीं और दस अरब डॉलर फीफा पर फूंकने की योजना पर काम कर रहे! आज की पीढ़ी का दायरा अपने स्वयं के स्वार्थ के इर्दगिर्द अधिक रहता है। दूसरा, चूंकि वे स्वयं आजादी चाहते हैं और दखलअंदाजी पसंद नहीं करते, तो धीरे धीरे उनकी मानसिकता वैसी हो गई कि कुछ गलत भी हो रहा है, तो उसे नजर अंदाज किया जाए। ऐसे में गलत के प्रति उनकी कोई मजबूत प्रतिक्रिया तब तक नहीं आती, जब तक उनका कोई स्वार्थ प्रभावित न हो जाए। नेपाल में सोशल मीडिया बैन से उठी ज्वाला, फिर भ्रष्टाचार को भी घेर ले यह अलग बात है।

आने वाली पीढ़ी की सुविधा या उसकी आजादी में कोई चीज बाधक बने, तो वे तुरंत एक होकर प्रतिक्रिया देंगे। यही जागरण, जब राष्ट्र या पृथ्वी के उत्थान में अभिव्यक्ति पा ले, तो कुछ विनाश के उपरांत पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी शुरू हो सकती है।

सोशल मीडिया किसी भी क्रांति में महत्ती भूमिका निभाएगा, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इस माध्यम से कोई भी आह्वान आसानी से घर घर में पहुंच जाएगा। कलयुग में कलपुर्जों से बने ये उपकरण किसी भी क्रांति के उद्घोष का सशक्त माध्यम बनेंगे।

सामूहिक चेतना सही दिशा और मानव कल्याण के लिए जागे, यह महत्वपूर्ण है। कई बार एक उद्घोष पर बिना किसी कारण के, कत्लेआम के लिए हजारों की भीड़ का इक्ठा होकर उत्पात मचा देना, खतरे की घंटी की ओर भी इंगित करता है।

बिना उद्देश्य के इक्ठी हुई बेकाबू भीड़ विनाश ही अधिक करती है। समय आ गया है, जब ऐसे इन्फ्लूएंजर्स इन प्लेटफॉर्म्स पर अपना रुतबा प्रतिष्ठित करें, जो किसी भी बड़े और सकारात्मक उद्देश्य के लिए यदि आह्वान करें, तो जयघोष के साथ लाखों युवा उनके साथ कदम से कदम मिला कर अपना योगदान दें। लेकिन दिशा एक ही रहे। स्वार्थ नहीं, देश का और इस सभ्यता का पुनरुथान!

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल

जान और जहान की जरूरी बातें

जान की कीमत वही समझता है जिसको जान जाने का खतरा होता है।जिसके सर पर मौत नहीं मंडराई वो अपनी जान को भी मखौल समझता है।'जान का रोग' लगा हो तो 'जान के लाले' पड़ना स्वाभाविक है और ऐसे में ऐरे गैरे ,नत्थू खैरे जान खाने लगें तो समझो गई भैंस पानी में।फिर तो नीम हकीम खतरे जान। ऐसे मौक़ों पर कुछ भी हो जान छुड़ाने में ही भलाई है। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि किसी तरह जान छूट जाए तो भागवत जी बंचवा देंगे। दरअसल जान जोखिम में होने का भय भी जान जाने से कम दुख नहीं देता।जीते जी मार देता है, जैसे मुख्यमंत्री का दावेदार किसी राज्य में अपने दल की हार पर मातम मनाने में ताजियादारों की तरह छाती पीट लेता है। हार गये अब जान से जहान से दोनों से जायेंगे, इसी दर्दनाक पीड़ा के साथ।

हमारे बुजुर्गों ने इसीलिए कहा है जान भी जहान भी। 'जान है तो जहान है' कहने वालों की कमी नहीं है देश में। जिसे भी जान और जहान की असलियत का आभास हुआ वो जल्दी ही 'जान भी जहान भी' पर उतर आता है।मरता क्या न करता?और मरना कौन चाहता है? धर्म में अपरिग्रह की बात है फिर भी सुनने समझने के बाद जीते जी छोड़ता कौन है?

किसी व्यक्ति या वस्तु के लिए जान देने की बातें भी होती रहती है,लेकिन जान देने वाले कम ही मिलते हैं।यह बात कभी उनसे पूछो जिन्होंने जीवन में त्रासदियां देखी और भोगी हैं।जैसे कोई भूकम्प, गैसकांड, भीषण बाढ़ या केदारनाथ जैसी बड़ी त्रासदी। जान की कीमत यही लोग समझते हैं।होने को ऐसे समय भी कुछ जान देने वाले हिम्मत कर सामने आते हैं और जान पर खेलने से पीछे नहीं हटते । बच जाते हैं तो इनका बाद में सम्मान वगैरह होता रहता है किंतु कमज़ोर लोगों की तो देखते ही जान पर आ बनती है।ज़रा उनसे पूछिए जिनकी ऐसे में जान सूखती है।लेकिन संकट मोचक की उपस्थिति से जान बच जाती है। ये उस समय उसे ही ईश्वर का अवतार समझते हैं और घर पहुंचने के बाद दुनियादारी में उलझते ही भूल जाते हैं।दरअसल देवता और मानव अनुकूल समय आते ही दुख की सारी बातें भूल जाते हैं ऐसा पढ़ने सुनने को मिलता रहा है।ऐसा होना चाहिए, या नहीं ये गंभीर प्रश्न है जिस पर विचार होना चाहिये।मृतक के बारहवें के बाद भी नहीं उबरे तो जीवन भर दुख में डूबे रहेंगे। फिर जीवन का आनंद कब लेंगे? एक बड़े कवि ने कहा भी है-मुर्दों के साथ कोई मर नहीं जाता। होती रहे आलोचना उससे क्या, आलोचना तो एक एक कविता या पंक्ति की हो जाती है तो क्या लड़ने चले जायें?

किसी को जान से मारना भी ग़लत है। आदमी क्या, पशु पक्षियों वन्य प्राणियों को भी नहीं। अहिंसा का सिद्धांत यही है कि किसी व्यक्ति के कर्मों से कोई दूसरा प्राणी जान से न जाए। जिसकी जान निकलती है वह जान लेने वाले को शाप देने से बाज नहीं आता।महाराज पांडु, दशरथ, के जीवन की घटनाएं इसके उदाहरण हैं। उन्हें आखेट के शौक़ ने कहां से कहां पहुंचा दिया। इसलिए किसी की जान का कारण नहीं बनना चाहिए। बल्कि मदद करनी चाहिए इससे उखड़ती सांस वालों की भी जान आ जाती है।

वो मेरी जान है मैं उसकी जान हूं कहने वालों की भी कमी नहीं, लेकिन मरने के वक़्त अधिकतर लोग पहले अपनी जान बचाते नजर आते हैं। उसकी जान तोते में है ऐसी कहानियां भी बचपन में बहुत सुनी हैं। लेकिन ऐसे वजनदार लोगों की भी कमी नहीं है जो मानते हैं कि जान जायेगी तो दूसरों की अपन तो बंकर में सुरक्षित हैं। राजनीति में उतरने वालों की पहली शिक्षा यही है कि दूसरों की जान के चक्कर में क्या अपना जहान बिगाड़ लें? ये प्रश्न अन्य क्षेत्र के लोगों को भी मथता है।इस मंथन से कभी-कभी समझदारों को अमृत का जुगाड़ हो जाता है वरना मरने का खेल तो कदम कदम पर है। जान हथेली पर रखकर जीने वालों के लिए तो इधर कुआं उधर खाई है।

महर्षि वाल्मीकि जयंती पर विशेष

शिवकुमार शर्मा

लेखक सेवानिवृत अधिकारी हैं।

संस्कृत के प्रथम महाकाव्य के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि

'मरीच्यमिर्त्यंगिरसौ पुलस्त्यं पुलहं ऋरतुम्। प्रचेतसं वशिष्ठं च भृगुं नारदमेव च।।' (मनुस्मृति 1/35) महर्षि मरीचि, अत्रि, अंगिरा ,पुलस्त्य, पुलह ,क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद ऋषि कश्यप और अदिति की संतानें हैं। प्रचेता कश्यप एवं अदिति की नौवीं संतान थे,जिन्हें वरुण भी कहा जाता है। उनकी दशवीं वीं संतान के रूप में वाल्मीकि का जन्म हुआ। महर्षि वाल्मीकि की माता का नाम चर्षणी था। लव कुश को भगवान श्रीराम का पुत्र बताते हुए उनकी सभा में अपना परिचय देते हुए महर्षि वाल्मीकि ने अपने को प्रचेता का पुत्र बताया इसलिए उनका नाम प्राचेतस भी है। स्कंद पुराण के वैष्णव खंड में वैशाख मास का महत्व वर्णित है। इसी में शंख-व्याध संवाद और व्याध के पूर्व जन्म का वृतांत भी दिया गया है। शंख ने व्याध को 'राम' इस दो अक्षर वाले नाम का उपदेश दिया जो वेदों से भी अधिक शुभ कारक है। राम नाम भगवान विष्णु के सहस्त्रनाम के समान माना गया है।

महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत के प्रथम महाकाव्य की रचना की थी जो रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। इसी कारण वेआदिकवि कहलाये। रामायण में 24 हजार श्लोक हैं। इसे चत्वारिंशतशाहस्त्री संहिता भी कहा जाता है। महर्षि वाल्मीकि का जन्म आश्विन मास की (शरद) पूर्णिमा के दिन माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस के बालकांड के आरंभ में चौथे श्लोक में उन कवीश्वर महर्षि वाल्मीकिजी की वंदना करते हैं - 'सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ। वंदे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ।।' कवि कुलभूषण कालिदास ने आदि कवि का स्मरण रघुवंशम् में किया है । महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरित में लिखा है 'वाल्मीकिपार्श्वदिह पर्यटामि' मनुयस्तमेव हि पुराण ब्रह्म वादिनं प्राचेतसमृषिं उपासते। कवि शारंगधर महर्षि वाल्मीकि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए लिखते हैं 'कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम्। चंद्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः।।'

महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं को प्रचेता का पुत्र कहा है- 'एतदानाख्यानामायुष्यं समविष्यं सहोत्तरम्। कृतवान प्रचेतसः पुत्रस्तद ब्रहाप्यन्वमन्यत।।' (वाल्मीकि रामायण 7/111/11) 'सुतो तु तब दुर्धर्षो तथ्य मेतद ब्रबीमि ते। प्रचेतसोह्यहं दशमः पत्रो रघुकुलोद्वह ।।' (आध्यात्म रामायण,7/7/31) मैं सच कहता हूं यह दोनों दुर्जेय वीर आप की ही संतान हैं। हे राघव !मैं प्रजापति प्रचेता का दसवां पुत्र हूं। 'मरीच्यमिर्त्यंगिरसौ पुलस्त्यं पुलहं ऋरतुम्।

प्रचेतसं वशिष्ठं च भृगुं नारदमेव च।।' (मनुस्मृति 1/35) महर्षि मरीचि, अत्रि, अंगिरा ,पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद ऋषि कश्यप और अदिति की संतानें हैं। प्रचेता कश्यप एवं अदिति की नौवीं संतान थे,जिन्हें वरुण भी कहा जाता है। उनकी दशवीं वीं संतान के रूप में वाल्मीकि का जन्म हुआ। महर्षि वाल्मीकि की माता का नाम चर्षणी था। लव कुश को भगवान श्रीराम का पुत्र बताते हुए उनकी सभा में अपना परिचय देते हुए महर्षि वाल्मीकि ने अपने को प्रचेता का पुत्र बताया इसलिए उनका नाम प्राचेतस भी है। स्कंद पुराण के वैष्णव खंड में वैशाख मास का महत्व वर्णित है। इसी में शंख-व्याध संवाद और व्याध के पूर्व जन्म का वृतांत भी दिया गया है। शंख ने व्याध को 'राम' इस दो अक्षर वाले नाम का उपदेश दिया जो वेदों से भी अधिक शुभ कारक है। राम नाम भगवान विष्णु के सहस्त्रनाम के समान माना गया है।

'विष्णोरेकनामापि सर्ववेदाधिकतम्।
तेभ्यश्चानन्तनामभ्योअधिकं नाम्ना सहस्त्रकम्।।
तागदृंग्नाम सहस्त्रेण राम नाम समं मतम्।।

(स्कं. पु./वै.वै.मा,/21/53-54)। शंख ऋषि ने यह भी कहा कि अगला जन्म 'वल्मीकि' ऋषि के घर होगा और तुम इस पृथ्वी पर 'वाल्मीकि' नाम से प्रसिद्ध होगे।

स्कंद पुराण के अवंती खंड में अवंती क्षेत्र महात्म्य अंतर्गत दिए गये वर्णन अनुसार -सुमति नामक भृगुवंशी ब्राह्मण अपनी पत्नी कौशिक वंशीय कन्या तथा पुत्र अग्नि शर्मा अवंती क्षेत्र में निवास करते थे। एक बार भीषण अकाल पड़ा तो वह विदिशा के वन में चले आए वआश्रम बनाकर वहीं रहने लगे । वहां अग्नि शर्मा का लुटेरों का साथ हो गया, जिसके कारण मति भ्रम हो गई और ब्राह्मणत्व की स्मृति नहीं रही। गोत्र का ध्यान भी चला गया। पाप कर्म में निरत हो गए। इसी दौरान एक बार सप्त ऋषि वहां से निकले तो अग्नि शर्मा ने लूटने चाहा तो उन्होंने परिवार के सदस्यों से पूछने की सलाह दी तो अग्नि शर्मा ने परिवार वालों से पूछा तो पाप में भागीदारी से उन्होंने मना कर दिया। तब तो उनकी आंखें खुल गई और लौटकर उन्होंने सप्तऋषियों की शरण ली तथा उद्धार हेतु उपदेश की प्रार्थना की ।सप्तर्षियों में से अत्रि ऋषि ने अपना शिष्य बनाया तथा महामंत्र 'राम नाम' का जाप करने को कहा ।वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करने का आदेश दिया। चिरकाल पश्चात पुनः सप्त ऋषि इसी मार्ग से लौटे और राम नाम की ध्वनि सुनी। बाबीं को देखा उसे हटा कर अग्नि शर्मा को उठाया । उन्होंने मुनियों को प्रणाम किया। बांबीं में दीर्घकाल तक बैठे रहने के कारण ही सप्तर्षियों ने वाल्मीकि नाम दिया।

वाल्मीकि ने कुशस्थल में आकर महादेव की आराधना की। कवित्व शक्ति पाकर एक मनोरम काव्य (रामायण)की रचना की। वाल्मीकि जी के द्वारा शिव आराधना के फलस्वरूप तपोस्थली वाल्मीकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुई। कामक्रीड़ा में रत क्रोंच पक्षी के जोड़े से नर का शिकार के निमित्त एक बहेलिए द्वारा बध किए जाने पर क्रोंची द्वारा विरह वेदना के कारण किए गए करुण विलाप को सुन वाल्मीकि जी के मुख से संस्कृत का पहला श्लोक सहसा निश्रृत हुआ (मा निषाद प्रतिष्ठां त्वगमः शाश्वतीः समाः। यत् क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्॥ हे निषाद! तुझे कभी भी शाश्वत (दीर्घकाल तक) प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी,क्योंकि तूने काम-मोह में पड़े हुए इस क्रौंच-मिथुन में से एक की हत्या की है।) (पूज्य प्रसाद जी ,कामायनी में लिखते हैं' वियोगी होगा

पहला कवि,आह से निकला होगा गान.....)

अध्यात्म रामायण में भी अयोध्या कांड के अंतर्गत छठवें सर्ग में महर्षि वाल्मीकि से श्रीराम जी वन गमन के दौरान आश्रम पर जाकर भैंट करते हैं । तदनन्तर वाल्मीकि जी ने स्वयं अपने जीवन का पूर्व वृतांत बताया है। वाल्मीकि जी ने कहा 'अहं पुरा किरातेषु किरातै सह वर्धितः। जन्म मात्र द्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा ।।' (अ.रा./2/65)सप्तर्षियों के आगमन उनसे वार्तालाप परिवार की लूटपाट में सहमति न देने आदि की कथा लगभग समान है। लूटपाट में परिवार की असहमति के बाद उन्हे वैराग्य हो गया और मुनीश्वरों की शरण में आकर कल्याण के लिए प्रार्थना करने लगे। तब सप्तर्षियों ने आपस में मिलकर यह विचार किया कि यद्यपि यह ब्राह्मणाधम अत्यंत दुराचारी होने से श्रेष्ठ पुरुषों के लिए उपेक्षा का ही पात्र है तथापि अब यह शरण में आ गया है इसलिए मोक्ष मार्ग के उपदेश द्वारा इसकी यत्न पूर्वक रक्षा ही करना चाहिए। हे राम! ऐसा विचार कर उन्होंने आपका नाम अक्षरों को उलट करके मुझसे कहा 'तू इसी स्थान पर रहकर एकाग्रचित से सदा मरा मरा जपा कर।'

'इत्युक्त्वा राम ते नाम व्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम।
एकाग्रमनसात्रैव मरेति जप सर्वदा।।'

(अ.रा. 6/80) । इस तरह बहुत समय तक निश्चलता पूर्वक रहने से मुझ सर्वसंगविहीन के ऊपर वल्मीक (मिट्टी का ढेर) बन गया। तदनंतर एक हजार युग बीतने पर वे ऋषिगण फिर लौटे और मुझसे कहा 'निकल आओ'। यह सुनकर मैं तुरंत खड़ा हो गया और जिस प्रकार कोहरे को पार करके सूर्य निकल आता है, उसी प्रकार में वल्मीक से निकल आया। तब मुनिगण ने मुझसे कहा हे मुनिवर! तुम वाल्मीकि हो। इस समय तुम वल्मीक से निकले हो इसलिए तुम्हारा यह दूसरा जन्म हुआ है। हे रघुश्रेष्ठ! ऐसा कहकर वे दिव्यलोक को चले गए। 'एवं बहुतिथि काले गते निश्चल रुपिणः। सर्वसंग विहीनस्य वल्मीकोअभून्ममोपरि ।। (6/83) ततो व युग सहस्त्रान्ते ऋषयःपुनरागमन्। मामूचुर्निष्क्रमस्वेति तत्छ्रुत्वा तूर्ण मुत्थितः।। (6/84) 'वाल्मीकान्निर्गताश्चाअहं नीहारादिव भास्करः। मामप्याहुर्मुनिगणा वाल्मीकिस्तवं मुनीश्वरः।।' (6/85)

'वाल्मीकात्सम्भवो यस्मात द्वितीयं जन्म तेअभवत्।
इत्युक्त्वा थे ययुर्दिव्यगतिं रघुकुलोत्तम।। (6/86,)

जान आदि कवि नाम प्रतापू। भएहु शुद्ध करि उल्टा जापू।।(रामचरितमानस/बाल.कां/19/5,) तथा उलटा नाम जपत जग जाना। बालमीकि भए ब्रह्म समाना।।(राम.च.मा./बाल.का./194/8) । तथा रामु बिहाइ 'मरा' जपते,बिगरी सुधरी कवि कोकिल हूं की । (कवितावली/7/88) तथा जहां बाल्मीकि भये व्याधतें मुनिंद साधु 'मरा -मरा' जपें सिख सुनि रिषि सातकी (कवितावली/7/138)

संसार में जितने भी मंत्र हैं वे यदि नियम अनुसार शुद्ध-शुद्ध न जपे जाएं तो लाभ के बदले हानि होती है, परंतु राम नाम ऐसा महा मंत्र है कि अशुद्ध का तो कहना ही क्या उल्टा भी जपने से लाभदायक अर्थात् कल्याण कारक ही होता है। प्रश्न यह है उद्भूत होता है कि सप्त ऋषियों ने रत्नाकर को उल्टा नाम जपने को क्यों कहा? इसके बहुत से समाधान ग्रन्थों में बताए गये हैं। मरा-मरा कहते-कहते राम-राम निकलता ही है। यह समझकर उल्टा नाम जपने को कहा क्योंकि व्याध के रूप में अग्नि शर्मा या रत्नाकर को मरा- मरा कहने ने का अभ्यास तो था ही इसको आसानी से लगातार मरा-मरा कहने पर राम-राम अपने आप हो जाता है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण महाकाव्य हमारी अमूल्य धरोहर है विज्ञान विशारद आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने न केवल हिंदुस्थान अपितु संसार को रामायण जैसी अद्भुत रचना भैंट कर बड़ा उपकार किया है।

विश्व राजनीति

अंशुमान

लेखक देश के संसदीय चैनल में पत्रकार हैं।

इजराइल और फिलिस्तीन : क्या 'दो-राज्य समाधान' अब भी मुमकिन ?

इज़राइल-फ़िलिस्तीन का झगड़ा आधुनिक दुनिया का एक बड़ा और अहम मुद्दा रहा है, जो उम्मीदों, हिंसा, बातचीत और निराशा के दौर से गुज़रते हुए सौ साल से ज़्यादा चल चुका है। इस पुराने संघर्ष की जड़ में यह सवाल है कि आपसी राष्ट्रवाद, ज़मीन के दावे और गहरी दुश्मनी को कैसे सुलझाया जाए। इस झगड़े को खत्म करने के लिए जितने भी रास्ते सुझाए गए हैं, उनमें से 'दो-राज्य समाधान' (टू-स्टेट सॉल्यूशन)–जिसमें इज़राइल के साथ एक आज़ाद फ़िलिस्तीनी देश बनाने की कल्पना है–को दुनिया में सबसे ज़्यादा समर्थन मिला है।

मगर, जब इसे पहली बार सोचा गया था, उसके सत्तर साल से ज़्यादा बीत जाने के बाद, इस समाधान के कामयाब होने पर सवाल उठने लगे हैं। जैसे-जैसे बातचीत अटकती जा रही है, ज़मीनी राजनीति बदल रही है, और देश के अंदर और बाहर दोनों तरफ़ से दबाव बढ़ रहा है, तो हमें पूछना होगा- क्या यह रास्ता सचमुच शांति दिला सकता है, या यह अब पुराना ख्याल बन गया है?

20वीं और 21वीं सदी की शुरुआत के बड़े हिस्से में, दो-राज्य समाधान को इज़राइल-फ़िलिस्तीन झगड़े का सबसे व्यवहारिक और सही हल माना जाता रहा है। इस मॉडल में दो 'आज़ाद देश–इज़राइल और फ़िलिस्तीन' आपस में तय की गई सीमाओं के साथ शांति से रहें। संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और अमेरिका के कई प्रशासनों सहित पूरी दुनिया ने इस समाधान का समर्थन किया है, और पिछले कई दशकों की ज़्यादातर कूटनीतिक कोशिशें इसी फ्रेमवर्क पर टिकी थीं।

लेकिन, ज़मीन पर हालात मुश्किल हैं–फ़िलिस्तीनी इलाकों पर इज़राइल का कब्ज़ा, इज़राइली बस्तियों का बढ़ना, फ़िलिस्तीनी राजनीति में फूट पड़ना, और शांति प्रक्रिया पर से भरोसा उठना–इन सब ने दो-राज्य समाधान की कामयाबी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इस लेख में, हम देखेंगे कि यह समाधान कैसे शुरू हुआ, आज इसके सामने क्या रुकावटें हैं, और क्या दूसरे रास्ते ज़्यादा बेहतर हो सकते हैं।

इतिहास और झगड़े की शुरुआत

इज़राइल-फिलिस्तीन झगड़े की जड़ें 19वीं सदी के आख़िर और 20वीं सदी की शुरुआत में उठे विरोधी राष्ट्रवादी आंदोलनों में हैं। 1800 के दशक के आख़िर में ज़ायोनिज़्म नाम का यहूदी राष्ट्रवादी आंदोलन शुरू हुआ, जिसका मक़सद फ़िलिस्तीन में यहूदियों के लिए एक मातृभूमि बनाना था। यूरोप में सताए जा रहे यहूदियों ने फ़िलिस्तीन (जो उस समय ओटोमन साम्राज्य का हिस्सा था) में आना शुरू किया, जिससे इस आंदोलन को बल मिला। उसी समय, अरब राष्ट्रवाद भी मज़बूत हो रहा था, और फ़िलिस्तीनी अरबों को यहूदियों का आना उनकी राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान के लिए ख़तरा लगने लगा।

पहले विश्व युद्ध के बाद बने फ़िलिस्तीन पर ब्रिटिश राज ने स्थिति को और उलझा दिया। बालफ़ोर घोषणा (1917) के तहत, ब्रिटेन ने फ़िलिस्तीन में यहूदी मातृभूमि बनाने में मदद करने का वादा किया, साथ ही गैर-यहूदी समुदायों के अधिकारों की रक्षा का भी संकल्प लिया। 1920 और 1930 के दशक में यहूदियों की बढ़ती संख्या से स्थानीय अरब आबादी के साथ तनाव बढ़ा, जो हिंसक झड़पों में बदल गया। ब्रिटिश, इस झगड़े को सुलझा नहीं पाए, तो उन्होंने दूसरे विश्व युद्ध के बाद यह मामला संयुक्त राष्ट्र को सौंप दिया।

1947 में, संयुक्त राष्ट्र ने विभाजन योजना पेश की, जिसमें फ़िलिस्तीन को दो देशों–एक यहूदी और एक अरब–में बाँटने का प्रस्ताव था, और यरूशलेम को अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण में रखने की बात थी। यहूदी नेतृत्व ने इस योजना को मान लिया, लेकिन अरब देशों और फ़िलिस्तीनी नेताओं ने इसका सख़्त विरोध किया। इस विरोध से 1948 का अरब-इज़राइल युद्ध शुरू हुआ, जिसके अंत में इज़राइल राज्य की स्थापना हुई और 7 लाख से ज़्यादा फ़िलिस्तीनी बेघर हो गए–जिसे फ़िलिस्तीनी 'नक़्बा' या 'तबाही' कहते हैं।

इज़राइल और फ़िलिस्तीनियों की ज़मीनी हदें 1967 के 'छह-दिवसीय युद्ध' से और बदलीं, जिसमें इज़राइल ने वेस्ट बैंक, गाजा पट्टी और पूर्वी यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया–यही वे इलाक़े हैं जिन्हें फ़िलिस्तीनी अपने भविष्य के देश के लिए चाहते हैं। ये इलाक़े तब से इस झगड़े की जड़ बने हुए हैं।

ओस्लो समझौता और शांति की उम्मीद

1993 का ओस्लो समझौता शांति प्रक्रिया में एक अहम मोड़ था। इसमें इज़राइल और फ़िलिस्तीन मुक्ति संगठन ने एक-दूसरे को मान्यता दी और पक्की शांति के लिए एक रोडमैप बनाया। ओस्लो फ्रेमवर्क में दो-राज्य समाधान की कल्पना थी, जिसमें फ़िलिस्तीनी अथॉरिटी को वेस्ट बैंक और गाजा के कुछ हिस्सों में सीमित स्व-शासन मिला। इस समझौते में सीमा, शरणार्थी, सुरक्षा और यरूशलेम की स्थिति जैसे बड़े मुद्दों को सुलझाने की योजना भी तय की गई थी।

कुछ समय के लिए, ओस्लो समझौते से काफ़ी उम्मीद जगी थी। मगर, यह उम्मीद ज़्यादा दिन नहीं चली। समझौते ने फ़िलिस्तीनियों को सीमित शासन तो दिया, लेकिन ज़रूरी मुद्दे–जैसे यरूशलेम का भविष्य, फ़िलिस्तीनी शरणार्थियों की वापसी का अधिकार, और फ़िलिस्तीन देश की सीमाएँ–अनसुलझे रह गए। जैसे-जैसे बातचीत रुकी और हिंसा बढ़ी–जिसका नतीजा दूसरा इंतिफ़ादा (2000-2005) था–ओस्लो का वादा फीका पड़ने लगा। 1995 में इज़राइली प्रधानमंत्री यित्ज़ाक राबिन (जो शांति प्रक्रिया के मुख्य सूत्रधार थे) की हत्या और वेस्ट बैंक व पूर्वी यरूशलेम में इज़राइली बस्तियों का लगातार विस्तार ने शांति की तरफ़ बढ़ने वाली रफ़्तार को और कम कर दिया।

दो-राज्य समाधान के रास्ते में शायद सबसे बड़ी रुकावट फ़िलिस्तीनी कब्ज़े वाले इलाकों में इज़राइली बस्तियों का फैलना है। 1967 से, इज़राइल की सरकारों ने अंतरराष्ट्रीय विरोध के बावजूद वेस्ट बैंक और पूर्वी यरूशलेम में बस्तियाँ बनाने की मंजूरी दी है। आज, 6 लाख से ज़्यादा इज़राइली वेस्ट बैंक और पूर्वी यरूशलेम की बस्तियों में रहते हैं–ये वे इलाक़े हैं जिन पर फ़िलिस्तीनी अपने भविष्य के देश का दावा करते हैं।

इन बस्तियों ने ज़मीन और आबादी के नक्शे को पूरी तरह से बदल दिया है। बस्तियों के साथ-साथ बाईपास सड़कें, सैन्य क्षेत्र और प्रतिबंधित इलाक़े बनाने से वेस्ट बैंक छोटे-छोटे हिस्सों में बँट गया है। आलोचकों का कहना है कि यह एक तरह से फ़िलिस्तीनी ज़मीन पर कब्ज़ा है और इससे एक व्यवहारिक फ़िलिस्तीनी देश बनाना असंभव होता जा रहा है। इन बस्तियों ने न केवल फ़िलिस्तीनी ज़मीन पर अतिक्रमण किया है, बल्कि इज़राइली और फ़िलिस्तीनियों के बीच तनाव भी बढ़ाया है, जिससे शांतिपूर्ण समाधान की कल्पना करना मुश्किल हो गया है।

यरूशलेम : एक विवादित शहर

यरूशलेम इज़राइल-फ़िलिस्तीन झगड़े में सबसे ज़्यादा विवादित मुद्दों में से एक बना हुआ है। इज़राइली और फ़िलिस्तीनी दोनों इस शहर को अपनी राजधानी मानते हैं। इज़राइल के लिए, पूरा यरूशलेम यहूदी देश की हमेशा के लिए अविभाज्य राजधानी है। फ़िलिस्तीनियों के लिए, पूर्वी यरूशलेम–जिसे इज़राइल ने 1967 में छीन लिया था–उनके होने वाले देश की सही राजधानी है। शहर का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व किसी भी समझौते को और भी पेचीदा बना देता है।

2017 में अमेरिका ने यरूशलेम को इज़राइल की राजधानी के रूप में मान्यता देकर दशकों पुरानी कूटनीतिक सहमति को तोड़ दिया। फ़िलिस्तीनियों ने इस क़दम को इज़राइल के दावों का एकतरफ़ा समर्थन माना। किसी भी संभावित शांति समझौते में इस शहर की स्थिति को सुलझाना सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है।

फ़िलिस्तीनी राजनीति में बँटवारा

दो-राज्य समाधान के रास्ते में एक और बड़ी रुकावट फ़िलिस्तीनी नेतृत्व के बीच गहरा राजनीतिक बँटवारा है। 2007 में फ़तह (जो वेस्ट बैंक पर शासन करता है) और हमास (जो गाजा पट्टी को नियंत्रित करता है) के बीच फूट पड़ने के बाद से, फ़िलिस्तीनी इलाक़े दो हिस्सों में बँटे हुए हैं। इस बँटवारे ने फ़िलिस्तीनी पक्ष को बातचीत में कमज़ोर कर दिया है, क्योंकि इज़राइल से बात करने के लिए फ़िलिस्तीनी लोगों की तरफ़ से कोई एक आवाज़ नहीं है।

हमास, जो इज़राइल के अस्तित्व के अधिकार को मानने से इनकार करता है, को इज़राइल, अमेरिका और यूरोपीय संघ आतंकवादी संगठन मानते हैं। नतीजतन, उसे शांति वार्ता से लगभग अलग रखा गया है, जिससे फ़िलिस्तीनी आबादी का एक बड़ा हिस्सा दरकिनार हो जाता है। फ़तह और हमास के बीच बार-बार समझौते की कोशिशें नाकाम हुई हैं, जिससे फ़िलिस्तीनी समाज के अंदर राजनीतिक संकट और गहरा गया है और फ़िलिस्तीनी नेतृत्व की विश्वसनीयता कम हुई है।

बदलती क्षेत्रीय राजनीति

हाल के सालों में, क्षेत्रीय हालात इस तरह से बदले हैं कि फ़िलिस्तीनी मुद्दा पीछे छूट गया है। 2020 के अब्राहम समझौते, जिनके तहत इज़राइल और संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, सूडान और मोरक्को जैसे कई अरब देशों के बीच संबंध सामान्य हुए, मध्य पूर्व में प्राथमिकताओं में बदलाव दिखाते हैं। ये समझौते ईरान की चिंता और व्यापक क्षेत्रीय स्थिरता की वजह से हुए। हालाँकि इनसे इज़राइल को फ़ायदा हुआ, फ़िलिस्तीनियों ने इन्हें अरब लीग की फ़िलिस्तीनी हित के प्रति पुरानी प्रतिबद्धता से विश्वासघात माना।

अरब कूटनीति में फ़िलिस्तीनी मुद्दे का केंद्रीय महत्व कम होना, दो-राज्य समाधान के लिए बड़ा झटका है, जो ऐतिहासिक रूप से व्यापक क्षेत्रीय समर्थन पर निर्भर था। भले ही अरब जगत आधिकारिक तौर पर फ़िलिस्तीनी देश के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन उनका ध्यान अब ईरान के प्रभाव का मुकाबला करने और आर्थिक चिंताओं जैसे दूसरे क्षेत्रीय मुद्दों को संभालने पर है।

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भूमिका

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय दो-राज्य समाधान के लिए समर्थन तो ज़ाहिर करता रहता है, लेकिन परिणाम को प्रभावित करने की उसकी क्षमता कमज़ोर हुई है। अमेरिका ऐतिहासिक रूप से मुख्य बाहरी खिलाड़ी रहा है, लेकिन इसका रवैया हर प्रशासन में नाटकीय रूप से बदला है। राष्ट्रपति ओबामा के तहत, अमेरिका ने बातचीत पर ज़ोर दिया और बस्तियों के विस्तार को रोकने की कोशिश की। मगर, राष्ट्रपति ट्रम्प के तहत, अमेरिकी नीति पूरी तरह बदल गई; प्रशासन ने यरूशलेम को इज़राइल की राजधानी माना और गोलान हाइट्स पर इज़राइली संप्रभुता का समर्थन किया। इन कदमों को व्यापक रूप से इज़राइल के पक्ष में और फ़िलिस्तीनी देश की संभावनाओं को कमज़ोर करने वाला माना गया।

यूरोपीय संघ, जो दो-राज्य समाधान के समर्थन में हमेशा बना रहा, का क्षेत्र में असर और प्रभाव सीमित है। संयुक्त राष्ट्र ने फ़िलिस्तीनी अधिकारों की पुष्टि करते हुए कई प्रस्ताव जारी किए हैं, लेकिन इज़राइल अक्सर उन्हें नज़रअंदाज़ करता रहा है, और सार्थक बदलाव लाने की उसकी क्षमता भू-राजनीतिक मजबूरियों के कारण सीमित है।

दो-राज्य समाधान की घटती संभावना

दो-राज्य समाधान के कामयाब होने की उम्मीदें हाल के सालों में तेजी से कम हुई हैं। वेस्ट बैंक पर कब्ज़ा जारी है, गाजा नाकेबंदी में है, और यरूशलेम की स्थिति अनसुलझी है। इज़राइली बस्तियों के विस्तार और फ़िलिस्तीनी नेतृत्व में राजनीतिक फूट ने बातचीत से समाधान की तरफ़ बढ़ने की किसी भी सार्थक कोशिश को और मुश्किल बना दिया है।

इसके अलावा, कई इज़राइलियों में यह भावना बढ़ रही है कि हमास और हिज़्बुल्लाह जैसे समूहों से सुरक्षा खतरों को देखते हुए इलाक़ा छोड़ना सही नहीं है। इज़राइली नागरिकों पर हो रही लगातार हिंसा और हमलों ने कई लोगों को ज़मीन देने की बुद्धिमत्ता पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया है, खासकर जब फ़िलिस्तीनी देश की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

वैकल्पिक समाधान : एक राज्य या परिसंघ?

चूँकि दो-राज्य समाधान कमज़ोर पड़ रहा है, दूसरे प्रस्तावों को महत्व मिलने लगा है। ऐसा ही एक प्रस्ताव है 'एक-राज्य समाधान' (वन-स्टेट सॉल्यूशन), जिसमें इज़राइली और फ़िलिस्तीनी दोनों को शामिल करते हुए एक ही द्वि-राष्ट्रीय देश बनाने की कल्पना है, जहाँ सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलें, चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों। हालाँकि यह मॉडल समानता और समावेश की चिंताओं को दूर करता है, यह इज़राइल के यहूदी देश होने के मूल सिद्धांत को चुनौती देता है, जिससे यह कई इज़राइलियों के लिए राजनीतिक रूप से अस्वीकार्य हो जाता है। इसके अलावा, दोनों समुदायों के बीच गहरी दुश्मनी को देखते हुए, ऐसे देश में असली साथ-साथ रहना हासिल करना बेहद मुश्किल होगा।

एक और उभरता हुआ प्रस्ताव है 'परिसंघ', जिसमें दो अलग-अलग देश तो बने रहेंगे, लेकिन सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढाँचे जैसे मुद्दों पर साझा संस्थान और मिलकर काम करने वाली शासन व्यवस्था होगी। यह मॉडल राष्ट्रीय आत्मनिर्णय को व्यावहारिक सहयोग के साथ संतुलित करने की कोशिश करता है। हालाँकि, एक-राज्य समाधान की तरह, परिसंघ के विचार को भी बड़ी वैचारिक, लॉजिस्टिक और राजनीतिक रुकावटों का सामना करना पड़ता है, खासकर इज़राइलियों और फ़िलिस्तीनियों के बीच गहरे अविश्वास और बँटवारे को देखते हुए।

क्या दो-राज्य समाधान अब भी मुमकिन है?

दो-राज्य समाधान इज़राइल-फ़िलिस्तीन संघर्ष को सुलझाने के लिए सबसे ज़्यादा माना जाने वाला रास्ता बना हुआ है, लेकिन इसके कामयाब होने पर सवाल बढ़ता जा रहा है। ज़मीन पर राजनीतिक, ज़मीनी, और सुरक्षा के हालात–साथ ही फ़िलिस्तीनी नेतृत्व में फूट, इज़राइली बस्तियों का फैलना और बदलती क्षेत्रीय राजनीति ने दो देशों की स्थापना को पहले से कहीं ज़्यादा दूर कर दिया है।

फिर भी, इसके असंभव होते जाने के बावजूद, दो-राज्य समाधान का सांकेतिक और व्यावहारिक मूल्य अब भी है। यह एक ऐसे समझौते को दर्शाता है जो दोनों लोगों की राष्ट्रीय इच्छाओं को मानता है और शांति की तरफ़ एक संभावित रास्ता देता है। हालाँकि, जब तक राजनीतिक नेतृत्व, लोगों की राय और क्षेत्रीय माहौल में कोई बड़ा बदलाव नहीं आता, तब तक दो-राज्य समाधान एक दूर का आदर्श बना रह सकता है, जिस पर लगातार कब्ज़ा, हक़ों से वंचित रखना, और रुक-रुक कर होने वाली हिंसा हावी रहेगी।

बातचीत में कोई सफलता न मिलने पर, अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने संघर्ष को लेकर अपने नज़रिए पर फिर से सोचने की बड़ी चुनौती है। क्या दो-राज्य समाधान को फिर से ज़िंदा किया जा सकता है, या क्या इसे नए रास्तों के लिए जगह देनी होगी, यह समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सबसे ज़रूरी और अनसुलझे सवालों में से एक बना हुआ है।

विश्व कपास दिवस

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

जीवन के ताने-बाने में रचा-बसा है कपास

कपास पारिवारिक जीवन में मधुरता एवं आत्मीयता का प्रीति रस बनाये रखने का संकेतक है, अपने नेह-बीजों का चतुर्दिक कोमल तंतुओं से ढकने वाला संरक्षक है। कपास के रेशे जीवन में लोक से रस एवं ऊर्जा ग्रहण कर स्वयं को आलोकित बनाये रखने के संदेश वाहक हैं, यह आलोक परिवेश को ज्योतित कर लोक को पथ की पहचान कराता है। कपास देश-समाज की आर्थिकी का आधार है और भय एवं भूख से जूझने-लड़ने की ताकत भी। कपास जिजीविषा का प्रतिबिम्ब है, आगे बढ़ने की प्रेरणा है, सबल अवलम्ब है। कपास लज्जा से मुक्ति का वस्त्रावरण है, मानव एवं पशु का भोजन है, सौंदर्य का सखा है, स्वास्थ्य का प्रहरी है। निर्विवाद रूप से, कपास विविध रूपों में हमारे दैनंदिन जीवन में समाया हुआ है। कह सकते हैं कि जीवन के ताने-बाने में रचा-बसा है कपास। कपास श्वेतात्मा है, श्वेताभ लोकसाधक है।

कपास जीवन की नवलता एवं दृष्टि की धवलता का प्रतीक है। कपास शुचिता, संस्कार एवं स्नेह सातत्य का अविरल स्रोत है। कपास समृद्धि-वृद्धि का द्वार है, सहकार का सेतु है। रेशे-रेशे से अवगुंफित कपास सामूहिकता का भाव बोध है, शक्ति का समुच्चय है। चुनौतियों, बाधाओं और विपरीत परिस्थितियों पर विजय का शंखनाद है कपास। कपास पारिवारिक जीवन में मधुरता एवं आत्मीयता का प्रीति रस बनाये रखने का संकेतक है, अपने नेह-बीजों का चतुर्दिक कोमल तंतुओं से ढकने वाला संरक्षक है। कपास के रेशे जीवन में लोक से रस एवं ऊर्जा ग्रहण कर स्वयं को आलोकित बनाये रखने के सन्देश वाहक हैं, यह आलोक परिवेश को ज्योतित कर लोक को पथ की पहचान कराता है। कपास देश-समाज की आर्थिकी का आधार है और भय एवं भूख से जूझने-लड़ने की ताकत भी। कपास जिजीविषा का प्रतिबिम्ब है, आगे बढ़ने की प्रेरणा है, सबल अवलम्ब है। कपास लज्जा से मुक्ति का वस्त्रावरण है, मानव एवं पशु का भोजन है, सौंदर्य का सखा है, स्वास्थ्य का प्रहरी है। निर्विवाद रूप से, कपास विविध रूपों में हमारे दैनंदिन जीवन में समाया हुआ है। कह सकते हैं कि जीवन के ताने-बाने में रचा-बसा है कपास। कपास श्वेतात्मा है, श्वेताभ लोकसाधक है।

वर्ष 1981 में मैंने कक्षा पांचवीं उत्तीर्ण कर अतर्रा कस्बे के ब्रह्म विज्ञान इंटर कालेज में प्रवेश लिया था। वहां आठवीं तक, तीन साल रहा। वहां एक बिलकुल नये किंतु रोचक विषय से परिचय हुआ, वह था कताई-बुनाई। पहले दिन ही शिक्षक ने कताई-बुनाई के महत्व, लाभ और उपयोगिता पर कुछ बातें साझा कर प्रत्येक बच्चे को तकली और पूनी (छह इंच लम्बी रुई की हवादार खोखली बाती) खरीदने को बोला था। अगले दिन हम सभी बच्चे तकली-पूनी लेकर गये और उस पीरियड में जीवन में पहली बार रुई से सूत बनाने का प्रयास किया। बायें हाथ से ताली घुमाना होता था और दायें हाथ से पूनी को पकड़ उसका एक सिर तकली के तार की नोक पर फंसाकर सूत बनाना होता था। हम तकली घुमा दाहिना हाथ ऊपर की ओर आहिस्ते-आहिस्ते खींचते तो एक धागा सा बन जाता जिसे तकली की चकती के ऊपर लपेट लिया जाता। बहुत मजेदार गतिविधि थी, कभी तकली घुमाते तो पूनी वाला हाथ ऊपर करना भूल जाते, हाथ पर ध्यान देते तो तकली लुढ़क जाती। दोनों कुछ सधते तो सूत टूट जाता या कहीं मोटा और कहीं पर बिल्कुल पतला सूत निकलता। लेकिन अभ्यास से 10-15 दिन में तकली से सूत कातना लगभग सभी बच्चों ने सीख लिया था। वह कपास से सूत बनाने का पहला परिचय था। हालांकि कपास से परिचय तो स्कूल जाने के पहले ही हो गया था पर उसका दायरा बहुत सीमित था। तब हमारे गांव में लगभग हर घर में कपास के दो-चार पौधे उगाये जाते थे। दीपावली आते-आते कपास के पौधों में लगे फलों से रुई बाहर झांकने लगती थी, मानो कोई शिशु प्रकृति का सौंदर्य देखने को अपनी आंखें खोल रहा हो। फल फट जाते थे, और डालों पर लटके उनकी उजली रुई के गोलों पर चिड़ियां चोंच मारतीं जैसे मीठे मक्खन का स्वाद ले रही हों और कोई भगाता तो थोड़ी सी रुई चोंच में दबा फुर्र हो जातीं जैसे कोई बच्चा आईसक्रीम के गोले से एक टुकड़ा लेकर भाग गया हो। उन दिनों हम बच्चे कपास के फलों को तोड़कर रुई निकालते थे। रुई से लिपटे बड़े और कठोर बीज अलग रखते जाते। निकली रुई से दीपावली के दीपों हेतु अम्मा और दादी मिलकर बातियां बनातीं। तब गांवों में बाजार से रुई नहीं खरीदी जाती थी। तुलसीचौरा में संझवाती घर के कपास की रुई-बाती और गाय के घी से होती थी। तो इस तरह कपास लोकजीवन का अभिन्न अंग बना हुआ था। कपास खरीफ की एक नकदी फसल है, यह तो बहुत बाद में जान-समझ पाया।

कपास की जन्मभूमि भारत है, अब पाकिस्तान को भी इसमें जोड़ सकते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता में सूती कपड़ों का उपयोग किया जाता था। खुदाई में सूती कपड़ों के टुकड़े मिले हैं, जो कपास की प्राचीनता प्रमाणित करते हैं। बलूचिस्तान में कपास के पांच हजार पुराने बीज प्राप्त हुए हैं। यह सिद्ध करता है कि तत्कालीन समाज में कपास की खेती, सूत बनाकर कपड़े बुनने की कला और तकनीक विकसित थी। आज 80 से अधिक देशों में कपास की खेती होती है। कपास का वैज्ञानिक नाम गॉसपियम है। दुनिया के 3 प्रतिशत भूमि पर कपास की खेती होती है जो 27 प्रतिशत जनसंख्या के लिए वस्त्र, तेल एवं अन्य जरूरतें पूरी करती है। चीन सर्वाधिक कपास उत्पादन करता है। भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील, पाकिस्तान मुख्य कपास उत्पादक देश है। भारत में कपास के कुल उत्पादन का 65 प्रतिशत हिस्सा केवल महाराष्ट्र, गुजरात और तेलंगाना का है। भारत कपास एवं सूत आधारित वस्तुओं का विश्व का दूसरा बड़ा निर्यातक है। भारत में पहली सफल कपास मिल मुम्बई में वर्ष 1854 में स्थापित की गयी थी। कपास से निर्मित सूती वस्त्र आरामदायक, हवादार, शीतल और टिकाऊ होते हैं। पहनने में सुख की अनुभूति कराते हैं। ग्रीष्म ऋतु में तो सूती वस्त्र एवं अंगौछा बहुत उपयोगी हैं, लू एवं तेज धूप से रक्षा करते हैं। कपास उत्पादन एवं प्रसंस्करण से आज पांच महाद्वीपों में 3 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है, 10 करोड़ परिवार लाभान्वित हैं। एक टन कपास उत्पादन में 5 व्यक्तियों को पूरे वर्ष का रोजगार मिलता है।

कपास उत्पाद जैव अपघटनीय होने से पर्यावरण अनुकूल हैं। प्रकृति और पशु-पक्षियों के संरक्षण में भी कपास की अपनी भूमिका है। कपास से रुई के अलावा बीजों से तेल एवं खली प्राप्त होती है जिसका उपयोग भोजन बनाने, पशुओं को खिलाने और सौंदर्य उत्पादों में किया जाता है। कपास के अंतरराष्ट्रीय व्यापार, सतत विकास एवं आर्थिकी में योगदान, नये रोजगार सृजन तथा उसके महत्व एवं बहुआयामी लाभों से आमजन को परिचित कराने तथा जागरूकता के प्रसार हेतु कॉटन-4 अफ्रीकी देशों बेनिन, बुर्किना फासो, चाड़ और माली ने विश्व व्यापार संगठन के समक्ष वर्ष 2019 में 7 अक्टूबर को विश्व कपास दिवस मनाने का प्रस्ताव कर पहला आयोजन किया। कपास उत्पादन की बहुआयामी उपयोगिता को समझ संयुक्त राष्ट्रसंघ ने वर्ष 2021 में 7 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कपास दिवस के रूप में मनाने हेतु घोषणा किया था। तब से प्रत्येक वर्ष एक विशेष थीम पर वैश्विक आयोजन कर कपास केंद्रित कार्यक्रम किये जाते हैं। कपास हमारे जीवन में सुख, शांति, शीतलता, स्थिरता एवं समृद्धि प्रदान करे, ऐसी शुभेच्छा है।

शरद पूर्णिमा पर संस्था जय हो द्वारा 400 दमा रोगियों को निःशुल्क दिव्य औषधि का वितरण किया गया

धार। शहर की अग्रणी सामाजिक संस्था जय हो द्वारा शरद पूर्णिमा के पावन पर्व पर आनंद चोपटी स्थित शास्त्री मेडिकल स्टोर पर लगभग 400 दमा एवं श्वास रोगियों को दिव्य औषधि का वितरण किया गया ।

संस्था जय हो के संस्थापक डॉ.अशोक शास्त्री ने बताया कि विशेष पूजा के साथ दिव्य औषधि को सेवन करने की विधि, एवं परहेज की पूरी जानकारी समझाने के साथ वितरण किया। इस दिव्य औषधि को अगर तीन वर्ष लगातार हर शरद पूर्णिमा को विधि अनुसार सेवन करें तो यह बीमारी जड़ से समाप्त हो जाती है। संस्था द्वारा विगत 25 वर्षों से दिव्य औषधि का वितरण किया जा रहा हैं। इस अवसर पर संस्था जय हो के समंदर सिंह पटेल, धर्मेन्द्र जोशी, नवीन गर्ग, राजेश शर्मा, निलेश जोशी, संतोष चौधरी, लालू यादव का विशेष सहयोग रहा। जानकारी संस्था के गोटू शुक्ला ने दी।

पुलिस ने अवैध शराब एवं गौ-मांस तस्कर पर की कार्यवाही

बैतूल। आठनेर पुलिस ने अवैध शराब एवं गौ-मांस तस्करी में संलिप्त एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति महाराष्ट्र सीमा से एक सफेद रंग की स्कूटी से गौ-मांस एवं हाथ भट्टी की कच्ची महुआ शराब बेचने के लिए ला रहा है। सूचना पर पुलिस टीम ने घोघरा जोड़ पुलिया के पास नाकाबंदी की और एक सफेद स्कूटी (क्रमांक एमपी 48 जेडजी 6107) आती दिखाई दी, जिसे रोककर तलाशी ली गई। जांच में स्कूटी के

आगे रखी प्लास्टिक की बोरी से तीन मोटरसायकल ट्यूबों में भरी हुई 60 लीटर हाथ भट्टी की कच्ची महुआ शराब (कीमत लगभग 6,000) मिली। स्कूटी की डिक्की की तलाशी लेने पर तीन पन्नियों में कुल 6 किलो गौ-मांस बरामद हुआ। आरोपी से पूछताछ में उसने मांस को गौ-मांस होना स्वीकार किया। पुलिस ने आरोपी से कुल 1,06,000 मूल्य का माल जब्त किया। आरोपी यूनूस उर्फ इरफान खान पिता तैय्यद खान (38) निवासी आर्य वार्ड, टिकारी, बैतूल को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक अभिरक्षा में जिला जेल बैतूल भेजा गया। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक नरेंद्र सिंह परिहार के नेतृत्व में सउनि दिनेश धुर्वे, सउनि संतोष चौधरी, प्र.आर. पंकज बटके, आर. मनीष पटेल, आर. बीरबल मीणा, आर. प्रवीण, आर. दिनेश, आर. भीमचंचल एवं आर. गिरीराज धाकड़ की सराहनीय भूमिका रही।

कटाई के लिए फसल सूखने का इंतजार कर रहे किसान, खेतों में कीचड़ के कारण नहीं चल रहे हार्वेस्टर

बारिश ने बढ़ाई किसानों की चिंता, फसलों को नुकसान की आशंका

बैतूल। जिले में बारिश का अब थमना जरूरी है। ऐसा नहीं हुआ तो सोयाबीन और मक्का फसल को नुकसान होने का खतरा बढ़ जाएगा, क्योंकि ये फसलें लगभग तैयार होने की स्थिति में हैं। जिले के कई क्षेत्रों में तो दशहरा के बाद सोयाबीन की कटाई भी शुरू हो जाती है। मौसम विभाग की मानें तो अभी बारिश होने की संभावना बनी हुई है। वैसे जिले में जून-जुलाई में कमजोर बारिश हुई, वहीं सितंबर में अच्छी बारिश होते रही। अब अक्टूबर लगने के बाद किसान बारिश थमने की राह देख रहे है, ताकि कटाई और फसलों को सूखने का समय मिल सके। लेकिन बारिश हो रही है। जिससे यह बारिश फसलों के लिए नुकसानी का सबब बन सकती है। किसानों ने बताया कि सितंबर के आखिर में सोयाबीन और मक्का फसल पूरी तरह तैयार हो जाती है। सोयाबीन फसल में फल्ली आ जाती है। लेकिन बारिश से खेतों में नमी और पानी भरने के कारण फसलों को नुकसान होने की आशंका बनी हुई है। किसानों का कहना है कि खेतों में ज्यादा समय नमी रहने के कारण पौधों के सडने का भी खतरा है। मौसम साफ होने के साथ तेज धूप नहीं निकलती है, तो फसलें समय पर सूखेगी नहीं और किसानों को नुकसान उठाना पड़ेगा।

बारिश थमना जरूरी, नहीं तो सोयाबीन को नुकसान- वैसे ही अतिवर्षा और पीला मोजेक के कारण सोयाबीन की फसले प्रभावित हुई है, वहीं अब बारिश से खेतों में पानी भर रहा है। इससे सोयाबीन

फसल को नुकसान हो रहा है। मौसम विभाग की मानें तो अगले दो से तीन दिन हल्की बारिश होगी। बारिश का दौर अक्टूबर के पहले पखवाड़े तक जारी रहने की संभावना है। अच्छी बारिश होने से औसत का कोटा पूरा होने के साथ अधूरे भरे तालाब और डैम भी भरने की उम्मीद है, लेकिन दूसरी तरफ सोयाबीन, मक्का फसल को नुकसान की भी आशंका बनी हुई है। अब बारिश थमना जरूरी है, ताकि सोयाबीन और खरीफ फसल को सूखने का समय मिले। लगातार बारिश और खेतों में पानी जमा होने से फसलें खराब होंगी। तेज बारिश से फसल भीग जाएगी और क्वालिटी पर असर होगा।

जिले में 1007 मिमी बारिश, औसत से कम 3 इंच कम

वैसे तो 30 सितंबर तक बारिश का मौसम रहता है, लेकिन इस बार अक्टूबर में भी पानी बरस रहा है। जिले में अब तक 1007 मिमी बारिश हो चुकी है, जो कि औसत से 3 इंच कम है। पिछले 24 घंटे में यानि 5 अक्टूबर से 6 अक्टूबर सुबह 8 बजे तक जिले में 8.2 मिमी बारिश दर्ज की गई है। जबकि अभी तक जिले में 1007.0 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है, जो गत वर्ष तुलना में कम है। पिछले वर्ष इस अवधि तक 1011.5 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार जिले के बैतूल ब्लाक में अब तक 807.2 मिमी बारिश हुई है, जबकि घोड़ाडोंगरी में ब्लाक में 1219.0, चिचोली 1091.6, शाहपुर 1008.6, मुलताई 990.3, प्रभातपट्टन 932.5, आमला 821.0, भैंसदेही 975.2, आठनेर 749.2, भीमपुर 1478.0 मिमी अब तक इस सीजन में बारिश हुई है।

इनका कहना है -

बारिश से कच्ची फसलों को फायदा मिलेगा और फल्ली भरने का समय भी मिलेगा। जहां फसल पक गई है और कटाई पर आ गई है, वहां यदि फसल आड़ी होती है या पानी थमता है तो नुकसान की संभावना रहती है, लेकिन ऐसी स्थिति जिले में कहीं भी नहीं है। जिले में बारिश हो रही है और धूप खिल रही है। ऐसी स्थिति में किसानों को चाहिए कि वह खेतों में पानी जमा न होने दे।

आनंद बडोनिया,
उप संचालक, कृषि विभाग, बैतूल

सीएमएचओ डॉ. हुरमाड़े ने सिविल अस्पताल आमला का किया औचक निरीक्षण

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने 6 अक्टूबर को सिविल अस्पताल आमला का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल में पाई गई गंभीर अव्यवस्थाओं को देखकर डॉ. हुरमाड़े ने नाराजगी व्यक्त की। निरीक्षण के दौरान ओपीडी में पंजीयन काउंटर पर भारी भीड़ थी, जबकि केवल एक ही कर्मचारी पंजीयन कार्य कर रहा था। इस पर तुरंत एक अन्य कर्मचारी को पंजीयन में लगाया गया। पैथोलॉजी कक्ष में मरीजों की लंबी कतारें लगी हुई थीं और बैठने की कोई व्यवस्था नहीं थी। डॉ. हुरमाड़े के निर्देश पर तत्काल दो बेंच लगाकर मरीजों के बैठने की व्यवस्था करवाई गई। एक्स-रे रूम में ड्यूटी समय में ताला लगा पाया गया। जांच में पता चला कि एक्स-रे टेक्नीशियन दीपिका सूर्यवंशी मुलताई गई थीं। उन्हें तुरंत बुलाया गया और ड्यूटी से अनुपस्थित रहने पर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। महिला वार्ड के निरीक्षण में पाया गया कि इंडोर पर्चियों पर चिकित्सकों द्वारा नोट्स नहीं भरे जा रहे थे। चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रदीप जयंत को निर्देश दिए गए कि सभी इंडोर पर्चियों पर अनिवार्य रूप से नोट्स दर्ज किए जाएं। सीएमएचओ डॉ. हुरमाड़े ने खंड चिकित्सा अधिकारी आमला डॉ. नरवरे को तीन दिवस के भीतर अस्पताल की व्यवस्थाओं में सुधार लाने के निर्देश दिए। इसके साथ ही दो बच्चों की मृत्यु की सूचना मिलने पर डॉ. हुरमाड़े ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व आमला के साथ ग्राम कलमेश्वरा और जामुन बिछुआ का दौरा कर परिजनों से विस्तृत जानकारी ली। जानकारी के अनुसार बच्चों का इलाज परासिया में डॉ. प्रवीण सोनी के यहां हुआ था।

स्वच्छता, स्वास्थ्य और जनसेवा को समर्पित रहा आयुष विभाग का सेवा पखवाड़ा

बैतूल। आयुष विभाग द्वारा 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा अभियान का सफल आयोजन संपन्न हुआ। आयुक्त, संचालनालय आयुष मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशानुसार, कलेक्टर बैतूल के मार्गदर्शन में तथा जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर के निर्देशन में पूरे जिले में यह अभियान जोर-शोर से चलाया गया। 2 अक्टूबर को इस सेवा पखवाड़े का समापन दिवस मनाया गया। इस अवधि में आयुष विभाग की सभी संस्थाओं में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाए गए, जिनमें ग्रामीणजनों को सशक्त नारी सशक्त परिवार विषय पर जागरूक किया गया। बताया गया कि स्वस्थ और शिक्षित नारी ही सशक्त परिवार की नींव होती है। पखवाड़े के दौरान स्वच्छता पर विशेष बल दिया गया, औषधीय पौधों का रोपण और वितरण किया गया, तथा विद्यालय स्तर पर विभिन्न खेल गतिविधिया आयोजित कर प्रमाणपत्र वितरित किए गए। समापन दिवस पर आयोजित ग्रामसभा में आयुष विभाग की ओर से जन आरोग्य समिति गठन हेतु बैठक रखी गई, जिसमें शासन के आदेशानुसार समिति गठन के नियमों और उद्देश्यों पर चर्चा की गई।

शाहपुर की घटना के विरोध में राठौर समाज ने खोला मोर्चा

आरोपियों पर कार्रवाई नहीं होने पर दी उग्र आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। शाहपुर थाना क्षेत्र में गरबा कार्यक्रम के दौरान हुई छेड़छाड़ की घटना के बाद हमले में गंभीर घायल हुए नगर परिषद शाहपुर की उपाध्यक्ष पम्मी राठौर के पति दिनेश राठौर के समर्थन में जिला राठौर क्षत्रिय समाज पूरी तरह एकजुट हो गया है। 4 अक्टूबर की रात पतोवापुरा में गरबा देखने गई पम्मी राठौर और उनकी नाबालिग पुत्री के साथ आरोपी द्वारा छेड़छाड़ की गई, हाथ पकडक़र अश्लील हरकतें की गईं। विरोध करने पर आरोपी वहां से भाग गया। घटना की जानकारी मिलते ही पीड़ित ने परिजनों को बताया, जिसके बाद दिनेश राठौर, दीपांशु राठौर और अंशुमन राठौर आरोपी के घर समझाइश देने पहुंचे। इसी दौरान गुप्ता परिवार ने उल्टा विवाद कर चाकू, लाठी और लोहे की रॉड से हमला कर दिया। इस हमले में दिनेश राठौर को गंभीर चोटें आईं और उन्हें

पाढर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हमले में अन्य परिजन भी घायल हुए हैं। घटना के बाद जब पीड़ित पक्ष ने शाहपुर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई, तो जानकारी लगते ही गुप्ता परिवार ने अपने बचाव में झूठी कहानी गढक़र थाने पहुंचकर फर्जी प्रकरण दर्ज करा दिया। इस पूरे मामले में राठौर समाज ने कड़ा आक्रोश जताया है और दोषियों के विरुद्ध तुरंत कार्रवाई की मांग की है। जिला राठौर क्षत्रिय समाज के जिला अध्यक्ष सुभाष राठौर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने बैतूल एसपी को ज्ञापन सौंपा और छेड़छाड़ की घटना की निष्पक्ष जांच की मांग की। साथ ही समाज ने यह भी स्पष्ट किया कि गुप्ता परिवार द्वारा दर्ज कराया गया झूठा मामला तुरंत निरस्त किया जाए और हमला करने वालों को गिरफ्तार कर सख्त कार्रवाई की जाए। समाज ने चेतावनी दी है कि यदि समय रहते न्याय नहीं मिला, तो जिलेभर में उग्र आंदोलन शुरू किया जाएगा। ज्ञापन देने वालों में पम्मी राठौर, सुभाष राठौर, गंगा प्रसाद राठौर, शिवकिशोर राठौर, लवलेश राठौर, रेखा राठौर, विकास राठौर और नवीन राठौर प्रमुख रूप से शामिल रहे। राठौर समाज ने मांग की है कि नाबालिग बच्ची के साथ छेड़छाड़ करने वाले आरोपी आहान गुप्ता, संदीप गुप्ता और उनके अन्य परिजनों पर सख्त कानूनी कार्रवाई हो। साथ ही झूठा केस वापस लेकर समाज को न्याय दिलाया जाए।

प्रभारी मंत्री ने कहा की नर्मदा पुरम जिला औद्योगिक क्षेत्र में प्रदेश में नंबर वन जिला बनेगा

सभी लोग भारत में बनी स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग कर स्वदेशी उत्पादनों को बढ़ावा दे : प्रभारी मंत्री राकेश सिंह

प्रभारी मंत्री ने पिपरिया में आत्मनिर्भर सांसद मेले का उद्घाटन किया

नर्मदापुरम , निप्र। प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री तथा नर्मदा पुरम जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह ने रविवार को पिपरिया कृषि उपज मंडी में आयोजित आत्मनिर्भर सांसद मेले का उद्घाटन किया । इस अवसर पर उन्होंने स्वदेशी उत्पादकों की प्रदर्शनी का भी फीता काटकर उद्घाटन किया। प्रभारी मंत्री ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी लोग भारत में बनी स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करें । स्वदेशी उत्पादन को हर हाल में बढ़ावा देवे, सभी लोग संकल्प लें कि अपने दैनिक दिनचर्या में स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करेंगे, किसी भी स्थिति में बाहरी देश से आए वस्तुओं का उपयोग नहीं करेंगे । प्रभारी मंत्री ने कहा कि स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने से असंख्य रोजगार भी उत्पन्न होंगे । उन्होंने सांसद मेले के सफल आयोजन के लिए सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी को बधाई दी और कहा कि जिस उद्देश्य को लेकर सांसद मेले का आयोजन किया गया है वह हर हाल में सफल होगा। प्रभारी मंत्री ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव स्वयं स्वदेशी का मंत्र लेकर संकल्प लेकर देश और प्रदेश को आगे बढ़ा रहे हैं । उन्होंने कहा कि शताब्दी पूर्व भारत पूरी दुनिया में आत्मनिर्भरता के लिए

प्रसिद्ध था सभी वस्तुएं भारत में ही बनती थी। उस समय भारत की जीडीपी पूरे विश्व की 33त थी। हम बाहर से सामान नहीं बुलाते थे, पूरी दुनिया में भारत का सामान एवं उत्पादन पहचाना जाता था। भारत सोने की चिड़िया कहलाता था । लेकिन बाद में मुस्लिम आक्रांताओं ने भारत में बने स्वदेशी उत्पादकों की पहचान को मिटाने का कार्य किया । रही सही कसर अंग्रेजों ने पूरी कर दी। लेकिन आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पुनः भारत को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया गया है। प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने कहा कि हम सभी संकल्प ले कि हर हाल में अपने स्वदेशी उत्पादन को खरीदेंगे और उसका उपयोग करेंगे तो हमारा आत्मनिर्भर भारत का सपना हर हाल में साकार हो जाएगा । उन्होंने कहा कि आने वाले समय में देश के सामने बहुत सी चुनौतियां हैं लेकिन हम इस चुनौती को अवसर में बदलेंगे । आज भारत हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा चुका है। वह समय गया जब हम दूसरे देशों पर निर्भर रहते थे । आज मोबाइल से लेकर पी पी किट, कोरोना की वैक्सीन, वेंटिलेटर तक भारत में बनाए जा रहे हैं । प्रभारी मंत्री ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम विदेशी सामान के मोह से मुक्त हो जाए और स्वदेशी को अपनाए ।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि नर्मदा पुरम जिला भी तेजी से औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है । आने वाले समय में नर्मदापुरम जिला प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्र में नंबर वन का जिला बनेगा। प्रभारी मंत्री ने उपस्थित नारी शक्ति को संबोधित करते हुए कहा की स्वदेशी उत्पादन को बनाने और खरीदने में नारी शक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। मातृशक्ति ने जब-जब किसी काम का बीड़ा उठाया है तो देश हमेशा विकास की पथ पर अग्रसर हुआ है । प्रभारी मंत्री ने कहा कि स्वदेशी को बढ़ावा देने से रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे और वह दिन दूर नहीं जब हम विदेशियों को भी रोजगार दे सकेंगे । उन्होंने उपस्थित जनप्रतिनिधियों को भी स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया। सांसद श्री दर्शन सिंह चौधरी ने कहा कि आज प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के सपनों को पूरा करने के लिए सांसद मेले की आधारशिला रखी गई है।

उन्होंने कहा कि हमारा भारत 21वीं सदी का भारत है जो आक्रांताओं को पलट कर जवाब देने की क्षमता रखता है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता आम जनों के विश्वास पर खरी उतरी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने हम पर 50त टैरिफ लगाया लेकिन प्रधानमंत्री ने महिला, आम जनता व्यापारियों एवं किसानों के विरुध किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया और भारत को आत्मनिर्भर बनाने का मंत्र दिया । उन्होंने सभी लोगों से कहा कि कि वह स्वदेशी सामान का उपयोगी करें । सांसद श्री सिंह ने कहा कि नर्मदापुरम जिले के मुहासा और किरतपुर में इंडस्ट्री हब बनाने का कार्य किया जा रहा है, यह प्रधानमंत्री के विकसित भारत के सपने को साकार करने जैसा है। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा कि वह श्री अन्न का उपयोग करें, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दें। नए-नए देसी सामानों को खरीदें। उन्होंने बताया कि धन्य धान योजना में प्रथम पांच जिले में से एक नर्मदा पुरम जिले का भी चयन हुआ है । उन्होंने कहा कि भावांतर योजना भी शासन की एक महत्वपूर्ण योजना है जो किसान हितेषी है। उन्होंने कहा कि इस योजना के लेकर कतिपय कुछ लोगों द्वारा भ्रम फैलाया जा रहा है। उन्होंने किसान भाइयों से कहा कि वह लोगों द्वारा फैलाए गए भ्रम में ना आए। उन्होंने उपस्थित लोगों के समक्ष हम बाजार जाएंगे सामान स्वदेशी ही लाएगे के नारे लगाए। पिपरिया के विधायक श्री ठाकुरदास नागवंशी ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में पहली बार सांसद मेले का आयोजन किया गया है। इस मेले के माध्यम से हम सब लोगों को स्वदेशी उत्पादन अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की आत्मा गांवो में बसती है। सभी लोग गांव में बने हुए स्वदेशी सामान को खरीदे और इस्तेमाल करें। उन्होंने कहा कि आज से ही हम संकल्प ले की स्वदेशी सामान का ही उपयोग करेंगे।

नल से घर में जल , रेखा बाई के जीवन में खुशियों की धार

विदिशा , निप्र। जल जीवन मिशन के अंतर्गत संचालित नल-जल योजना ने गाँव की महिलाओं के जीवन में नई रोशनी ला दी है। ग्राम बर्री की हितग्राही श्रीमती रेखा बाई इस बदलाव की सजीव मिसाल हैं। पहले श्रीमती रेखा बाई को रोजाना सुबह-सुबह परिवार के लिए पानी लाने के लिए दूर हैंडपंप और कुएँ तक जाना पड़ता था। सिर पर मटके ढोना, लंबी कतारों में इंतजार करना और घर-परिवार के कामकाज में देरी होना उनके जीवन की दिनचर्या का हिस्सा था। कई बार गर्मी और बरसात के मौसम में यह काम और भी कठिन हो जाता था। लेकिन अब तस्वीर बदल गई है। नल-जल योजना के अंतर्गत श्रीमती रेखा बाई के घर तक पाइपलाइन से शुद्ध पेयजल की आपूर्ति शुरू हो चुकी है। घर के आँगन में नल खुलते ही स्वच्छ जल सहज रूप से उपलब्ध हो जाता है।श्रीमती रेखा बाई खुशी से बताती हैं अब मुझे रोजाना घंटों पानी लाने में बर्बाद नहीं करना पड़ता। घर में ही नल से पानी मिलने लगा है। इससे बच्चों को समय पर खाना दे पाती हूँ, खेती-बाड़ी और घर के कामकाज भी आसानी से संभाल लेती हूँ। सच कहूँ तो यह योजना मेरे लिए वरदान है। इस बदलाव ने न केवल रेखा बाई के जीवन को आसान बनाया है बल्कि पूरे परिवार को भी स्वच्छ पानी का लाभ मिला है। बच्चों को समय पर पीने योग्य पानी मिलता है, परिवार के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है और रेखा बाई अब अपना समय आत्मनिर्भरता की ओर भी लगा रही हैं। ग्राम बर्री की यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि जल जीवन मिशन केवल पानी उपलब्ध कराने की योजना नहीं, बल्कि महिलाओं के बोझ को कम करने और उनके जीवन में प्रसन्नता भरने का प्रयास है।

संक्षिप्त समाचार

आईटीआई विदिशा में कैंपस का आयोजन 8 अक्टूबर को

आईटीआई पासआउट छात्रो के लिए सुजूकी कंपनी में करियर का बेहतरीन अवसर

विदिशा , निप्र। शासकीय आईटीआई विदिशा में 08 अक्टूबर 2025 को भारत की नंबर 1 पैसेंजर कार मेन्युफैक्चरिंग कंपनी सुजूकी में प्लेसमेंट के लिए कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें मोटर मैकेनिक, डीजल मैकेनिक, टेक्टर मैकेनिक, मशीनिस्ट, इलेक्ट्रीशियन, फिटर, टर्नर, वेल्डर पेंटर, वायरमैन, शीटमेटल, सीओई (ऑटोमोबाइल), इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक, टूल एंड डाई, पीपीओ ट्रेड्स के पासआउट छात्र आवेदन सकते हैं। इस प्लेसमेंट में आवेदन की लिए छात्रों की आयु 18 से 26 वर्ष एवं दसवी में न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक तथा आईटीआई में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक होना आवश्यक है। कैंपस में भाग लेने के लिये छात्रों को गुरारिया रोड नवीन कॉलेज के पास टीलाखेडी स्थित शासकीय आईटीआई विदिशा में 08 अक्टूबर 2025 को 10ः30 बजे उपस्थित होना आवश्यक है। अधिक जानकारी के लिए 995300211, 7000867951, 9990724900, 9560015542 पर संपर्क कर सकते हैं।

शासकीय औधोगिक प्रशिक्षण संस्था विदिशा में दीक्षांत समारोह संपन्न

विदिशा , निप्र। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था विदिशा में शनिवार को दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया, जिसमे एनसीव्हीटी परीक्षा में उत्तीर्ण प्रशिक्षनार्थियों को शामिल किया गया। कार्यक्रम में आईएमसी सदस्य श्री हिमांशु कोठारी, श्री बलराम विश्वकर्मा एवं संस्था के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने छात्रो को शुभकामनाएं दी एवं परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त 21 प्रशिक्षणार्थियो को प्रमाण पत्र एवं शील्ड तथा एनटीसी प्रमाण पत्र एवं अंकसूची प्रदान किये गये। कार्यक्रम के अंत में संस्था के प्रभारी प्राचार्य श्री महेंद्र सिंह रघुवंशी द्वारा अपने उद्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों को यह सन्देश दिया कि यह आपकी पहली सफलता थी। अब जो भी और जहाँ भी आपको रोजगार मिले उसे डटकर लगन के साथ करना है, जिससे आपकी सफलता का मार्ग सरल एवं सफल होगा।

टीकाकरण दिवस में परिवर्तन

विदिशा , निप्र। जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ डीके शर्मा ने बताया कि मंगलवार 07 अक्टूबर को शासकीय अवकाश होने के कारण नियमित टीकाकरण सत्र आयोजित नहीं होगा।यह सत्र अब बुधवार 08 अक्टूबर को पूर्व निर्धारित समय पर आयोजित किया जाएगा। सभी नागरिकों से अनुरोध है कि टीकाकरण हेतु निर्धारित तिथि पर ही उपस्थित हों।साथ ही, ब्लॉक डाटा ऑपरेटर यूविन पोर्टल पर सत्र क्रिएट करना सुनिश्चित करें।

भावांतर योजना योजना की मदद हेतु हेल्पडेस्क संचालित

विदिशा , निप्र। राज्य सरकार द्वारा सोयाबीन भावांतर योजना लागू की गई है। इस योजना के तहत किसानों की सुविधा के लिए कृषि उपज मंडी समिति विदिशा के प्रांगण में प्रचार प्रसार जागरूकता संदेश देने के लिए विशेष पहल की गई है। कृषकों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए भावांतर योजना हेल्पडेस्क (सहायता केन्द्र) मंडी में स्थापित किया गया है।

नल से घर-घर पहुंचा जल ,अब ग्रीष्मकाल में भी नहीं होगा पेयजल संकट

विदिशा , निप्र। जल जीवन मिशन ग्रामीण जीवन में आशा और बदलाव की कहानी बन रहा है। लटेरी विकास खंड की ग्राम पंचायत बरखेड़ा घोसी के अंतर्गत ग्राम रतनगढ़ और सगड़ा में एकल ग्राम नल-जल योजना के सफल संचालन के बाद इसे विशेष ग्राम सभा 02 अक्टूबर को औपचारिक रूप से ग्राम पंचायत को सौंप दिया गया।

इस योजना से ग्राम सगड़ा के लगभग 500 और ग्राम रतनगढ़ के 300 परिवारों को पहली बार घर-घर नल कनेक्शन से शुद्ध पेयजल मिलने लगा है। पहले जहां महिलाओं और बच्चों को गर्मी के दिनों में दूर-दूर से पानी लाना पड़ता था, वहीं अब नल खोलते ही घर पर स्वच्छ जल उपलब्ध है। दोनों ग्रामों की महिलाओं का कहना हैं कि पहले उन्हें रोजाना सुबह से पानी लाना पड़ता था, जिससे खेत और घर का काम प्रभावित होता था। अब घर पर ही नल से पानी मिलने से समय और श्रम दोनों की बचत हो रही है। इसी तरह ग्राम रतनगढ़ के लाभान्वितों ने कहा कि अब बच्चों को गर्मी में प्यास बुझाने के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता, घर पर ही सुरक्षित जल उपलब्ध है। योजना के संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत को सौंपी गई है। ग्रामीणों का कहना है कि यह योजना केवल पानी की नहीं, बल्कि उनकी खुशहाली और स्वास्थ्य की गारंटी है। इस अवसर पर पंचायत प्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों और ग्रामीणों की उपस्थिति में हस्तांतरण समारोह संपन्न हुआ। जल जीवन मिशन का उद्देश्य हर ग्रामीण परिवार तक सुरक्षित पेयजल पहुंचाना है, जिससे न केवल स्वास्थ्य और स्वच्छता सुधरे बल्कि जीवन स्तर भी ऊंचा उठे।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत नर्मदापुरम में पांच दिवसीय कृषि सखी प्रशिक्षण के द्वितीय बैच का शुभारंभ

पहला सुख निरोगी काया ही राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य है : श्री उपेंद्र कुमार शुक्ला

नर्मदापुरम , निप्र। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत आज नर्मदापुरम जिले में पांच दिवसीय (4 से 8 अक्टूबर) आवासीय कृषि सखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम की रूपरेखा एवं अतिथि स्वागत वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र डॉ. संजीव कुमार गर्ग द्वारा किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केंद्र पवारखेड़ा श्री उपेंद्र कुमार शुक्ला ने कहा कि पहला सुख निरोगी काया ही प्राकृतिक खेती का मूल उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि हमें अपने पोषणयुक्त भोजन और स्वस्थ जीवन के लिए पुनः प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी स्वस्थ रहें और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो सके। आत्मा परियोजना

के सहायक संचालक श्री गोविंद मीणा ने कहा कि कृषि सखी किसानों और वैज्ञानिकों के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो इस राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की सफलता में अहम भूमिका निभाने जा रही हैं।

उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा तथा मिशन की विस्तृत जानकारी दी। प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. संजीव कुमार गर्ग ने प्राकृतिक खेती के वैज्ञानिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती न केवल मानव स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती है बल्कि मृदा की उर्वरता को पुनः जीवित करती है। और हमारे प्राकृति की जैव विविधता के बिना जीवन संभव नहीं है साथ उन्होंने जीवामृत, घनजीवामृत एवं अन्य जैविक घटकों में मौजूद करोड़ों जीवाणु मृदा के लिए वरदान सिद्ध होते हैं, जो प्राकृतिक खेती की आत्मा हैं। मंच संचालन डॉ. प्रवीण सोलंकी द्वारा किया गया एवं आभार प्रदर्शन डॉ. राजेंद्र पटेल ने व्यक्त किया। कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था केंद्र के सहायक श्री सुमित चौरे द्वारा की गई। प्रशिक्षण में नर्मदापुरम जिले के चार विकासखंड नर्मदापुरम, सिवनी मालवा, केसला एवं माखननगर – से कुल 54 कृषि सखी सम्मिलित हुईं। इनके साथ प्रत्येक विकासखंड के प्रभारी ब्लॉक तकनिकी प्रवंधक और सहायक तकनीकी प्रवंधक भी प्रशिक्षण में उपस्थित रहे।

जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में साउंड थेरेपी का आयोजन

बैतूल में ध्वनि तरंगों से उपचार पूर्व सैनिकों ने उठाया लाभ

बैतूल , निप्र। जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में रविवार को साउंड थेरेपी का आयोजन किया गया। इस दौरान पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को ध्वनि स्नान दिया गया। भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त कैप्टन श्री सुमीत सिंह ने इस उपचार के लिए 25 ध्वनि उपकरणों का उपयोग किया गया, जिनमें से कई आयातित थे। कैप्टन सिंह यूनाइटेड किंगडम के इंटरनेशनल प्रैक्टिशनर्स ऑफ होलिस्टिक मेडिसिन द्वारा मान्यता प्राप्त एक संस्थान से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षित ध्वनि उपचारक हैं। महिलाओं और बच्चों सहित लाभार्थियों ने उपचार के बाद सुखद अनुभूति और हल्कापन महसूस किया। ध्वनि उपचार का प्रयोग बैतूल में पहली बार किया जा रहा है।

साउंड हीलिंग या ध्वनि चिकित्सा, मानसिक शांति और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए ध्वनियों और कंपनों का उपयोग करती है, जिससे तनाव कम होता है और नींद में सुधार होता है। साथ ही चिंता से राहत मिलती है और दर्द प्रबंधन में मदद मिलती है। समग्र ऊर्जा और ध्यान में भी वृद्धि होती है। यह शरीर की प्राकृतिक उपचार प्रक्रियाओं को उत्तेजित करती है और मन, शरीर व आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करती है।

साउंड हीलिंग के यह है प्रमुख लाभ

उन्होंने बताया कि यह गहन विश्राम प्रदान करती है, जिससे शरीर से तनाव कम होता है और शांति व सुकून महसूस होता है। ध्वनि चिकित्सा कोर्टिसोल हार्मोन के स्तर को कम करने और मन को शांत करने में मदद करती है, जिससे चिंता और अवसाद के लक्षणों में कमी आती है। नियमित अभ्यास से नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है, जिससे समग्र स्वास्थ्य बेहतर होता है। यह शरीर में कंपन और ऊर्जा को संतुलित करके पुराने दर्द को कम करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायक है। साउंड थेरेपी शरीर में कोर्टिसोल के स्तर को कम करती है, जो कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए जिम्मेदार है। ध्वनि उपचार मन को साफ करता है और मानसिक स्पष्टता बढ़ाता है, जिससे ध्यान और एकाग्रता में सुधार होता है। यह शरीर के ऊर्जा केंद्रों चक्रों को संतुलित करने में मदद करती है, जिससे जीवन शक्ति बढ़ती है। ध्वनि चिकित्सा दबी हुई भावनाओं को सतह पर लाती है, जिससे भावनात्मक अभिव्यक्ति और उपचार को बढ़ावा मिलता है।

ध्वनि चिकित्सा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तरों पर शरीर और मन के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।

हर घर तक स्वच्छ पेयजल तहत ग्राम बर्री बासौदा में नल-जल योजना का हस्तांतरण

विदिशा , निप्र। जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्रामीण जनहित को ध्यान में रखते हुए ग्राम पंचायत मेहमूदा के ग्राम बर्री बासौदा में संचालित एकल ग्राम नल-जल योजना का सफल संचालन एवं संधारण तीन माह तक विभाग द्वारा किए जाने के उपरांत विशेष ग्राम सभा के माध्यम से औपचारिक रूप से ग्राम पंचायत को हस्तांतरित की गई है।

इस योजना के तहत ग्राम की 859 की आबादी वाले प्रत्येक परिवार को शुद्ध पेयजल की सुविधा घर-घर नल कनेक्शन के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है। अब इस योजना का संचालन एवं रखरखाव ग्राम पंचायत मेहमूदा की जिम्मेदारी होगी।

ग्राम सभा की उपस्थिति में आयोजित इस हस्तांतरण कार्यक्रम में पंचायत प्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे। ग्रामीणों ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि अब उन्हें स्वच्छ पेयजल की नियमित सुविधा प्राप्त होगी, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में भी कमी आएगी। जल जीवन मिशन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर तक सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इस कदम से ग्राम बर्री बासौदा में न केवल जीवन स्तर में सुधार होगा, बल्कि जनहितैषी योजनाओं के प्रति विश्वास भी मजबूत होगा।

दोनों बच्चों का इलाज बैतूल में नहीं हुआ, जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय नहीं

कलेक्टर बैतूल श्री सूर्यवंशी ने किया स्पष्ट

बैतूल , निप्र। विभिन्न समाचार एजेंसियों द्वारा बैतूल जिले के आमला विकासखंड में निवासरत दो बच्चों की मृत्यु कोल्ड्रिफ सिरप से होने की खबरें प्रसारित की जा रही हैं। इस संबंध में कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया है कि दोनों बच्चों का इलाज बैतूल जिले के किसी भी शासकीय या निजी अस्पताल में नहीं हुआ है और जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय भी नहीं पाया गया है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि ग्राम कलमेश्वरा निवासी बालक कबीर (4 वर्ष) पिता कैलाश और ग्राम जामुन बिछुआ निवासी गर्भित (ढाई वर्ष) पिता निखिलेश का इलाज बैतूल जिले में नहीं हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, बालक कबीर की मृत्यु अन्य जिले में, जबकि गर्भित की मृत्यु छिंदवाड़ा जिले के परासिया में इलाज के बाद उसके रिश्तेदार के घर ग्राम लादी (विकासखंड आमला) में हुई है।

दोनों बच्चों की मृत्यु

दोनों बच्चों की मृत्यु क्रमशः 8 सितंबर 2025 और 1 अक्टूबर 2025 को हुई थी। उन्होंने बताया कि अब तक जिले के स्वास्थ्य विभाग, पुलिस या प्रशासन को कोल्ड्रिफ सिरप से किसी की मृत्यु की कोई सूचना या शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। कलेक्टर सूर्यवंशी ने कहा कि मेडिकल टीम

द्वारा किए गए निरीक्षण में पाया गया कि बैतूल जिले में कोल्ड्रिफ सिरप का विक्रय नहीं हो रहा है और न ही मेडिकल स्टोर में यह सिरप उपलब्ध हैं। मीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार, दोनों बच्चों का प्राथमिक उपचार परासिया (जिला छिंदवाड़ा) के डॉ. प्रवीण सोनी द्वारा किया गया था। बच्चों की मृत्यु का अब तक कोई स्पष्ट कारण सामने नहीं आया है और अभिभावकों ने भी प्रशासन को कोई सूचना नहीं दी है।

लोग उपचार के लिए परासिया का रुख करते

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने यह भी बताया कि आमला क्षेत्र के ग्राम छिंदवाड़ा जिले के परासिया के समीप स्थित हैं, जिसके कारण वहां के लोग उपचार के लिए परासिया का रुख करते हैं। उन्होंने कहा कि यह मामला बैतूल जिले से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं है, फिर भी मृतक बच्चे बैतूल निवासी होने के कारण पूरी संवेदनशीलता से जांच की जा रही है।उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को गाइडलाइन का गंभीरता से पालन करने और कफ सिरप संबंधी जनजागरूकता अभियान चलाने के निर्देश भी दिए हैं।

पेंशन प्रकरण उपलब्ध कराने के निर्देश

विदिशा , निप्र। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने सभी विभागों के जिला अधिकारियों को निर्देशित किया है कि सेवा निवृत्त होने वाले अधिनस्थों के पेंशन प्रकरणों का समयावधि में निराकरण कराना सुनिश्चित करें ताकि सेवा निवृत्त तिथि को संबंधित कर्मचारियों को देय तमाम दावों का भुगतान किया जा सके उक्त कार्य की कलेक्टर स्वयं टीएल बैठक में समीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने जिला पेंशन अधिकारी रूपेंद्र सिंह मरावी को भी निर्देशित किया है कि जिन विभागों से पेंशन के प्रकरण प्राप्त नहीं होते हैं तो अविलंब संज्ञान में लाएं ताकि उन पर कार्रवाई की जा सके। जिला पेंशन अधिकारी श्री मरावी ने बताया कि विदिशा जिले में मार्च 2022 से लेकर सितंबर 2025 तक 459 अधिकारी कर्मचारी सेवानिवृत्ति हुए हैं जिनमें से पेंशन कार्यालय द्वारा 419 प्रकरणों का निराकरण कर सेवा निवृत कर्मचारियों को पेंशन की सुविधा मैया कराई गई हैं जिला पेंशन कार्यालय 20 प्रकरण निराकरण हेतु लंबित है इसी प्रकार विभागों में भी 20 प्रकरण लंबित हैं।

राइट क्लिक

दो संगठन, एक सदी-1

'राष्ट्र' व 'जन' केन्द्रित विचारों का सौ साला सफर और परिणति...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

इस साल राष्ट्रवादी सोच और हिंदुत्व का पैरोकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही अपनी स्थापना की शताब्दी नहीं मना रहा है, बल्कि उसी के समानांतर 'जन' वादी सोच और साम्यवादी विचार के आधार पर समाज को बदल डालने का सपना पालने वाली 'भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) भी अपनी संस्थापना की एक सदी पूरी कर रही है। हालांकि संघ एक सांस्कृतिक सामाजिक एनजीओ है और सीपीआई पूरी तरह एक राजनीतिक दल है। दोनों की शुरूआत दो अलग-अलग चश्मों से सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के सपनों के साथ हुई थी। दोनों ने इन सौ सालों में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेकिन संघ बहुसंख्यक हिंदुओं के वर्चस्व की सामाजिक-राजनीतिक पैरोकारी और पहरेदारी करके अपनी राजनीतिक शाखा भाजपा के माध्यम से आज सत्ता शीर्ष पर पहुंच गया है। आज वो देश में एक निर्णायक शक्ति है, भले ही उसकी विचारधारा और कार्यशैली से कुछ लोग असहमत हों। जबकि सीपीआई जो 61 साल पहले वैचारिक झुकावों के चलते दो फाड़ हो गई थी, आज अपने वजूद को बचाने की यथा संभव कोशिश कर रही है। ऐसा क्यों हुआ, इस पर गंभीर विचार जरूरी है। क्योंकि संघ जहां सदा 'राष्ट्र सर्वोपरि' की बात करता रहा है, वहीं सीपीआई अर्थात् वामपंथी हमेशा 'जन' को प्राथमिकता देते रहे हैं। उनका अपना आर्थिक दर्शन है और राष्ट्र की तुलना में 'अंतरराष्ट्र' उन्हें ज्यादा प्रिय है। फिर भी संघ और सीपीआई की विचारधाराएं अगर विपरीत हैं तो इसके पीछे एप्रोच और मानसिकता का भी फर्क है। संघ के आग्रह के पीछे अनुभव जन्य भावुकता, आशंका और हिंदू समाज तथा प्रकारांतर से भारत राष्ट्र के अस्तित्व की चिंता है तो वामंपथियों का मानना है कि यदि 'जन' ही सुखी नहीं है तो राष्ट्र का महिमागान खुद को धोखा देने जैसा है। इसमें यह तय करना मुश्किल है कि पहले अंडा या मुर्गी। क्योंकि 'राष्ट्र' सुरक्षित समृद्ध नहीं होगा तो उसके 'जन' भी सुखी कैसे रहेंगे? संघ मानता है कि वामपंथी विचार पश्चिम से आयातित है और उसकी प्राथमिकताएं भारतीय समाज के अनुकूल न होकर पश्चिमी समाज के हिसाब से हैं, जबकि वामियों का तर्क है कि संघ जो सोचता और करता है वह प्रतिगामी, पुरातनपंथी और देश के बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी स्वभाव के विरूद्ध है। संघ का मानना है कि बेशक यह देश बहुसांस्कृतिक बहुभाषी, बहुजातीय है, लेकिन इसका मूल स्वर और चरित्र हिंदू ही है। इसे नाम चाहे भारतीय या कुछ और दे दें। इस हिसाब से हिंदू केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक पहचान ही नहीं है, वह वह बहुसंख्यकों की राजनीतिक अस्मिता का द्योतक भी है। संघ का स्पष्ट मानना है कि जब तक भारत में हिंदू मजबूत है, भारत और उसकी सांस्कृतिक पहचान अक्षुण्ण है। जब- जब हिंदू कमजोर हुआ है, भारत खंडित हुआ है, भले ही उसके तात्कालिक कारण कुछ भी हों। इसके विपरीत वामपंथियों की सोच है कि भारत के विखंडन की बात केवल हिंदुओं के मन में भय पैदा करने और उनकी जमीनी दुश्वारियों एवं वास्तविक अंतर्विरोधों से ध्यान हटाने की कोशिश है।

वैसे संघ और वामियों में कुछ समानता भी है। पहला तो ये कि दोनो का सफर लगभग आसपास ही शुरू हुआ। संघ की स्थापना 27 अक्टूबर 1925 को विजयादशमी के दिन नागपुर में हुई तो सीपीआई की स्थाशपना कानपुर अधिवेशन में 26 दिसंबर 1925 को की गई। यानी दो वैचारिक आंदोलन लगभग एक साथ शुरू हुए। दोनों ही देश की तत्कालीन राजनीतिक मुख्य धारा कांग्रेस की कार्यशैली से अलग सोच रखते थे। सीपीआई की स्थापना के पीछे 1917 में रूस में हुई सोवियत क्रांति की प्रेरणा थी तो संघ के आरंभ के पीछे प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय शक्तियों के ध्रुवीकरण और कांग्रेस के ज्यादा मुस्लिम परस्त होने से उपजी नाराजी बड़ा कारण था। चूंकि उस वक्त भारत पर ब्रिटिश शासन था, इसलिए दोनों का ही सफर आसान नहीं था। उसमें भी कम्युनिस्टों को अंग्रेज दुश्मन नंबर वन मानते थे। तब वामपंथियों का मानना था कि इस देश में क्रांति केवल सशस्त्र विद्रोह से ही आ सकती है। क्रांति की राह में धर्म की कोई भूमिका नहीं है। जबकि संघ का मानना था कि आजादी तो देर सवेर मिलेगी ही, हमे उसकी सुरक्षा के बारे में भी अभी से सोचना चाहिए। स्वतंत्र देश में हिंदुओंका वर्चस्व होना चाहिए। जिन परिस्थितियों और जिस रूप में भारत को आजादी मिली, उससे दोनो ही खुश नहीं थे, लेकिन बाद में दोनो ने भारत में संवैधानिक बहुदलीय लोकतंत्र को स्वीकार कर लिया।।

अपनी वैचारिक सोच के मुताबिक आजादी के तत्काल बाद कम्युनिस्टों ने तेलंगाना में जमींदारों के खिलाफ पहला सशस्त्र विद्रोह किया, जिसे कुचल दिया गया। सीपीआई तो बाद में मुख्य धारा में शामिल हो गई, लेकिन उसके अनुषांगिक संगठन अभी भी किसी न किसी रूप में सशस्त्र और हिंसक गतिविधियां संचालित करते रहते हैं।

अब संघर्ष और विस्तार के सौ सालों बाद दोनो की तुलनात्मक स्थिति पर नजर डालें कि कौन कहां खड़ा है? हालांकि इसका मकसद कोई अंतिम फैसला देना नहीं है, केवल जमीनी सच्चाई का आकलन है। पहले आरएसएस की बात। इसकी स्थापना डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने की। हेडगेवार पहले कांग्रेस में ही थे। लेकिन गांधीजी के मुस्लिम प्रेम के कारण उनका कांग्रेस से मोहभंग हो गया और उन्होंने पश्चिम में उभरते राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर एक नए संगठन आरएसएस की नींव रखी। जिसका लक्ष्य हिंदू संस्कृति, धर्म और परंपराओंकी रक्षा और इसे ही भारत का मूल चरित्र आधार मानना था। संघ का स्पष्ट मत है कि भले ही भारत बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी देश हो, लेकिन उसकी आत्मा हिंदुत्व में बसती है। हिंदू होना और हिंदुत्व में विश्वास करना ही इस भारत देश की एकता और अखंडता की गारंटी है। संघ के वर्तमान सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के अनुसार हमारे रंग रूप, भाषा, पूजा पद्धतियां अलग अलग हों, लेकिन डीएनए एक है। क्योंकि हिंदू धर्म इसी माटी से जन्मा, फला-फूला, भले ही उसमे से दार्शनिक विरोधों के कारण कई शाखाएं फूटीं, लेकिन जो वैदिक काल से जो आज तक कायम है, वह सनातन है। इस मायने में संघ की विचारधारा वीर सावरकर की उस थ्योरी कि हिंदू वह है, जिसकी पुण्यभूमि भी भारत है, से काफी मेल खाती है। इस विचार की भले-बुरे दृष्टिकोणों से बहस होती रही है, आगे भी होती रहेगी।

दूसरी तरफ वामपंथी आरएसएस और प्रकारांतर से सावरकर की विचारधारा को फासीवादी, प्रतिगामी और समाजभंजक मानते हैं। इसलिए वो शुरू से ही इसका विरोध करते आ रहे हैं। जबकि संघ अपनी धुन में अपना काम करता चला आ रहा है। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भारत के सामाजिक राजनीतिक नक्शे में एक प्रभावी और निर्णायक भूमिका है। इसका नेटवर्क पूरे भारत और विदेशों में भी है। संघ का मुख्यप लक्ष्य हिंदू राष्ट्र की स्थापना है। संघ का मानना है कि केवल हिंदू संस्कृति से भी भारतीयता की पहचान हो सकती है। संघ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात करता है। यह तभी संभव है, जब भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए। संघ का मुख्य मिशन चरित्र निर्माण है। इसके कार्यकर्ता स्वयंसेवक कहलाते हैं। संघ का विश्वास सर्वांगीण उन्नति में है। हालांकि संघ पर भी आरोप है कि आजादी के आंदोलन में उसकी कोई भूमिका नहीं थी। वो अंग्रजों के साथ था और कुछ साल पहले तक स्वतंत्रता दिवस पर संघ के नागपुर स्थित मुख्यालय में तिरंगा नहीं फहराया जाता था। हालांकि संघ इसका खंडन करता रहा है।

संगठनात्मक दृष्टि से देखें तो संघ की बुनियादी इकाई शाखा है। आज पूरे देश भर में संघ की 83 हजार 129 शाखाएं हैं। हालांकि संघ का लक्ष्य देश के हर गांव में एक शाखा का यानी साढ़े सात लाख शाखाएं प्रारंभ करने का है। संघ की अनुषांगिक संस्थाएं समाज के लगभग सभी क्षेत्र में काम करती हैं। इन सबको मिलाकर संघ परिवार कहलाता है। संघ कई सामाजिक संस्थाएं संचालित करता है। समाज सेवा संघ का प्रमुख उद्देश्य है। राजनीतिक क्षेत्र में उसका हस्तक्षेप भारतीय जनता पार्टी के माध्यम से है। आज भाजपा के देश में कुल 342 सांसद और सभी राज्यों में 4131 विधायक हैं। वह देश की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है और 21 राज्यों में या तो उसकी सत्ता है या सत्ता में वह सहभागी है। अब सीपीआई की बात करें तो जातीय अन्याय के खिलाफ लड़ने वाली सीपीआई को पार्टी के भीतर सामाजिक न्याय लागू करने में भी लंबा वक्त लगा। वर्तमान में पार्टी के महासचिव डी. राजा हैं, जो दलित हैं और तमिलनाडु से आते हैं। सीपीआई अब एक क्षेत्रीय पार्टी है। देश भर में उसकी सदस्य संख्या करीब साढ़े 6 लाख से ज्यादा बताई जाती है। पार्टी का मूल उद्देश्य और नीतियां कमोबेश अभी भी वही हैं, जो सौ साल पहले थे। मसलन सम्पत्ति का समान बंटवारा, संपूर्ण भूमि सुधार, श्रमिक अधिकारों को बढ़ावा, सामाजिक सुरक्षा, निजी और विदेशी पूंजी का विरोध, सभी प्रमुख उद्योगों का राष्ट्रीयकरण, भारत में संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से समाजवाद की स्थापना, धर्म के राजनीतिक उपयोग का विरोध तथा जातीय समानता का समर्थन। हाल में चंडीगढ़ में हुई पार्टी कांग्रेस में सीपीआई पाकिस्तान के साथ भारत के व्यापारिक रिश्तों को फिर से बहाल करने की पैरवी करते हुए यूएपीए जैसे कानूनो को समाप्त करने की मांग की। पार्टी ने केन्द्र में मोदी सरकार और आरएसएस की हिंदुत्ववादी नीतियों की कड़ी आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि मोदी सरकार आरएसएस के इतिहास और साम्प्रदायिक दंगों में भूमिका को लेकर जनता की आंखों में धूल झोंकने का प्रयास कर रही है। पार्टी ने भारत में संघवाद (आरएसएस नहीं) को बचाने, संविधान की रक्षा, 'वन नेशन, वन इलेक्शन' का भी विरोध किया।

पार्टी ने शताब्दी वर्ष में आह्वान किया कि यह वर्ष केवल अतीत की याद भर नहीं है, बल्कि भविष्य के आह्वान को भी स्वीकार करना है। फासीवाद के खिलाफ जनता का प्रतिरोध, संविधान की रक्षा, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, आवास, धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र, और समाजवाद पर आधारित भारत का निर्माण का हमारा संकल्प है। साहस और एकता के साथ हम आगे बढ़ेंगे।

अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष जश्न, जिसकी शुरूआत पिछले साल से ही हो चुकी हैं, में सीपीआई का मुख्यल जोर अपनी क्रांतिकारी विरासत को आगे बढ़ाने, आरएसएस का तीव्र विरोध और स्वतंत्रता संग्राम में भाकपा की भूमिका को रेखांकित करने पर है। पार्टी को पूरा भरोसा है कि भारत का भविष्य उसके हाथ में है। अपने स्थापना दिवस पर पार्टी ने कानपुर में नया लोगो जारी किया। आजादी के आंदोलन के समय भारतीय कम्युनिस्ट (कांग्रेस के) ' राष्ट्रीय सुधारवादी नेताओं के खिलाफ थे। कांग्रेस ने तब कम्युनिस्टों के इस रवैये की आलोचना की थी। इस बीच देश के कम्युनिस्ट आंदोलन धीरे-धीरे जोर पकड़ रहा था। 1933 में पार्टी का पुनर्गठन किया गया। इसका असर कांग्रेस में भी दिखा और वहां भी पार्टी के भीतर 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी' नामक लेफ्ट विंग बनी। हालांकि सीपीआई ने इसकी 'सोशल फासिस्ट' कहकर आलोचना की। आज भले कम्युनिस्ट गांधी के पैरोकारी कर रहे हों, लेकिन 1934 में ही कलकत्ता में भूमिगत कम्युनिस्टों ने 'लीग अगेंस्ट गांधीज्म' का गठन किया था। 1936 में समाजवादी और कम्युनिस्ट करीब आने लगे। सीपीआई ने ने 1946 में सीपीआई ने प्रांतीय एसेम्बलियों का चुनाव लड़ा और 8 सीटें जीतीं। लेकिन उन्होंने भारत के बंटवारे का खुलकर विरोध किया और विरोध स्वरूप 13 अगस्त 1947 के पहले स्वतंत्रता समारोह का बहिष्कार किया। उसी दौरान कम्युनिस्टों ने तेलंगाना में जमींदारों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह किया, जिसे सख्ती से कुचल दिया गया। आजादी के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने रणनीति बदली और 1948 में दूसरी पार्टी कांग्रेस में देश में 'प्रजातांत्रिक क्रांति' का कार्यक्रम स्वीकार किया गया। 1951 में पार्टी ने अपने नारे में एक और बदलाव करते हुए इसे 'जन लोकतंत्र से राष्ट्रीय लोकतंत्र' में बदल दिया। नतीजा यह हुआ कि 1951-52 के पहले आम चुनाव में सीपीआई 16 सीटें जीतकर मुख्य विरोधी दल के रूप में उभरी। (क्रमशः)

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने राज्यों के साथ हाईलेवल मीटिंग की

कफ सिरप से मौतों का मामला, 6 राज्यों की 19 दवा निर्माण इकाइयों की पड़ताल शुरू

भोपाल/नई दिल्ली (नप्र)। छिंदवाड़ा के परासिया इलाके में कफ सिरप से हो रही बच्चों की मौतों के बाद केंद्र सरकार ने सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के अफसरों के साथ हाई लेवल मीटिंग की।

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हुई बैठक में कफ सिरप की गुणवत्ता को लेकर चिंता जताई। इस उच्च स्तरीय बैठक में दवाओं की गुणवत्ता के मापदंडों का पालन करने की समीक्षा की गई। साथ ही बच्चों के इलाज में कफ सिरप के तर्क संगत उपयोग को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई।

जेपी नड्डा ने की समीक्षा- राज्यों के साथ हाई लेवल मीटिंग के पहले केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने भी कफ सिरप के कारण हुई मौतों के मामलों की जानकारी ली। नड्डा ने अफसरों को निर्देश दिए कि इस मामले में जरूरी कार्रवाई करने के लिए राज्यों के साथ चर्चा की जाए।

6 राज्यों की 19 दवा बनाने वाली यूनिट की पड़ताल- बैठक में यह भी बताया गया कि सिस्टम की कमियों की पहचान करने और गुणवत्ता तंत्र को मजबूत करने के लिए 6 राज्यों की 19 दवा बनाने वाली इकाइयों में रिस्क बेस्ड इंस्पेक्शन (आरबीआई) शुरू किए गए हैं।

राज्यों को यह भी सलाह दी गई कि वे निगरानी बढ़ाएं, सभी स्वास्थ्य सुविधाओं (सरकारी और निजी दोनों) द्वारा समय पर रिपोर्टिंग करें। आईडीएसपी-आईएचआईपी के सामुदायिक रिपोर्टिंग टूल का व्यापक प्रसार करें और प्रकोप प्रतिक्रिया और असामान्य स्वास्थ्य घटनाओं के संबंध में जल्दी रिपोर्टिंग और संयुक्त कार्रवाई के लिए अंतर-राज्यीय समन्वय को मजबूत करें।

ये अफसर बैठक में मौजूद रहे

बैठक में रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के फार्मास्यूटिकल्स विभाग के सचिव अमित अग्रवाल, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) डॉ. सुनीता शर्मा; भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआई) डॉ. राजीव रघुवंशी, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) के निदेशक डॉ. रंजन दास, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के अपर मुख्य सचिव (हेल्थ), प्रमुख सचिव, सचिव (स्वास्थ्य), औषधि नियंत्रक, स्वास्थ्य सेवा निदेशक, मिशन संचालक (एनएचएम) और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

तीन प्रमुख मुद्दों पर हुई बैठक में चर्चा

- दवा बनाने वाली इकाईयों में क्वालिटी पैरामीटर से संबंधित शेड्यूल रूऔर अन्य जीएसआर प्रावधानों का पालन किया जाए।
- बच्चों में कफ सिरप का तर्कसंगत उपयोग हो। जिसमें दवाओं के गलत कॉम्बिनेशन और अनुपयुक्त फॉर्मुलेशन से बचा जाए।
- ऐसे फार्मूलेशन की बिक्री और दुरुपयोग को रोकने के लिए रिटेल फार्मेसियों पर नियमों को सख्ती से लागू किया जाए।

कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस से पहले निगमायुक्तों की बैठक

मंत्री विजयवर्गीय ने शहरों में संचालित कार्यों की समीक्षा की, टाइम-लिमिट पर फोकस

भोपाल (नप्र)। भोपाल में आज होने वाली कलेक्टर-कमिश्नर कॉन्फ्रेंस के पहले नगरीय विकास और आवास विभाग के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने नगर निगमों के आयुक्त और अन्य अधिकारियों के साथ बैठक की। इस बैठक में नगर निगमों में राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा की गई और शहरों के प्रस्तावित विकास कार्यों को लेकर चर्चा कर प्रस्ताव देने को कहा गया। साथ ही नगरीय विकास विभाग द्वारा शुरू कराए गए कामों को टाइम लिमिट में पूरा कराने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। बैठक में सभी निगमों के महापौरों के साथ मंत्री ने वन टू वन चर्चा की।

वल्लभ भवन में हुई बैठक में मंत्री विजयवर्गीय के अलावा नगरीय विकास और आवास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे, नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त संकेत भोंडवे भी मौजूद रहे। ये सभी अधिकारी कल सुबह से राजधानी के कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में होने वाली दो दिनी कलेक्टर कमिश्नर कॉन्फ्रेंस में मौजूद रहेंगे। बताया गया कि बैठक में प्रदेश के सभी नगर निगमों में संचालित और प्रस्तावित विकास कार्यों की समीक्षा हुई। इस मौके पर नगर निगम आयुक्तों के साथ स्मार्ट सिटीज के मुख्य कार्यपालन अधिकारी भी रहे। स्मार्ट सिटीज के काम समय-सीमा में पूर्ण कराए जाने के लिए खासतौर पर निर्देश जारी किए गए हैं।

महापौरों के साथ मंत्री ने किया वन टू वन- बैठक में मंत्री विजयवर्गीय ने महापौरों से वन टू वन चर्चा की। उन्होंने महापौरों द्वारा उठाए गए क्षेत्रीय समस्याओं को गंभीरता से लिया और संबंधित अधिकारियों को त्वरित समाधान के लिए आवश्यक निर्देश दिए। मंत्री ने स्पष्ट कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधियों के अनुभव और सुझाव नगरीय विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए उनकी बातों को प्राथमिकता दी जाए।

उच्च शिक्षा मंत्री परमार से मिले भोज मुक्त विवि के नवनियुक्त कुलगुरु प्रो. दांडेकर

भोपाल(नप्र)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार से मप्र भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल के नवनियुक्त कुलगुरु प्रो. मिलिंद दत्तात्रेय दांडेकर ने कार्यभार ग्रहण करने के बाद भोपाल में सौजन्य भेंट की।

इस अवसर पर मंत्री श्री परमार एवं कुलगुरु प्रो. दांडेकर के मध्य विश्वविद्यालय के शैक्षणिक एवं अकादमिक विकास को लेकर सारगर्भित चर्चा हुई। मंत्री श्री परमार ने आशा व्यक्त कि प्रो. दांडेकर के नेतृत्व में मप्र भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा में नए आयाम स्थापित करेगा। मप्र भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल के कुलसचिव श्री सुशील मंडेरिया भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शरद पूर्णिमा पर श्रीराधा-कृष्णजी ने नौका विहार किया

भोपाल (नप्र)। शरद पूर्णिमा के मौके पर सोमवार को राजधानी के मंदिरों में विशेष धार्मिक आयोजन हुए। वहीं, श्री हिंदू उत्सव समिति के देखरेख में भगवान श्रीराधा-कृष्ण की शोभायात्रा भी निकाली।

समिति के अध्यक्ष पं. चंद्रशेखर तिवारी ने शरद पूर्णिमा समारोह के लिए हर्षवर्धन चौकसे को संयोजक मनोनीत किया है। अध्यक्ष तिवारी ने बताया, शोभायात्रा रात 8 बजे से घोड़ा नक्कास स्थित श्रीराधा-कृष्ण मंदिर से प्रारंभ हुई जो जनकपुरी, जुमेराती, सिंधी मार्केट से होती हुई सोमवारा स्थित कर्फ्यू वाली माता मंदिर

पहुंची।

यहां भगवान श्रीराधा-कृष्ण आकर्षक पुष्प सज्जित और विद्युत रोशनी से सुसज्जित नौका पर सवार होकर चांदनी रात में नौका विहार किया। इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए श्रद्धालु भक्तजन बड़ी संख्या उपस्थित थे। इस दौरान आतिशबाज़ी, भजन संध्या और आरती का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम के बाद श्रद्धालुओं को खीर का वितरण - नौका विहार के बाद भगवान श्रीराधा-कृष्ण पुनः शीतल दास की बगिया के घाट पर पधारेंगे। फिर श्रद्धालुओं को प्रसादी का वितरण किया।

अब कमजोर होगा बारिश का सिस्टम, मानसून लौटेगा, एमपी में अगले 3 दिन बूंदाबांदी

भोपाल (नप्र)। विदाई के बीच मध्यप्रदेश में मानसून जमकर बरस रहा है। कल भोपाल समेत 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। भोपाल में ही ढाई इंच और बैतूल में 2 इंच से ज्यादा पानी गिर गया। मौसम विभाग ने सोमवार को प्रदेश के कई जिलों में हल्की बारिश भी हुई।

मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि अगले 3 दिन में हल्की बारिश का दौर रहेगा। वहीं, ग्वालियर-चंबल संभाग ड्राई रहेगा। फिलहाल कहीं भी भारी बारिश का अलर्ट नहीं है।

एमपी में 24 घंटे के दौरान 21 जिलों में बारिश, रायसेन में 3.7 इंच बरस गया- मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के दौरान 21 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। रायसेन में सबसे ज्यादा 3.7

इंच पानी गिर गया। भोपाल में ढाई इंच, बैतूल में 2 इंच, बालाघाट के मलाजखंड में 1.8 इंच, श्योपुर-शिवपुरी में 1.7 इंच, सिवनी में डेढ़ इंच, टीकमगढ़ में 1.2 इंच और नर्मदापुरम-दमोह में 1 इंच बारिश हुई। सागर, धार, छिंदवाड़ा, नर्मदापुरम, गुना, रतलाम, शाजापुर, सीहोर, देवास, राजगढ़, विदिशा समेत कई जिलों में हल्की बारिश का दौर बना रहा।

रायसेन जिला अस्पताल परिसर में जलभराव- रविवार को रायसेन में करीब एक घंटे की तेज बारिश के बाद जिला अस्पताल परिसर और मुख्य मार्ग पर पानी भर गया। अस्पताल परिसर में करीब आधा फीट पानी जमा हो गया, जिससे यह तालाब जैसा दिखने लगा। मरीजों और उनके परिजन को आवाजाही में काफी परेशानी हुई।

इतनी तेज बारिश की भोपाल-इंदौर स्टेट हाईवे पर रेंगती हुई चली गाड़ियां

रविवार को भोपाल, बैतूल समेत 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। भोपाल में ढाई इंच और बैतूल में 2 इंच से ज्यादा पानी गिर गया। भोपाल में शाम को तेज बारिश का दौर चला। भोपाल-इंदौर रोड पर इतनी तेज बारिश थी कि गाड़ियां रेंगती हुई चली। बारिश की वजह से भदभदा और कलियासोत डैम के एक-एक गेट रात में ही खोल दिए गए।

गुना, नर्मदापुरम, पचमढ़ी, श्योपुर, शिवपुरी, शाजापुर, सीहोर, छिंदवाड़ा, दमोह, सतना, सिवनी, बालाघाट में भी बारिश हुई। श्योपुर और सिवनी में करीब डेढ़ इंच पानी गिरा। देर रात तक प्रदेश के कई जिलों में कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई।